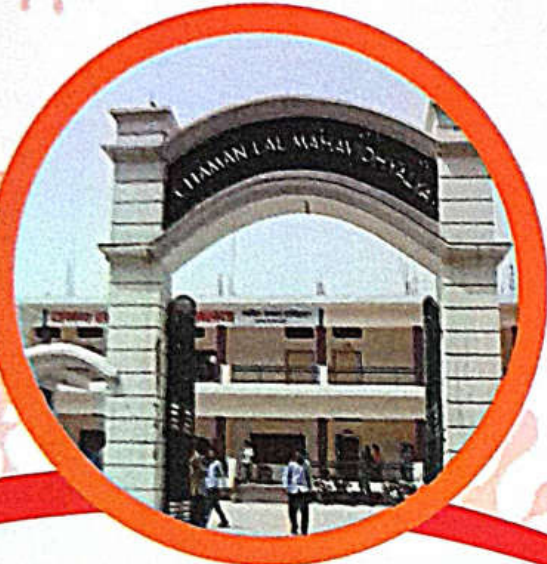


वार्षिक पत्रिका : 2020-21 (वि.स. 2077-78)

कोरोना विशेषांक



# चमन संदेश



पं० चमन लाल शर्मा

चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा

जनपद हरिद्वार (उत्तराखण्ड)



हमारे प्रेरणा पुंज



कीर्तिशेष पंडित चमन लाल शर्मा

जगमग रहेंगे दीपक तुम तो जला गये हो, रोशनी रहेंगी यहें तुम जो दिखना गये हो।

कर्म रहा जिन का धर्म शिक्षा को पूर्ण समर्पण, उस मानव को नमन प्रभु चरणों पर अर्पण।।



चमन लाल महाविद्यालय, लंदौरा

जनपद हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

पार्षिक पत्रिका : 2020-21 (वि.सं. 2071-78)

चमन संदेश

मुख्य संपादक

श्री ईश्वर बन्धु शर्मा, सरघाणक

(चमन लाल महाविद्यालय, लंदौरा, हरिद्वार)

श्री राम कुमार शर्मा, अजयश, प्रबल संपादक

संपादक

श्री अरुण कुमार हरित, सविध, प्रबन्ध संपादक

श्री अतुल हरित, कोणायक, प्रबन्ध संपादक

प्रधान संपादक

डॉ. सुरील उपाध्याय, प्राचार्य

मुख्य संपादक

डॉ. तरुण कुमार गुप्ता (सहायक अध्यक्ष, ज्येष्ठ विद्वान)

अतिथि संपादक

डॉ. सुभाष अग्रवाल

संपादक मंडल

श्री आशुतोष शर्मा (सहायक अध्यक्ष, हिन्दी विद्वान)

डॉ. नीतू गुप्ता (सहायक अध्यक्ष, गृह विभाग विद्वान)

डॉ. दीपिका सनी (सहायक अध्यक्ष, यमुना शिक्षण विद्वान)

डॉ. अमिता राणी (सहायक अध्यक्ष, संस्कृत विद्वान)

प्रकारांक

प्राचार्य, चमन लाल महाविद्यालय, लंदौरा (हरिद्वार)

मुद्रक

समय साप्ता, 15 फाल्गुन, जईन

देहरादून-248001

फोन : 0135-2658894

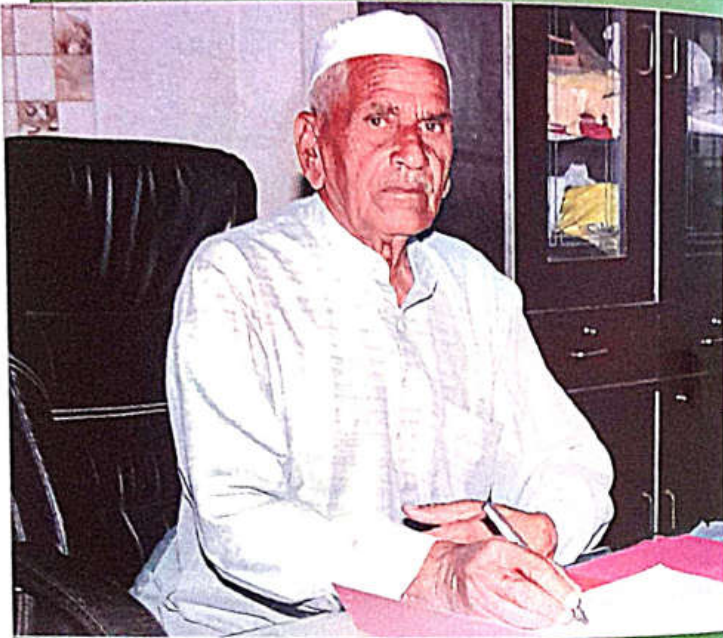
आगामी अंक के लिए आपके सुझाव हेतु

Email: editor@cmn@gmail.com

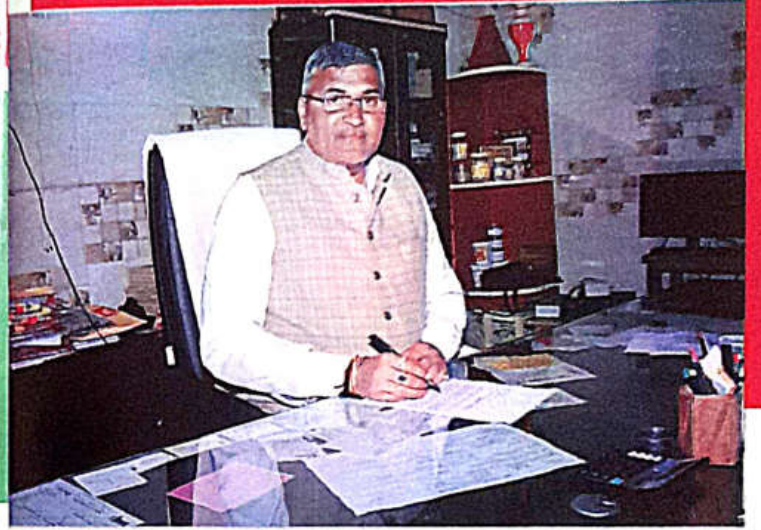
Ph.: 9997998050, 9911489599

ISBN : 978-93-90743-61-2

## महाविद्यालय के संस्थापक

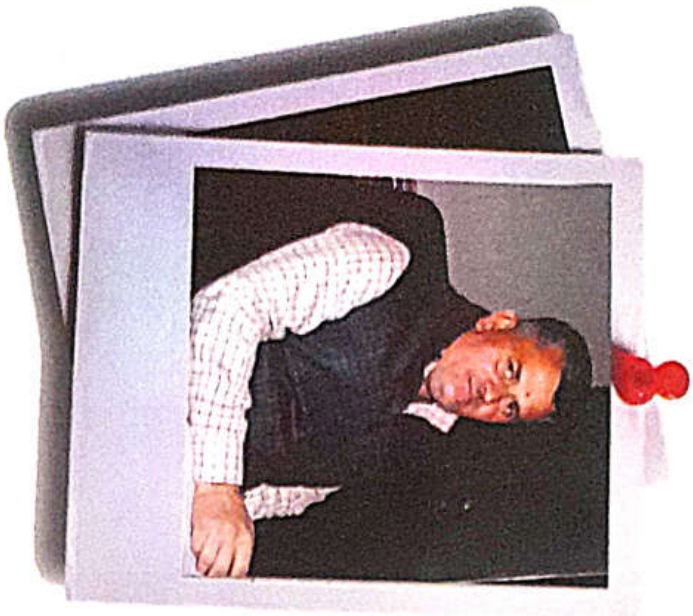


पंडित ईश्वर चन्द शर्मा



## श्री राम कुमार शर्मा, अध्यक्ष, प्रबंध समिति

आज चमन लाल महाविद्यालय, लण्डौरा शिक्षा के क्षेत्र में एक प्रतिष्ठित नाम बन चुका है। यहाँ सुयोग्य अध्यापकों द्वारा विषयों के अध्यापन के साथ-साथ छात्र-छात्राओं के अन्दर समाज के प्रति सेवा भाव, राष्ट्र के प्रति श्रद्धा एवं प्रेम को ओर दृढ़ किया जाता है। महाविद्यालय का उद्देश्य एवं सतत प्रयास है कि हम ऐसे चरित्रवान नागरिक तैयार करें, जो समाज के विभिन्न क्षेत्रों में अपने दायित्व का निर्वहन कर राष्ट्र की उन्नति में सहायक हो सकें। ग्रामीण परिवेश में स्थित यह महाविद्यालय युवाओं का बहुमुखी विकास करेगा, इस प्राशा के साथ सभी अभिभावकों एवं छात्र-छात्राओं से राष्ट्र निर्माण के यज्ञ में सक्रिय सहयोग अपेक्षित है। हम सभी कीर्तिशेष पं. चमन लाल जी के जीवन-आदर्शों को लेकर आगे बढ़ रहे हैं। इस अखण्ड यात्रा में सभी सहयोगी, शुभचिंतकों, प्रबन्ध समिति के समस्त सदाधिकारी गण, प्राचार्य, शिक्षकवृन्द एवं कर्मचारी और बड़े लक्ष्यों के लिए कार्य करेंगे, ऐसी कामना है। नवागत विद्यार्थियों के लिए शुभकामनाओं सहित।



**श्री अरुण कुमार हथि**  
सचिव, प्रबोध समिति



**श्री अतुल हरित**  
कोषाध्यक्ष, प्रबोध समिति

**श्रीमती वेदी रानी मौय्य**  
राज्यपाल, उत्तराखण्ड



मन्यमय नयते



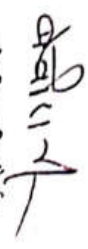
**राजभवन**  
देहरादून - 248001  
दूरभाष : 0135-2757400  
0135-2757403

**संदेश**

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि चमन लाल महाविद्यालय, (लण्डवैय) हरिद्वार द्वारा पत्रिका 'चमन संदेश' का प्रकाशन किया जा रहा है।

महाविद्यालय गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा के केंद्र के रूप में देश को प्रगति व समृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। महाविद्यालयों में विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ ही विभिन्न सामाजिक सरोकारों, सांस्कृतिक तथा पर्यावरणीय गतिविधियों से भी सक्रिय रूप से जोड़ा जाना चाहिए।

मुझे आशा है कि महाविद्यालय की पत्रिका 'चमन संदेश' विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों पर अपने रचनात्मक विचारों को व्यक्त करने का उचित मंच प्रदान करेगी।  
पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं।

  
(वेदी रानी मौय्य)

## धन सिंह रावत

राज्य मंत्री (रवतन्त्र प्रभार)  
उच्च शिक्षा, सहकारिता,  
प्रोटोकाल एवं दुग्ध विकास



उत्तराखण्ड सरकार

विधान सभा भवन

देहरादून

कक्ष सं. - 23

फोन : (0135) 2666410 (का.)

फैक्स : (0135) 2664411

## “शुभकामना संदेश”

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि चमन लाल महाविद्यालय लणढौरा, (हरिद्वार) द्वारा महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका “चमन संदेश” का प्रकाशन किया जा रहा है।

मुझे विश्वास है कि महाविद्यालय की पत्रिका “चमन संदेश” में ऐसी रचनाएँ प्रकाशित होंगी जो कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण में विशेष सहायक होंगी। उनमें एक स्वस्थ नागरिकताबोध की भावना एवं चेतना विकसित होगी। आज का युग वैज्ञानिक युग है, आज युवाओं में अपने इतिहासबोध के साथ ही समाज, मनोविज्ञान के संदर्भ में तार्किक होने की परम आवश्यकता है। विद्यार्थियों में शैक्षणिक प्रगति के साथ ही समाज एवं राष्ट्र के प्रति सकारात्मक अभिरूचि जगे ऐसी मेरी कामना है। पत्रिका में ज्ञानवर्धक, सारगर्भित तथा रचनात्मक सामग्री को प्राथमिकता दी जाए।

अंत में, मैं पत्रिका “चमन संदेश” के सफल प्रकाशन एवं विद्यार्थियों के उत्तरोत्तर उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

(डा. धन सिंह रावत)

# जायगीतीर्थ शाब्दिकञ्च

डॉ. प्रदा पाण्ड्या कव्ठी

पणुच - अश्विन विश्व जयन्ती परिसर  
जुलैगिरी - देव संस्कृति विश्वविद्यालय  
बिदरगढ - हरिद्वार-राज्य शोध संस्थान  
संवादक - अरुण कव्ठी



शुभ कामना-सन्देश

28 मार्च 2021  
होती पर्व

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि चमन लाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लंडौरा शिक्षा सत्र २०२०-२१ की अपनी वार्षिक पत्रिका 'चमन सन्देश' का प्रकाशन करने जा रहा है। स्नातकोत्तर महाविद्यालय रूड़की आस-पास के ग्रामीण क्षेत्रों में उच्च शिक्षा के लिए समर्पित एवं राज्य सरकार द्वारा पोषित-संचालित है, सराहनीय है।

विद्यालयीन पाठिकाओं के माध्यम से प्रतिभागों के उभार को तलाशना एवं तलाशना अपनी तरह की कला है। प्रतिभाई:संदेश अनुकूलता मिलने पर नितर विकसित होती है। समान, राष्ट्र में प्रखर प्रतिभा के धनी व्यक्तिव हमेशा ही अपने प्रभावी व्यक्तिव एवं कृतिव से लोक समान को प्राप्त होते हैं। शिक्षा का उद्देश्य भी समग्रता को प्राप्त होना है।

आज संस्कारुक्त एवं स्वलाभ्यन प्रधान शिक्षा नीति का पाठ्यक्रम में समावेश समय की मांग एवं आवश्यकता है। इस संदर्भ में वेदवृत्ति तपोनिष्ठ आचार्य श्रीराम शर्मा जी का कहना है कि शिक्षा अध्ययनसाय का साधन मात्र न बनें, वरन् उसमें लोकव्यवहार की जानकारी के अलावा विद्या अधीन जीवन विद्या का भी उसमें समुचित समावेश हो। शिक्षा-विद्या में समन्वय भी आज सामर्थिक आवश्यकता है। विद्या से मानवीय गुणों का विकास होता है, भाव-संवेदना के रूप में सद्गुण उभरते, विकसित होते हैं।

तीनिक, जानकारी शिक्षा है जबकि उस जानकारी के साथ-साथ अपने अंतर्निहित ज्ञान की प्राप्ति के लिए प्रयास-पुरुषार्थ विद्या का एक रूप है। आज की शिक्षा प्रणाली में इसका सख्त अभाव मनुष्य को मनुष्यता से वंचित कर रहा है। मानव जीवन में नाशना, स्वाध्याय, संयम और सेवा उत्कृष्ट पुरुषार्थ के रूप में हैं। प्राचीनकाल की शिक्षा नीति श्रेष्ठतर आर्थात् श्री निजमें जीवन की यही संपूर्णता-समग्रता होती थी।

'चमन सन्देश' पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हमारी हार्दिक शुभकामनाएँ हैं उन सभी छात्र-छात्राओं एवं अध्यापकों के प्रति निजकी प्रकाशन-सम्पादन में महत्त्वपूर्ण भूमिका है। पत्रिका में सर्वाधिक व्यावहारिक जीवन मूल्यों-सूत्रों को समावेश की अपेक्षा रखते हुए सफल सम्पादन के लिए हमारी खूब-खूब मंगल कामनाएँ।

प्रीति,  
Dr. Prada Pandya Kavthi  
संवादक, अरुण कव्ठी

शुभ कामना  
(डॉ० प्रदा पाण्ड्या)

जायगीतीर्थ-शाब्दिकञ्च, हरिद्वार - 249411 (उत्तराखण्ड) भारत • फोन: (1334) 260602, 260309, 261328  
फैक्स: (1334) 260666 वेब साईट: www.awgn.org | www.dsww.ac.in • ई-मेल: pranav.pandya@gmail.com



प्रो० देवीप्रसाद त्रिपाठी

कुलपति:  
Prof. Devi Prasad Tripathi  
Vice Chancellor



उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय

हरिद्वार-देहली-राष्ट्रीय राज मार्ग :  
यसदराबाद : हरिद्वार-249402 (उत्तराखण्ड) •  
सफलदूरभाषण /Mi: 9868155598  
ई-मेलसर्वर /e-mail : vc@usvv.ac.in  
अन्तर्जाल/Website : www.usvv.ac.in  
Haridwar-Delhi-National Highway  
Bahadradabad, Haridwar-249402 (Uttarakhand)

“शुभकामना संदेश”

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि चमन लाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लंडौरा द्वारा सत्र 2020-21 की वार्षिक पत्रिका 'चमन सन्देश' का प्रकाशन किया जा रहा है। शिक्षा की अवधारणा में माना गया है कि हम ऐसा केन्द्र निमित्त करें जो छात्रों के भीतर प्रेम, कसूरणा, परोपकार, त्याग, सुचिता, मानवीयता, सामाजिकता, राष्ट्रप्रेम जैसे भावों एवं संवेदनाओं का उदय करे और उनके भीतर इनके धारण की पात्रता उत्पन्न करे। चमन लाल महाविद्यालय इस कड़ी में ज्ञानात्मक औदार्य की परम्परा को निरन्तर विकसित कर रहा है जो महाविद्यालय की प्रगति के लिए शुभ संकेत है।

पत्रिका में प्रकाशित सामग्री छात्र-छात्राओं को व्यावहारिक एवं वैज्ञानिक ढंग से सोचने की दृष्टि प्रदान करेगी, ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है। मुझे हर्ष है कि महाविद्यालय ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों के बीच शिक्षा की अलख जगा रहा है। मैं इसके लिए महाविद्यालय के अध्यापकों, प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष, श्री राम कुमार शर्मा एवं प्राचार्य, डॉ. सुशील उपाध्याय एवं संपादक को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हृदय से अपनी शुभकामनायें प्रदान करता हूँ।

(प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी)  
कुलपति

छात्र-छात्राओं को कक्षाओं में बुलाया गया। इस दौरान यूनिफॉर्म और आईडी कार्ड की अनिवार्यता को सरकारी स  
लागू किया गया। इसका सुखद परिणाम यह रहा की पढ़ाई को लेकर गंभीर छात्र-छात्राएं ही महाविद्यालय  
पहुंचे।

हम सभी के लिए संतोष और खुशी का विषय है कि वीते 8 महीने से लगातार ऑफलाइन पढ़ाई होने के  
बावजूद महाविद्यालय का कोई छात्र कोरोना की चपेट में नहीं आया। हालांकि इस अवधि में महाविद्यालय के दो  
कर्मचारी कोरोना से ग्रस्त हुए, लेकिन दोनों के संक्रमित होने का संबंध महाविद्यालय से नहीं था। इस प्रयास का  
लाभ केवल पढ़ाई तक सीमित नहीं रहा बल्कि छात्र-छात्राओं को अनलॉक की प्रक्रिया के तहत जो कुछ  
सिखाया गया, वह प्रकारांतर से उनके घरों तक भी पहुंचा। महाविद्यालय शिक्षक और कर्मचारी छात्र-छात्राओं  
को यह बताने में सफल रहे कि कोरोना से बचाव का मामला केवल महाविद्यालय परिसर तक सीमित नहीं है,  
बल्कि इसका विस्तार आवागमन के साधनों, माध्यमों और उन सभी के घर-परिवार तथा पड़ोस तक से जुड़ा  
हुआ है। एक साल पहले जिस गति से कोरोना के संक्रमण ने पांव फंलाए, उससे यह डर लग रहा था कि यह  
सिलसिला न जाने कितने सालों तक जारी रह सकता है, लेकिन अब वैक्सीन के आने के बाद स्थितियां बड़ी हद  
तक सुधार की तरफ जाती दिख रही हैं। वैक्सीनेशन को लेकर छात्र-छात्राएं काफी हद तक जागरूक हैं।

इस वर्ष का सिंहवलोकन करने पर यह साफ दिखता है की कोरोना संक्रमण ने लोगों में स्वास्थ्य के प्रति  
जागरूकता पैदा की है। शिक्षा की दृष्टि से देखें तो इसका एक बड़ा लाभ यह हुआ कि पढ़ाई में आईसीटी के  
इस्तेमाल तथा नई तकनीक को अपनाने में जो शिक्षक शिक्षकों एवं छात्रों, दोनों के स्तर पर दिखाई देती थी, वह  
जगह अब लगभग खत्म हो गई है। सामान्य अनुमान है कि ऑनलाइन एजुकेशन पर जितना कार्य इस एक वर्ष में  
हुआ, उतना कार्य होने में 4 से 5 साल का समय लग सकता था। इस दौरान छात्र-छात्राओं ने ऑनलाइन माध्यमों  
पर मौजूद प्री स्टडी मैटेरियल का इस्तेमाल करना सीखा। ऐसी अनेक छोटी-छोटी चीजें, जिनकी सामान्य तौर  
पर अनदेखी हो जाती हैं, इस अवधि में वे भी सीखने को मिली। अल्बत्ता, यह जरूर है कि इस अवधि में कॉलेज  
परिसर की जीवंत गतिविधियों पर एक हद तक विराम लगा रहा। मार्च, 2021 में महाविद्यालय में तीन  
अकादमिक कॉन्फ्रेंसों के आयोजन से पुराना सिलसिला पुनः आरंभ हुआ।

हम सभी को पता है कि कोरोना अभी समाप्त नहीं हुआ है और देश भर में वैक्सीनेशन की प्रक्रिया पूर्ण होने  
में एक साल या इससे भी अधिक समय लग सकता है। ऐसे में, शिक्षा से जुड़े हम सभी लोगों का यह अनिवार्य  
दायित्व है कि वे नई पीढ़ी में कोरोना संक्रमण से बचाव की जागरूकता का स्तर पहले की तरह ऊंचा बनाए रखें।  
महाविद्यालय पत्रिका का इस वर्ष का इशू विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। इसमें दी गई समस्त  
सामग्री उपयोगी और संग्रहयोग्य है। इसमें ऐसे अनेक लेख सम्मिलित किए गए हैं जो इस विषय के जानकार  
लोगों ने लिखे हैं। मेरा सुझाव यह है कि भविष्य में भी पत्रिका को विशेषांक के रूप में ही प्रकाशित किया जाना  
चाहिए। इसके प्रकाशन के लिए संपादक डा. तरुण गुप्ता और संपादक मंडल के समस्त सदस्यों ने जो मेहनत  
की है, वह प्रशंसनीय है।

इति शुभ

डॉ. सुशील उपाध्याय

प्राचार्य



## संपादक की ओर से...

प्रिय मित्रों,

चमन संदेश का विशेषांक 'कोरोना' वर्तमान परिदृश्य में इस विशेषांक का प्रकाशन इस रूप में उचित प्रतीत होता है कि यह विशेषांक पाठकों के भीतर कोरोना के संबंध में जागरूकता पैदा करेगा और विभिन्न सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा इस महामारी की जानकारी लोगो तक पहुंचाने के प्रयास में यह एक सहायक कदम साबित होगा। जहां सम्पूर्ण विश्व कोरोना वैश्विक महामारी के कारण त्रस्त है वहीं दुसरी ओर छात्र/छात्राओं की शिक्षा भी प्रभावित हुई है। अगर सकारात्मक पहलू की ओर देखें तो डिजिटल इण्डिया का स्वरूप भी प्रतीत होता है ग्रामीण क्षेत्र के छात्र/छात्राओं ने ऑनलाइन कक्षाएं गूगल मीट, जूम, वेबैक्स — आदि के माध्यम से प्रस्तुत कर इस बात को साबित किया है कि आधुनिकता के इस दौर में वह भी किसी से कम नहीं है। उनका शिक्षा के प्रति लगाव अत्यन्त सराहनीय एवं प्रशंसनीय है। चमन संदेश के इस अंक में बाह्य शिक्षकों के लेखों का भी समावेश किया गया है इसके अतिरिक्त महाविद्यालय गतिविधियां एन.एस.एस., एन.सी.सी. एवं रोवर रेंजर्स जैसी गतिविधियों का भी सम्मिलित किया गया है।

पत्रिका के प्रकाशन में सहयोग के लिए मैं महाविद्यालय प्रबंध समिति, प्राचार्य, सभी शिक्षक-शिक्षिकाओं एवं छात्र-छात्राओं का आभार व्यक्त करता हूँ जिनके मार्गदर्शन एवं सहयोग से 'चमन संदेश' का कोरोना विशेषांक आप तक पहुँच सका।

आप से विनम्र अनुरोध है कि 'चमन संदेश' के इस अंक को पढ़कर कोरोना मुक्त भारत बनाने में स्वयं भी सहयोग करें तथा दूसरो को भी प्रेरित करें।

पत्रिका का यह विशेषांक आपको कैसा लगा आपके आगामी नये विशेषांक के सुझाव का इंतजार रहेगा। आप अपनी प्रतिक्रियाएं [editorclm@gmail.com](mailto:editorclm@gmail.com) पर भेज सकते हैं। आप सभी के प्रति आभार।

डॉ. तरुण कुमार गुप्ता  
संपादक

## गृह विज्ञान विभाग द्वारा हस्तशिल्प प्रदर्शनी







एन.सी.सी. परेड



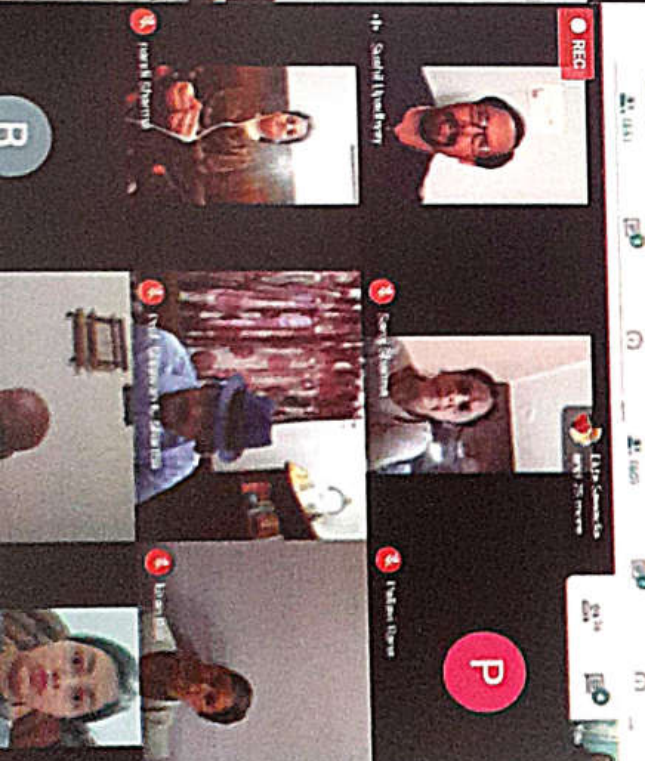
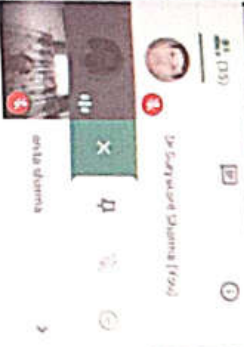
# विभिन्न अवसरों पर आयोजित एन.एस.एस. गातावीथी



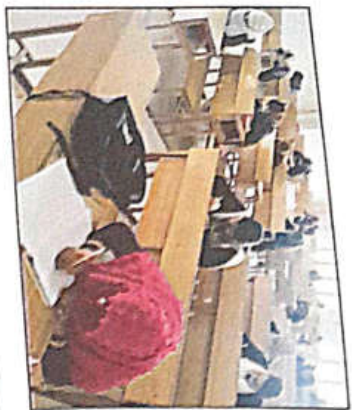
# वार्षिक क्रीड़ा प्रतियोगिता एवं जावद सप्ताह

स्काउट एंड गाइड / रोवर रेजर्स प्रशिक्षण शिविर





# युवा परवर्गाड़ा समारोह



**डॉ. सुशील चव्हाण**  
प्रधान



**डॉ. दीपा अग्रवाल**  
सहायक आचार्य  
(अंशुबी विभाग)



**डॉ. किरन शर्मा**  
सहायक आचार्य  
(व्यापार्य विभाग)



**डॉ. नीत्या कुमार**  
सहायक आचार्य  
(संज्ञान विज्ञान विभाग)



**डॉ. सुर्यकान्त शर्मा**  
सहायक आचार्य  
(इतिहास विभाग)



**श्री विनय कुमार**  
सहायक आचार्य  
(गणित विभाग)



**डॉ. नवीन कुमार**  
सहायक आचार्य  
(भूगोल विभाग)



**श्री विपुल सिंह**  
सहायक आचार्य  
(भौतिक विज्ञान विभाग)



**डॉ. तरुणा कुमार गुप्ता**  
सहायक आचार्य  
(गणित विभाग)



**डॉ. विमल कान्त**  
सहायक आचार्य  
(अर्थशास्त्र विभाग)



**डॉ. संजीव कुमार**  
सहायक आचार्य  
(रसायन विज्ञान विभाग)



**डॉ. मीरा चौरसिया**  
सहायक आचार्य  
(हिन्दी विभाग)



**श्री आणुप्रसाद शर्मा**  
सहायक आचार्य



**डॉ. देव पाल**  
सहायक आचार्य



**डॉ. मौ. इरफान**  
सहायक आचार्य



**डॉ. रूचा चौहान**  
सहायक आचार्य

(कम्प्यूटर विज्ञान विभाग)

(वनस्पति विज्ञान विभाग)

## प्रयोगशाला सहायक वर्ग



**डॉ. अनंता शर्मा**  
सहायक आचार्य  
(संस्कृत विभाग)



**डॉ. प्रभात कुमार सिंह**  
सहायक आचार्य  
(सूक्ष्म जैव विज्ञान विभाग) (पुस्तकालय विज्ञान विभाग)



**श्री कुलदीप कुमार**  
सहायक आचार्य  
(पुस्तकालय विज्ञान विभाग)



**डॉ. अपर्णा शर्मा**  
सहायक आचार्य  
(अंग्रेजी विभाग)



**श्री अशु कुमार**  
प्रयोगशाला सहायक  
भूगर्भ विज्ञान विभाग)



**श्री अनशु कुमार**  
प्रयोगशाला सहायक  
(गृह विज्ञान विभाग)



**श्रीमन्तो प्रसाद**  
प्रयोगशाला सहायक  
(कम्प्यूटर विज्ञान विभाग)



**श्री नवीन कुमार**  
सहायक आचार्य  
(समाज शास्त्र विभाग)



**डॉ. विधि शर्मा**  
सहायक आचार्य  
(जन्तु विज्ञान विभाग)



**डॉ. धर्मेंद्र कुमार**  
सहायक आचार्य  
(राजनीति विज्ञान विभाग)



**डॉ. अरविन्द कुमार**  
सहायक आचार्य  
(भौतिक विज्ञान विभाग)



**श्री नितेश बगडवाल**  
प्रयोगशाला सहायक  
न्यूटन विज्ञान विभाग)



**श्री अनंद यदादुर**  
प्रयोगशाला सहायक  
(चित्रकला विभाग)



**श्रीमन्तो प्रियंका शर्मा**  
प्रयोगशाला सहायक  
(रसायन विज्ञान विभाग)



**डॉ. नानंदी**  
सहायक आचार्य  
(गृह विज्ञान विभाग)



**अनुराग चंद्रान**  
सहायक आचार्य  
(गृह विज्ञान विभाग)



**डॉ. पूर्णिमा शर्मा**  
सहायक आचार्य  
(पुस्तकालय विज्ञान विभाग)



**डॉ. दीपिका सेन**  
सहायक आचार्य  
(जन्तु विज्ञान विभाग)



**शुश्री दीपाक्षी शर्मा**  
प्रयोगशाला सहायक  
गडक्रोवाइलरजी विभाग)



**श्री नावेद आसिफ**  
प्रयोगशाला सहायक  
(भूगोल विभाग)



**श्री मोहित अण्डवाल**  
प्रयोगशाला सहायक  
(भौतिक विज्ञान विभाग)



**डॉ. प्रवंता**  
सहायक आचार्य  
(वाणिज्य विभाग)



**मानव शर्मा**  
अंशकालिक प्रवक्ता  
(कृषि विज्ञान विभाग)



**श्री प्रवेण चन्द ब्रजवासी**  
प्रयोगशाला सहायक



**शुश्री वैशाली**  
प्रयोगशाला सहायक

## पुस्तकालय / लिपिक वर्ग



डॉ. राजेश कौशिक  
पुस्तकालयपट्टक्ष



श्री दिनेश कुमार  
कायालय अधीक्षक



श्री विदित कौशल  
लेखाकार



श्रीमती मनीषा  
उप स. पुस्तकालय



श्री निशांत कुमार  
सहायक



श्री दिनेश कौशल  
कनिष्ठ सहायक



श्री सचिन शर्मा  
कनिष्ठ सहायक



श्रीमती मनु गाना  
कनिष्ठ सहायक



श्री दीपक चौधरी  
कनिष्ठ सहायक



श्री विदित कुमार  
कनिष्ठ सहायक



श्री विद्याल कुमार  
कनिष्ठ सहायक



श्री संपत कौशल  
कनिष्ठ सहायक



श्री राविन्द्र सिंह  
कनिष्ठ सहायक

## श्रद्धांजलि

जो लिखे गए, नामन उन्हें



स्व. सुश्री सोनिया

(प्रयोगशाला सहायक, गृह विज्ञान विभाग)

स्व. श्री गुरतरण दास सैनी

(डॉ. दीपिका सैनी, सहायक प्रोफेसर के दादाजी)

स्व. श्री हरिश्चन्द्र शर्मा

(डॉ. किशन शर्मा, सहायक प्रोफेसर के पिताजी)

स्व. श्री रूपाल सिंह

(शिक्षणोत्तर कार्मिक श्री दीपक चौधरी के पिताजी)

स्व. श्रीमती जयन्ती देवी

(श्री अभिषेक सैनी की दादी जी)

स्व. श्रीमती कबूली देवी

(श्री सतीश कुमार, चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी की दादीजी)

स्व. मास्टर रामेश्वर प्रसाद

(श्री अनुराग पाल, चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी की दादाजी)

वामन ताल महाविद्यालय लखीम और राजकीय डिग्री कॉलेज घाट चमौली की ओर से आयोजित किया अंतरराष्ट्रीय वेबीनार



लखीम और राजकीय डिग्री कॉलेज घाट चमौली की ओर से आयोजित किया अंतरराष्ट्रीय वेबीनार... (The text continues with details about the webinar organized by the college, mentioning the participation of students and faculty members.)

**वामन ताल महाविद्यालय में नेशनल सेमिनार आयोजित**

वामन ताल महाविद्यालय में नेशनल सेमिनार आयोजित... (The text describes the national seminar held at the college, focusing on the theme of 'Digital India' and its impact on society.)

**दो दिवसीय संगोष्ठी का शुभारंभ**

दो दिवसीय संगोष्ठी का शुभारंभ... (The text reports on the inauguration of a two-day symposium, highlighting the presence of various stakeholders and the topics to be discussed.)

**वामन ताल महाविद्यालय में वार्षिक खेलकूद एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का इकित्था गया शुभारंभ**

वामन ताल महाविद्यालय में वार्षिक खेलकूद एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का इकित्था गया शुभारंभ... (The text covers the annual sports and cultural activities event, mentioning the participation of students and the variety of events held.)

**कोरोना संक्रमण काल में प्रचलन में आए गए शहर**



कोरोना संक्रमण काल में प्रचलन में आए गए शहर... (The text discusses the impact of the COVID-19 pandemic on the city, mentioning various measures taken and the role of citizens.)

**वामन ताल महाविद्यालय में वार्षिक खेलकूद व सांस्कृतिक गतिविधियों का हुआ आयोजन**

वामन ताल महाविद्यालय में वार्षिक खेलकूद व सांस्कृतिक गतिविधियों का हुआ आयोजन... (The text provides a detailed account of the annual sports and cultural activities event, listing the various sports and cultural programs.)



**अनुक्रमणिका**

शुभकामना संदेश	
प्रचारार्थ	
समाप्तकीय	
हिन्दी अनुभाव	

क्रमांक	विषय	लेखक का नाम	पृष्ठ संख्या
1.	कोविड-19 महामारी और महिलाओं के प्रति धरोरू हिंसा	श्रीमती आभा सिंघल	5
2.	कोविड-19 संक्रमण काल में जीवन की राह दिखाते संक्रमण नियंत्रण के जनक :	डॉ. वर्चसा सेनी	10
3.	डॉ. इनाज फिलिप सेमेलवाइस कोविड-19 के दौर में डिजिटल शिक्षा :	डॉ. अतुल कुमार चमोला	14
4.	चुनौतियाँ एवं समाधान	डॉ. अक्नीश चौहान	16
5.	प्रभाव और सरकार की रणनीतियों पर अध्ययन	डॉ. देवपाल	22
6.	कोविड-19 आपदा में अवसर	गजेन्द्र रावौड़	27
7.	कोरोना महामारी-एक गंभीर चुनौती	जसवंत सिंह	33
8.	कोविड-19, मानसिक स्वास्थ्य एवं आत्महत्या (एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)	डॉ. ललित चंद्र जोशी	38
9.	विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र पर कोरोना के प्रभाव	अर्चित पाण्डेय	46
10.	कोरोना: समस्या एवं समाधान (एक समाज शास्त्रीय अध्ययन)	प्रो. इला साह	49
11.	कोरोना वायरस का शिक्षा पर प्रभाव	डॉ. ललित चंद्र जोशी	56
12.	कोविड-19 की विभीषिका एवं भारत	ईशा रानी	60
13.	कोरोना काल में ऑनलाइन शिक्षण का स्वरूप व प्रभाव मुकेश जैन	डॉ. मनोज कुमार तोमर	67
14.	कोविड-19 का निदान विज्ञान अथवा ज्योतिष ?	गौरव त्रिपाठी	72
15.	कोरोना महामारी (कोविड-19)	नितिन कुमार	76
16.	कोरोना- एक और मानवीय त्रासदी	पूनम चौहान	78
17.	कोविड-19 का पर्यावरण पर प्रभाव	डॉ. भरत गिरी गौसाई	84
18.	कोरोना ने तो बदलकर रख दिया आम इंसान को	डॉ. सरिता	87



19.	कोरोना का भारतीय अर्थ व्यवस्था पर प्रभाव	डा. जयमल कान्त	90
20.	कोरोना काल में पुस्तकालय चुनौतियां और संभावनाएं	डॉ. राजीव वशिष्ठ	92
21.	इंफेक्शन से बचना है तो इम्यूनिटी बनाए स्ट्रांग	डॉ. ऋचा चौहान	96
22.	बचाव, इलाज कहाँ कठिन!	सन्त समीर	99
23.	कोरोना वायरस के लक्षण	निशा कंचन	112
24.	कोविड-19 संक्रमण में विटामिन सी की महत्ता	डॉ. स्वाति वत्स	115
25.	जिंदगी अब जीतने की ओर	योशिता विनय पांडेय	119
26.	कोरोना वायरस एक संक्रमण	अनु वर्मा	121
27.	सूक्ष्म वायरस	सावेज खान	123
28.	महामारी का प्रकोप	मुद्दसार खान	126
29.	नोवेल कोरोना वायरस एवं परिवर्तन	नवीन कुमार	128
30.	कोरोना का सामाजिक प्रभाव	डॉ. सूर्यकान्त शर्मा	131
31.	महामारी का कहर	नीलू	134
32.	कोरोना वायरस से बचाव के उपाय	कोमल देवी	135
33.	कोरोना का पर्यावरण का प्रभाव	तररन्नुम	137
34.	कोरोना वायरस क्या है?	गुलशन	138
35.	कोरोना समय में खाद्य-सामग्री सुरक्षा	शिवानी चौहान	139
36.	कोरोना को हराना है	प्रिया	140
37.	कोरोना तेरी शक्ति कमाल	डॉ. आरती	141
38.	कोरोना की हार निश्चित है	दिलबाग सिंह	142

## अंग्रेजी अनुभाग

क्रमांक	विषय	लेखक का नाम	पृष्ठ संख्या
1.	Covid-19 Pandemic : Impact on Education in India	Dr. Subhash Chand Agrawal	145
2.	Covid-19 Vaccination	Dr. Sandhya Vaid	151
3.	Mathematical Analysis of Corona Virus (Covid-19)	Dr. Tarun Kumar Gupta	154
4.	Need to increase immunity to avoid Corona	Anamika Chauhan	157
5.	Covid-19 : Impact on Education in India	Dr. Deepa Agarwal	161
6.	Hypertention and Covid-19	Dr. Neetu Gupta	164
7.	Corona Virus (Covid-19) & Food	Mrs. Purnima Sharma	166
8.	The Symptoms of Corona Virus	Firoz Ansari	169
9.	How do Viruses Mutate and Relate to a Vaccine	Dr. Vidhi Tyagi	171
10.	Impact of Covid-19 on education in India	Dr. Himanshu Kumar	173
11.	Economics of Disaster & Climate Change in Covid-19	Isha Gupta	175
12.	Corona Virus : An Infection	Sheeba	177
13.	All About Covishield Vaccine	Dr. Deepika Saini	178

## कोविड-19 महामारी और महिलाओं के प्रति घरेलू हिंसा

श्रीमती आभा सिंघल

असिस्टेंट प्रोफेसर

समाजशास्त्र विभाग, डी.ए.वी. कालेज

मुजफ्फरनगर

डॉ. वर्चसा सैनी

असिस्टेंट प्रोफेसर

राजनीति विज्ञान विभाग, जैन कन्या

पाठशाला स्नातकोत्तर महाविद्यालय,

मुजफ्फरनगर

### सारांश

घरेलू हिंसा वह अभिशाप है जो महिलाओं के तन, मन और आस्था पर आघात पहुँचाता है। घरेलू हिंसा स्त्रियों के विकास को अवरुद्ध करने का हथियार है। यह स्थिति सदियों से रही है। सदियों पहले प्लेटो के युग में स्वयं प्लेटो ने इसका वर्णन किया है। उस युग में महिलाओं की दशा अत्यन्त शोचनीय थी और सामाजिक जीवन में उनकी स्थिति गौण थी। एथेन्स में पाए जाने वाली मातृ दासता, एंकागिता तथा नारी की महत्वहीनता के प्रति प्लेटो के हृदय में आक्रोश का भाव विद्यमान था इसलिए प्लेटो में साम्यवादी विचार का प्रतिपादन करके इस समस्त बुराइयों को दूर करने का प्रयत्न किया लेकिन तब से आज तक हम इन बुराइयों को समाप्त नहीं कर पाए हैं। सेमिनार हो या गोष्ठी, वाद विवाद हो या भाषण जब तक हम स्वयं दृढ़ विचारों से समाप्त नहीं करेंगे तब तक महिलाओं को यही दंश झेलना पड़ेगा। आज वैश्विक महामारी के समय यह लैंगिक असमानता व घरेलू हिंसा खुलकर सामने आ रही है। आज महिलाएं ही सर्वाधिक परिशानियाँ झेल रही हैं। आज स्त्रियों के विरुद्ध घरेलू हिंसा का विषय सभी सामाजिक, सांस्कृतिक, वर्गीय, भौगोलिक, नस्लीय, जातीय सीमाओं को तोड़ते हुए सार्वभौमिक विषय हो गया है जो अत्यन्त चिन्ताजनक है।

वर्तमान समय में संसार के अधिकतर देश चीन के वुहान शहर से आरम्भ हुए Covid-19 रुपी दानव के कारण प्रलयकारी स्थिति का सामना कर रहे हैं। यह Covid-19 रुपी दानव पूरे विश्व को अपने कब्जे में ले चुका है तथा प्रतिदिन सैकड़ों हजारों लोगों की जीवनलीला भी समाप्त कर रहा है। आज इस Covid-19 को पूरे विश्व में वैश्विक महामारी घोषित किया जा चुका है। इस वैश्विक महामारी के समक्ष विश्व के शक्तिशाली देश जैसे अमेरिका, आस्ट्रेलिया, फ्रांस, जर्मनी, ब्रिटेन आदि देश शक्तिहीन साबित हो चुके हैं। इस महामारी ने संपूर्ण विश्व में उथल-पुथल मचा दी है। इस भयानक वैश्विक महामारी के सक्रमण से बचने के लिए विश्व के विभिन्न देशों ने लॉकडाउन का सहारा लिया तथा इस महामारी के साथ युद्ध करने के लिए लॉकडाउन का बहुत सख्ती से पालन भी कर रहे हैं। यह महामारी न केवल संपूर्ण विश्व के लिए गंभीर खतरा बन चुकी है वरन् यह महामारी विश्व को एक गंभीर आर्थिक सकंट की तरफ भी ले जा रही है। इस महामारी के कारण विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में विविध प्रकार की गतिविधियाँ अवरुद्ध हो चुकी हैं। फ़ैक्ट्री, स्कूल, कालेज, मन्दिर कार्यालय, सिनेमा हाल,

ब्रिटेन व स्पेन में इस प्रकार की घटनाएं 20 फीसदी तथा फ्रांस में 30 फीसदी तक बढ़ गई हैं। आस्ट्रेलिया में घरेलू हिंसा की घटनाएं 70 प्रतिशत तथा आस्ट्रेलिया के सर्वाधिक जनसंख्या वाले राज्य न्यूसाउथ वेल्स में इस प्रकार की घटनाएं 40 प्रतिशत तक बढ़ गई हैं। अमेरिका के रोग नियंत्रण तथा रोकथाम केन्द्र के अनुसार चार में से एक महिला तथा सात में से एक पुरुष अपने जीवनसाथी के द्वारा गंभीर शारीरिक हिंसा का सामना कर रहा है"। यह वैश्विक परिदृश्य इस बात का संकेत देता है कि इस प्रकार की घरेलू उत्पीड़न व हिंसा की घटनाएं न केवल किसी एक देश में वर्तमान के विभिन्न देशों में धीरे-धीरे सामने आने लगी हैं जो अत्यन्त चिन्ताजनक है। इस सन्दर्भ में विशेषज्ञों के द्वारा भयानक चेतावनी भी जारी की गई है तथा विशेषज्ञों ने इस स्थिति का सामना करने के लिए सरकार से जोस कदम उठाने की अपील की है।

वैश्विक महामारी के संकट के समय घरेलू हिंसा में तीव्र गति से वृद्धि हुई है। घरेलू हिंसा का सम्बन्ध घर गृहस्थी में स्त्री के किए जाने वाले शारीरिक व मानसिक उत्पीड़न से होता है। यह परिवार के भीतर होने वाली वह हिंसा है जिसमें परिवार का कोई एक वयस्क सदस्य दूसरे सम्बन्धी को नियंत्रित करने के लिए शक्ति का दुरुपयोग करता है। सामान्यतः यह पाति के द्वारा पत्नी के साथ दुर्व्यवहार माना जाता है। यह दुर्व्यवहार भौतिक, लैंगिक, मनोवैज्ञानिक, भावनात्मक, आर्थिक धमकी तथा मारपीट तक किसी भी रूप में देखा जा सकता है। यह एक प्रकार से घरेलू दुर्व्यवहार से सम्बन्धित होता है। कई बार यह दुर्व्यवहार पत्नी को पीटना, मारना, उसे गिरा देना, उसे किसी प्रकार की चोट पहुँचाना, उसे घर से बाहर निकालना, खर्च के लिए पैसा न देना और उसे यह एहसास दिलाना कि वह बेकार है, के रूप में दिखाई देता है।

वर्तमान समय में विश्व के अधिकांश देशों के साथ-साथ भारत ने भी Covid-19 महामारी रूपी दानव का सामना करने के लिए लॉकडाउन कर दिया है। लॉकडाउन के कारण जहाँ एक ओर सभी लोग अपने घरों में बन्द रहने के लिए बाध्य हुए हैं वहीं दूसरी ओर घरों में बन्द रहने के कारण इसका बुरा प्रभाव महिलाओं के जीवन पर भी देखने को मिला है।

लॉकडाउन के कारण लोगों के सामने वर्तमान समय में ऐसी जटिल आर्थिक समस्याओं का उदय है जिसके कारण लोगों के रोजगार समाप्त हो गए हैं, दफ्तरों में काम-काज रुक गया है, लोगों को घर से ही काम करना पड़ा है, वेतन में कटौती हुई है, नौकरियाँ छूटी हैं, आर्थिक गतिविधियाँ कम हुई हैं, दैनिक मजदूरी करने वाले श्रमिकों को कार्य नहीं मिला है जिसके कारण लोगों के सामने आर्थिक संकट पैदा हुआ है, रोजी रोटी की चिन्ता दिखाई देने लगी है तथा धन के अभाव के कारण दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति में बाधा उत्पन्न हुई है जिसके कारण व्यक्ति तनावग्रस्त, चिन्तित व क्रोधी हुआ है और इन सभी आर्थिक कारणों के कारण उत्पन्न हुई तनाव, निराशा व कष्ट का शिकार परिवार की महिलाएं होने लगी हैं। राष्ट्रीय महिला आयोग की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में लॉकडाउन के दौरान अप्रैल माह में 315 घरेलू हिंसा की शिकायत दर्ज की गई है। ये सभी शिकायतें आयोग को ऑनलाइन एवम् व्हाट्सएप के माध्यम से प्राप्त हुई हैं। राष्ट्रीय महिला आयोग की चेयरपर्सन रेखा शर्मा का कहना है कि उनको घरेलू हिंसा की घटनाओं की शिकायतें लॉकडाउन के दौरान ई-मेल के

## यमगल संदेश

यमगल लाल महाविद्यालय, लंडौरा जलापल हरिद्वार

माध्यम से लगातार प्राप्त हो रही हैं। घरेलू हिंसा की घटनाएं लोकडाउन के दौरान केवल भारत के किसी एक राज्य में ही नहीं बरकर देश के विभिन्न हिस्सों दिल्ली, पंजाब, केरल, जम्मू कश्मीर, पश्चिमी बंगाल आदि अनेक राज्यों के देखने को मिलती हैं। घरेलू हिंसा की शिकायतों को क्वार्टर एप या ई-मेल के माध्यम से भेजी गई है, उनमें कुछ शिकायत में तो पति का लोकडाउन में व्यवसाय खराब होने के कारण महिला के साथ मारपीट की घटनाएं प्रकाश में आई हैं तथा अन्य शिकायतों में लोकडाउन के कारण पत्नी का अपने माता-पिता के पास न जाने की विवशता का लाभ उठाकर परिवार में पति, सास, ससुर के द्वारा शारीरिक रूप से उत्प्रेषण प्रति हिंसा को जाने की घटना प्रकाश में आई हैं।

इसके अतिरिक्त अन्य शिकायत में एक लड़की के माता-पिता के द्वारा उसके जबरदस्ती विवाह करने की सहमति लड़की के द्वारा न देने के कारण उसके साथ शारीरिक रूप से हिंसा की बात कही गई है जिसमें पुलिस ने तुरन्त कार्यवाही करके उस लड़की को आश्रय गृह पहुंचाया है। इस प्रकार लोकडाउन के दौरान घरेलू हिंसा की ऐसी अनेकानेक घटनाएं घटित हुई हैं जिसमें महिलाओं को गुस्से में आकर पति के द्वारा गाली दी जाती है, थपपड़ मारा जाता है उसे शारीरिक व मानसिक रूप से चोट पहुंचाई जाती है। वैश्विक महामारी के समय में महिलाओं के साथ घरेलू हिंसा एवम अत्याचार की घटनाओं में वृद्धि हुई है उसके लिए आर्थिक कारण के अतिरिक्त कुछ अन्य दशाएं भी उत्तरदायी हैं। वैश्विक महामारी के कारण जो लोकडाउन हुआ है, उससे आवागमन काफी बाधित हुआ है जिसके कारण महिलाएं अपने प्रति होने वाली हिंसा व मारपीट को ना तो कहीं शिकायत करने के लिए जा सकती हैं और न ही अपने मित्रों, रिश्तेदारों एवम् साधियों के पास जाकर अपने सुख-दुःख को साझा करने के स्थिति में होती हैं उसी स्थिति का लाभ उठाकर महिलाओं के साथ परिवार में घरेलू हिंसा की घटनाओं में वृद्धि हुई है। इसके अतिरिक्त कुछ लोगों की प्रवृत्ति मामूली बातों पर चिड़चिड़ होने, क्रोधित होने व आक्रमकता को होती है, ऐसे व्यक्ति भी लोकडाउन के समय घरों में कैद होने के कारण पहले से अधिक आक्रामक व क्रोधी हो जाते हैं और महिलाओं को गाली देना मारपीट करने जैसे घृणित कार्य करते हैं।

यद्यपि महिलाओं को इस प्रकार के लैंगिक असमानता पर आधारित घरेलू हिंसा, उत्पीड़न, मारपीट व शोषण से मुक्ति दिलाने व संरक्षण देने के लिए "घरेलू हिंसा से महिलाओं का संरक्षण अधिनियम 2005" बनाया गया है जो 26 अक्टूबर 2006 से लागू भी हो गया है परन्तु महिलाएं घर में परिवार के सदस्यों के द्वारा मारपीट, उत्पीड़न, हिंसा से पीड़ित होने पर भी न तो कोई शिकायत करती हैं और न ही कोई कानूनी कार्यवाही करती हैं क्योंकि महिलाओं के ऊपर अपने परिवार की प्रतिष्ठा को बनाए रखने, अपने विवाह सम्बन्ध को न तोड़ने, अपने अपमान के भय का पुरख पर अपनी आर्थिक निर्भरता का पितृसत्तात्मक सोच का और समाज में अपनी आलोचना न होने का दबाव होता है। जिसके परिणामस्वरूप घरेलू हिंसा से पीड़ित होने पर भी महिलाएं अपने कानूनी अधिकार का प्रयोग करके सुरक्षा प्राप्त नहीं करती हैं। इसके अतिरिक्त कोविड-19 महामारी के वैश्विक संक्रमण होने के कारण भी महिलाओं का

अपने विरुद्ध होने वाली हिंसा की शिकायतें करना और कानूनी मदद प्राप्त करना कठिन सा हो गया है। ऐसे कठिन समय में ना तो महिलाएं शिकायत करने पुलिस के पास जा सकती हैं और न ही समाजसेवी संगठन, कार्यकर्ता या मित्र सम्बन्धी महिलाओं को मदद करने में समर्थ हो पा रहे हैं।

राष्ट्रीय महिला आयोग ने वैश्विक महामारी के इस संक्रमण काल में भारत की घरेलू हिंसा से पीड़ित महिलाओं की शिकायतों को दर्ज करने के लिए क्वार्टर एप नम्बर लान्च किया है जिससे महिलाओं को अपने शिकायत दर्ज कराने के लिए कहीं बाहर ना जाना पड़ा। इसके अतिरिक्त महिला आयोग ने घरेलू हिंसा से सम्बन्धित शिकायतों का शीघ्र निपटारा करने के लिए एक स्पेशल टीम भी बनाई है। विभिन्न राज्यों में महिलाओं के लिए हेल्पलाइन भी बनाई है। घरेलू हिंसा से पीड़ित महिलाओं को सुरक्षा देने के लिए विभिन्न राज्यों में पुलिस व प्रशासन भी अपना पूर्ण सहयोग दे रहे हैं। साथ ही इनके द्वारा पीड़ित महिलाओं के लिए आश्रय घर की व्यवस्था भी की गई है।

इसके साथ दिल्ली उच्च न्यायालय ने केन्द्र सरकार व दिल्ली सरकार को कोरोना वायरस लोकडाउन के दौरान घरेलू हिंसा कानून के प्रावधानों को प्रभावी ढंग से लागू करने का निर्देश दिया है। घरेलू हिंसा से पीड़ित महिलाओं के लिए देश भर में हेल्पलाइन भी शुरू की गई है। इस प्रकार जब देश की सरकार Covid-19 के संक्रमण के कारण देश के लोगों के स्वास्थ्य को उत्तम बनाए रखने के लिए यथासंभव प्रयास कर रही है वहाँ दूसरी ओर महिलाओं को जब तक समाज में घरेलू हिंसा के विरुद्ध जनचेतना नहीं होगी तब तक इस प्रकार की घटनाएं समाप्त नहीं हो पाएंगी। समाज में जहाँ महिला सशक्तिकरण की बात कही जाती है, वहाँ दूसरी ओर महिलाएं आज भी अपने अधिकारों व हितों के प्रति जागरूक नहीं हैं। जब तक महिलाओं के अन्तःकरण में स्वयं अपने अधिकारों को पहचानने व उनको प्राप्त करने की इच्छा शक्ति जाग्रत नहीं होगी तब तक महिलाओं को परिवार में घरेलू हिंसा, लैंगिक भेदभाव, शोषण से आज्ञादी मिलना मुश्किल है और ऐसे समाज में महिलाओं के सशक्तिकरण की बात करना अप्रसासंगिक है।

### सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

1. फडिया डॉ. बी.एल. और सिंघल, एस.सी. - पारचात्य राजनैतिक चिन्तन का इतिहास
2. सिंह, बी.एन. और सिंह जन्मेजय - आधुनिकता और नारी सशक्तिकरण
3. महाजन, डा. धर्मवीर और महाजन, डा. कमलेश - समाजशास्त्र
4. न्यूयार्क टाइम्स न्यूज सर्विस, लाकडाउन का साइड इफेक्ट, अमर उजाला 8 अप्रैल 2020 मेरठ



जोरींगी भांगराय बंजुरायन ही बुरंगकी कल्पने के निर्माता हैं। और हाथ धीरे धीरे धाराएं पावने काय की जगह ही भाग की दृष्टि अभाव राहुने व फिरी ही बल्य की दृष्टीमान कराने से पावने हीमिगाइका कराने यही बल्युन ही लीने की किमानी बरकाड हाग बरगागाय ही का रही है। यही यही कीमती दृष्टुन, किमानीकी दृष्टीमान व भागी की अतिरे ही बरगागाय बंजुरायन किमने की यहीकी की प्रीति भागाकाक किमया का रही है। किमयायन में अन्वय की पुन कीमती ही कल्पने की निर्माता बरगागाये काने भागी का यहीकी की काकी राकाड किमनी है और अन्व है अगुनी किमानी की अगुनी ही प्रीतिमान ही गई है। यहीरे यह एक अन्वयकी कल्पना काय है कि एक एक मान्य वा यन लीग हाड लीने की प्रीति भागाकाक यही ही यही का कि अन्वयमानों में हीकिटर ही कीही की लीने की यकाही यही अन्वयकी ही व यहीकिमया कीही से ही यहीकी का यगुभागाय कराने ही व यहीकी ही यगुनी किमने काने काने कीमती की किमने किमने किमने ही प्रीतिमान में भाग, काने ही किमनेसे संकमान काड काना वा व यहीज पर भी काने ही।

अपने कई सालों के शोध में डा. इनायत सेमेलनबाइस ने यह अंश का कि किमानीकी को अपने हाथों की कीटाणुरहित करना होता है किमनेसे रोग का संकमान यही होता।

इनायत फिलिय सेमेलनबाइस का जन्म 1 जुलाई को लकन (भारत) में हुआ था जो अन्वय के बुहापेरट का भाग है। जोसेफ सेमेलनबाइस एवं टैज भुण्ड की पुन यहीकी ही व ही यहीकी संतान थे। इनायत ने पहले 1837 में विद्यया विद्यापीठालय से लन की पढाई पूरा की यहीरे हीरे ही वे मेडिसिन के अध्ययन की और मुद्र गाए और 1844 में उन्होंने हीकिटर और हीरेडियन की डिग्री प्राप्त की। 1 जुलाई 1846 को विद्यया अन्वयन हीकिमेटल के प्रभुति किमयानी सेमेलनबाइस की निवृत्त प्रो. जॉन बरनेन के महायक हीकिटर के पद के रूप में हुए जो यहीकाय ही कीमिया की जेजेंट के नाम से जाना जाता है। उनका काम प्रतिदिन सुबह यहीकी की कान कर उनको प्रोफेसर के राउंड के लिए तैयार करना, कोर्न के छात्रों को पढ़ाना, कानियन किमनेकीकी का पदवेक्षण करना व उनका रिकार्ड तैयार करना होता था। उन्व समय यहीरे यहीकाय मुन्डार (चार्लडवैड फोवर) से हिस्तीची के लिए भीने यहीकी कीमती की मुन्डु से हीकिमेटल परेशान था। हीसिटल के अधीन ही हीटपिटी कीमतीक अन्व है किमने से पावने में यहीकाय बुछार (चार्लडवैड बुछार) से मुन्डु पर लगभग 15 से 20 प्रतिशत वा कबकी रूखे में व बाए प्रतिशत वा किमसे पहले किमतीक की इन्वय छाया ही यहीकी ही व यहीकाय उन्व कीमतीक में एडमिट न कराने के लिए मिशुमिहाली थी, यहीरे तक कि कुछ अन्वयन यहीकाय यहीकाय व यहीकी की अन्व देने की अन्वय ब्रह्मर सन्वयली थी। सेमेलनबाइस यह देखकर आश्चर्यचकित व कि सद्दक पर अन्वय लेने वाले भी व यहीरे में यह बुछार गुलगाथक काम देखा जाता था उनके दिमाग में लगाना यह प्रश्न कीमती रहना कि आखिर क्या है जो उन यहीकायों और यहीकी की उन्व बुछार से बचता है

सेमेलनबाइस ने हीने कीमतीकी में हीने यहीकी कमान प्रसुतियों का अध्ययन किया और पाया कि हीने अन्वय एक से हीनेकी से काम किया जाता हैकोवल यहीरे काम करने वाली हीने

## यमन संदेश

यमन लाल महाविद्यालय, लंडौरा जगणपट हरिद्वार

वहां मेंडिकल के छात्र डिलीवरी कराते थे जबकि दूसरे में केवल मिडवाइफ स्टाफ ही सेवाएं देते थे। परंतु फिर भी वे किसी गंभीर नतीजे पर नहीं पहुंचे। फिर अचानक एक दिन उन्हें उनके दोस्त की मृत्यु से गहरा धक्का लगा जिसकी मृत्यु पोस्टमार्टम करते हुए अन्य छात्र को गलती से औरंग से चोट लगा जाने के कारण हुई। दोस्त के पोस्टमार्टम रिपोर्ट की पैथोलॉजी आश्चर्यजनक तरीके से व्यूपर्ल बुखार से मरने वाली महिलाओं की पोस्टमार्टम रिपोर्ट की पैथोलॉजी से काफी मिलती थी। जिससे सेमेल्बेस ने इन दोनों के बीच कोई संबंध होने की बात सोची। परीक्षण करने पर उन्होंने पाया कि मेंडिकल के छात्र अपने हाथों में पोस्टमार्टम कक्ष से शव के कर्णों को क्लीनिक में ले आते हैं व उन्हीं हाथों से डिलीवरी करते हैं। इस बात से यह भी पुष्ट हुआ कि अन्य मिडवाइफ जो पोस्टमार्टम के काम को नहीं करते उनके द्वारा कराई गई डिलीवरी में महिलाओं की मृत्यु दर कम है। उस वकत तक क्योंकि जर्म ध्योरी को खोज नहीं हुई थी तो सेमेल्बेस ने माना शर्बों से निकलने वाले अज्ञात कर्णों के कारण व्योरपले बुखार होता है। इसको जांच के लिए उन्होंने एक नियम बनाया कि पोस्टमार्टम कक्ष से आने के बाद एवं डिलीवरी से पहले हाथों को क्लोरीन के पानी से धो दिया जाय जिससे वे कण काफी मात्रा में हाथों से अलग हो जाते थे। इस प्रयोग के बाद पहले क्लीनिक में महिलाओं की मृत्यु दर में 90 प्रतिशत की गिरावट आई। अप्रैल 1847 में जहां मृत्यु दर 18.3 प्रतिशत था वहाँ जून में 2-2 व जुलाई में 1-2 प्रतिशत रह गयी व कुछ महीनों के बाद मृत्यु दर जीरो प्रतिशत हो गई। सेमेल्बेस ने परिकल्पना दी कि इन सभी मौतों के पीछे एक ही कारण है सफाई का अभाव। सफाई जो सबसे महत्वपूर्ण है परंतु सबसे ज्यादा अनदेखा की जाती थी व उसे हास्यास्पद समझा जाता था। उनका कहना था कि डिलीवरी व ऑपरेशन से पहले डॉक्टरों को क्लोरीन से हाथ धोने चाहिए जिससे अज्ञात किस्म के हानिकारक कर्णों को हटाया जा सकता था परंतु उस समय के मेंडिकल साइंस के वैज्ञानिकों व स्थापित चिकित्सकों ने उनकी इस ध्योरी का विरोध किया व हाथ धोने को हास्यास्पद बताया। 1849 में राजनैतिक कारणों का हवाला देते हुए उनके पद से हटा दिया गया व बाद में उन्हें विश्वविद्यालय से निष्कासित कर दिया गया। उन्होंने विश्वविद्यालय में अध्यापन के लिए अर्जा दी जिसे कई निर्बंधों के साथ स्वीकार किया गया जिससे बेहतर उन्होंने विद्या को छोड़ना समझा व 1850 में विद्याना को छोड़ पेस्ट आ गये व छः वर्षों तक पेस्ट के एक अस्पताल में सेवायें दी व प्रसूति विभाग के अध्यक्ष पद पर रहे। जहां उन्होंने संक्रमण नियंत्रण के लिए हाथ धोने की अपनी ध्योरी को अपना कर व्योरपल बुखार से मरने वालों की संख्या को काफी नियंत्रित कर दिया था। 1855 में वे पेस्ट विश्वविद्यालय के प्रसूति विभाग में प्रोफेसर के पद पर नियुक्त हुए अब तक इंगरी में उनकी ध्योरी को स्वीकार किया जा चुका था व सरकार ने सभी जनपदों के अस्पतालों को सेमेल्बेस के संक्रमण नियंत्रण के उपायों को अपनाने के आदेश दिए। परंतु इसके साथ ही विद्याना विश्वविद्यालय एवं मेंडिकल वैज्ञानिकों का रवैया उनके प्रति शत्रुतापूर्ण बना रहा। 1861 में सेमेल्बेस को ध्योरी द एंटियोलॉजी कॉन्सेट एण्ड प्रोफिनेक्सिस ऑफ चाइल्डबेड फीवर प्रकाशित हुई, जिसे उन्होंने देश-विदेश के कई प्रसूति विभागों एवं मेंडिकल वैज्ञानिकों

को भेजा जिस पर प्रतिक्रिया बेहद निराशा करने वाली थी मेंडिकल वैज्ञानिक अथॉरिटी उनके अध्यापन के खिलाफ हो गई। उन्होंने कुछ पत्र विदेशों के प्रसूति विभाग के अध्यक्षों को भी लिखे परंतु कुछ विशेष फायदा नहीं हुआ। एक कान्फ्रेंस में जर्मनी के फिजिशियनों व प्राकृतिक विज्ञान के वैज्ञानिकों ने जिन में उस समय के प्रख्यात पैथोलॉजिस्ट रूडॉल्फ वकी भी शामिल थे, उनके सिद्धान्त को नकार दिया। इसके साथ ही चिकित्सक समुदाय ने उनपर आरोप लगाया कि क्लोरीन से हाथ धोने से मृत्यु दर कम होने के उनके परिणाम से ऐसा प्रतीत हो रहा है जैसे इन मौतों के परीक्ष जिम्मेदार चिकित्सक हैं व उनकी हाथ धोने की ध्योरी को हास्यास्पद बताते हुए उनके अध्यापन पर रोक लगाने की माँग की। इन सारी बातों से उनके दिमाग पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा व वे कई दिमागी बीमारियों से ग्रसित हो गए। वे भुलकड़पन के शिकार हो गए व उनका सामाजिक व्यवहार अपने सहयोगियों के साथ बहुत बुरा हो गया। उन्हें मानसिक रोगियों के अस्पताल में भरती कर दिया गया जहाँ 13 अगस्त 1865 को हाथ पर लगी चोट के घाव पर गैंग्रिन हो जाने से 47 वर्ष की अवस्था में उनकी मृत्यु हो गई। डा. सेमेल्बेस संक्रमण को रोकने के लिए जीवन भर प्रयासरत रहे व दुर्भाग्यवश उनकी मृत्यु भी घाव में संक्रमण के कारण हुई। कुछ वर्षों बाद में सेमेल्बेस की हाथ धोने की ध्योरी को लुई पाश्चर की जर्म ध्योरी एवं ब्रिटिश सर्जन एवं फादर ऑफ माडर्न एंटीसेप्टिस जोसेफ लिस्टर ने हाइजीन पर काम करते वकत स्वीकारा एवं प्रकाश में लाए।

कोविड-19 के इस संक्रमण काल में गुगल ने उन्हें याद करते हुए बीस मार्च 2020 को उनपर डूडल भी प्रकाशित किया व संक्रमण नियंत्रण के लिए खोजी गई उनकी हाथ धोने की ध्योरी के प्रति सभी को जागरूक कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।



## वमन लाल महाविद्यालय, लंडौरा जनापद हरिद्वार कोविड-19 के दौर में डिजिटल शिक्षा : चुनौतियाँ एवं समाधान

डॉ. अतुल कुमार चमोला

सहायक अध्यापक,

दिल्ली पब्लिक स्कूल, हरिद्वार

मेरी स्मृति में भारतीय जीवन, समाज, अर्थव्यवस्था और शिक्षा के क्षेत्र में अभी तक दो महत्वपूर्ण क्षण आए हैं। एक तो 1990 में उदारवादी अर्थव्यवस्था के लागू होने के बाद भारतीय जीवन में आया गुणात्मक परिवर्तन, दूसरा 2020 में कोविड-19 के आने के बाद हमारे जीवन एवं समाज में एक बड़े रूपांतरण का उद्घोष। पहला रूपांतरकारी क्षण अर्थव्यवस्था के प्रभाव, पूँजी की माया और गति के कारण घटित हुआ। दूसरा रूपांतरण मानव जीवन में कोरोना वायरस के रहस्यात्मक घातक प्रवेश के कारण हो रहा है।

पहले रूपांतरण ने जीवन में हमारी गति बढ़ाई, भूमंडलीकरण, हवाई यात्राएं, साइबर स्पेस आदि विकसित हुए। दूसरे परिवर्तन ने गति को रोककर हमें स्थिर कर दिया है। कोरोना जनिता यह समय असाधारण मानवीय संकट का है। संकट की यह घड़ी पूरी दुनिया को बदलती जा रही है। सामाजिक जीवन, राजनीति, शिक्षा, अर्थव्यवस्था सबको इस कोरोना जनिता समय के साथ खुद को समायोजित करना है। इस संकट के खत्म होने के बाद भी भय, व्याकुलता, घबराहट हमारे जीवन के तत्व रूप में शामिल हो हमारे सामाजिक जीवन के मूल चरित्र में उथल-पुथल करते रहेंगे।

शिक्षा खासकर उच्च शिक्षा के मूल चरित्र में भी कोरोना संकट के कारण बड़े परिवर्तन की संभावना है। विश्व के अनेक बड़े देश जहाँ बड़े-बड़े विश्वविद्यालय हैं, वे आगने-सामने की शिक्षा (क्लासरूम-टीचिंग) के विकल्प के रूप में डिजिटल शिक्षा के नए विकल्प विकसित कर रहे हैं। उन देशों में ऑनलाइन टीचिंग के नए स्रोत विकसित किए जा रहे हैं। हमारे देश में भी मानव संसाधन विकास मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक इस नए परिवर्तन के बारे में बार-बार आगाह कर रहे हैं। वह और उनकी टीम डिजिटल शिक्षण पद्धति का एक संवादी माहौल भारतीय उच्च शिक्षा में भी विकसित करने के लिए प्रयासरत हैं। इस चुनौती का सामना करने के लिए हाल ही में उन्होंने एक नया एप 'युक्ति' लॉच किया है, जिसमें हमारे नए भारत के छात्र, शोधार्थी, शिक्षक अपने ज्ञान एवं नवचारी वृत्ति से इस कोरोना वायरस को पराजित कर सकेंगे। इस लड़ाई में हमें अपने 'ज्ञान एवं नवाचार' को सक्षम हथियार के रूप में विकसित करना होगा।

कोरोना संकट के समय हमारी जरूरतों ने उच्च शिक्षा व्यवस्था के मूल ढांचे को फिर से छिन्न-भिन्न कर दिया है। चूंकि अब समाज खुद की वर्चुअल सोशल स्पेस में बदलने को

बाध्य है, ऐसे में शिक्षा में भी क्लासरूम की अवधारणा वर्चुअल होती जाएगी। हम धीरे-धीरे एक ऐसे समाज में बदलते जाएंगे, जहाँ सीधा संवाद लगभग खत्म हो जाएगा। सब कुछ वर्चुअल, ऑनलाइन एवं डिजिटल टेबनी संवादों के रूप में ही रह जाएगा। संभव है कि उच्च शिक्षा का यह नया वर्चुअल रूपांतरण हमें बेहदारी की ओर ले जाए। संभव है, यह शिक्षा के परिक्षेत्र को ज्वाला नवाचारी, समाहारी एवं क्षमता विकास की दिशा में आगे बढ़ाए। किंतु भारत जैसे समाज में हमें गरीब, उपेक्षित और दूरस्थ क्षेत्रों में वैसे सामाजिक समूहों में इंटरनेट रखने, इस्तेमाल करने एवं सतत कनेक्टिविटी बनाए रखने पर जोर देना होगा।

ऐसा लगता है कि भविष्य में उच्च शिक्षा में शिक्षण एवं शोध जीवंत चेहरों की उपस्थिति से विहीन की बोर्ड एवं स्क्रीन में बदलता जाएगा। उस प्रक्रिया में मानवीय चेहरे सीधे नहीं रहेंगे। ऐसे में हमें एक वर्चुअल समुदाय की कल्पना कर उससे शैक्षणिक संवाद स्थापित करने की आदत डालनी होगी।

शिक्षक भी होंगे, छात्र भी होंगे, पर दोनों स्क्रीन पर होंगे। अब शायद हमारी सामाजिकता भी काफ़ी कुछ स्क्रीन पर टंग जाएगी, जिन्हें हम की बोर्ड से उतारेंगे और फिर स्क्रीन पर टांग देंगे।

**चुनौतियाँ :** बिना आत्म अनुशासन या अच्छे संगठनात्मक कौशल के अभाव में विद्यार्थी ई-शिक्षा मोड में की जाने वाली पढ़ाई में पिछड़ सकते हैं।

छात्र बिना किसी शिक्षक और सहपाठियों के अकेला महसूस कर सकते हैं। परिणामस्वरूप वे अक्सर से पीड़ित हो सकते हैं।

भारत में बेहतर कनेक्टिविटी का अभाव व इंटरनेट की कम गति ई-शिक्षा की राह में सबसे बड़ी चुनौती है।

भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में शहरी क्षेत्रों की भांति विद्युत व्यवस्था का अभाव है, जो ई-शिक्षा में रूकावट बन सकता है।

**समाधान :** ई-शिक्षा व्यवस्था में समय और स्थान की कोई पाबंदी नहीं होनी चाहिए।

ई-शिक्षा के माध्यम से पढ़ाई को कम लागत में अच्छी व्यवस्था का प्रयास होना चाहिए। सरकार द्वारा समय-समय पर कम्प्यूटर कौशल का ज्ञान विकसित करने की ओर ध्यान देना चाहिए।

शिक्षा में दूरस्थव्यवस्था प्रणाली के प्रचलन को बेहतर बनाने की दिशा में करना चाहिए। देश के हर छात्र तक पहुँचने का प्रयास करना होगा।



संयुक्त राष्ट्र के आर्थिक और सामाजिक मामलों के विभाग के अनुसार, 2100 तक दुनिया में सबसे अधिक आबादी वाला देश होगा। यद्यपि स्थान से तीसरे स्थान की छत्रांग के साथ नाइजीरिया सबसे तेज विकास दिखाएगा। यहां उन अन्य देशों की सूची दी गई है जो निम्नलिखित होंगे:

भारत	-	1.5 बिलियन
चीन	-	1 बिलियन से कम होगा
नाइजीरिया	-	794 मिलियन
संयुक्त राज्य अमेरिका	-	447 मिलियन
लोकतांत्रिक गणराज्य कांगो	-	379 मिलियन
पाकिस्तान	-	352 मिलियन
इंडोनेशिया	-	306 मिलियन
तंजानिया	-	304 मिलियन
इथियोपिया	-	250 मिलियन
युगांडा	-	214 मिलियन

### कोरोना वायरस

कोरोना वायरस संबंधित आरएनए वायरस का एक समूह है जो स्तनधारियों और पक्षियों में बीमारियों का कारण बनता है। मनुष्यों और पक्षियों में, वे प्रवसन पथ के संक्रमण का कारण बनते हैं जो हल्के से लेकर घातक तक हो सकते हैं। मनुष्यों में हल्कों बीमारियों में सामान्य सर्दी के कुछ मामले शामिल हैं (जो अन्य वायरस के कारण होता है, मुख्य रूप से राइनोवायरस), जबकि अधिक घातक किस्मों में SARS, MERS और COVID-19 हो सकते हैं। गायों और सूअरों में, वे दस्त का कारण बनते हैं, जबकि चूहों में वे हेपेटाइटिस और एन्सेफेलोमाइलाइटिस का कारण बनते हैं।

कोरोना वायरस परिवार में कोरोनावाइरस, ऑर्डर निडोविरलेस, और रिवल रिबोविरिया में उपपरिवार ऑर्थोकोरोनविराणा का गठन करते हैं। वे एक सकारात्मक-समझ वाले एकल-फसे हुए आरएनए जीनोम और हेलिकल सिमिटी के न्यूक्लियोकोप्सिड वाले वायरस से आच्छादित हैं। कोरोना वायरस के जीनोम का आकार लगभग 26 से 32 किलोग्राम तक होता है, जो आर.एन.ए. वायरस के बीच सबसे बड़ा है। उनके पास विशेषता है कि क्लब के आकार की स्पाइक्स जो उनकी सतह से प्रोजेक्ट करती हैं, जो कि इलेक्ट्रॉन माइक्रोग्राफ में सौर कोरोना की याद दिलाती है, जिससे उनका नाम निकलता है।

### मनुष्यों में संक्रमण

मनुष्यों में संक्रमण नीचे दिए गए कारणों पर आधारित हो सकते हैं।

चार मानव कोरोना वायरस ऐसे लक्षण उत्पन्न करते हैं जो आमतौर पर हल्के होते हैं:

1. मानव कोरोना वायरस OC43 (HCoV-OC43), CoS-CoV



**यमल संदेश** यमल लाल महाविद्यालय, लंडौरा जलापढ हरिद्वार

1. मानव कोरोना वायरस एचकेयू 1 (p1hvksoh-pds:w 1), Co&CoV
2. मानव कोरोना वायरस 229E (HCoV-229E), a&CoV
3. मानव कोरोना वायरस NL63 (HCoV-NL63), a&CoV
4. मानव कोरोना वायरस NL63 (HCoV-NL63), a&CoV

तीन मानव कोरोना वायरस लक्षण पैदा करते हैं जो संभावित रूप से गंभीर हैं:

1. मध्य पूर्व श्वसन सिंड्रोम-संबंधी कोरोना वायरस (MERS-CoV), Co&CoV
2. गंभीर तीव्र श्वसन सिंड्रोम कोरोना वायरस (SARS-CoV), Co&CoV
3. गंभीर तीव्र श्वसन सिंड्रोम कोरोना वायरस 2 (SARS-CoV&2), acute&CoV

COVID-19 और उनके उत्तर के बारे में तथ्य  
 COVID-19 और उनके उत्तर के बारे में तथ्य  
 नया संस्करण मूल संस्करण की तुलना में अधिक तेजी से फैल रहा है, लेकिन यह अधिक घातक नहीं माना जाता है। यूके के साथ-साथ, कोविड-19 वायरस के समान उत्परिवर्तन का पता नीडरलैंड, डेनमार्क और ऑस्ट्रेलिया में भी लगाया गया है, जैसा कि डब्ल्यूएचओ द्वारा बताया गया है। टीके लगाने के लिए अलग-अलग तरीके से नए वैरिएंट का सुझाव देने का कोई सबूत नहीं है। ब्रिटेन में, लंदन सहित दक्षिण-पूर्व इंग्लैंड के कई हिस्से अब तेजी से फैल रहे वायरस पर अंकुश लगाने के लिए एक नए, सख्त स्तर के प्रतिबंध के तहत हैं।

तथ्य: ख़ाँसी या परेशानी महसूस किए बिना 10 सेकंड या उससे अधिक के लिए अपनी सांस रोक पाने में सक्षम होने का मतलब यह नहीं है कि आप COVID-19 से मुक्त हैं। COVID-19 के सबसे सामान्य लक्षण सूखी ख़ाँसी, थकान और बुखार हैं। यह पुष्टि करने का सबसे अच्छा तरीका है कि आपके पास COVID-19 रोग पैदा करने वाला वायरस प्रयोगशाला परीक्षण के साथ है। आप इस साँस लेने के व्यायाम से इसकी पुष्टि नहीं कर सकते, जो खतरनाक भी हो सकता है।

तथ्य: टंड का मौसम और बर्फ COVID-19 वायरस को नहीं मार सकता है  
 यह मानने का कोई कारण नहीं है कि टंड का मौसम नए कोरोनावायरस या अन्य बीमारियों को मार सकता है। बाहरी तापमान या मौसम की परवाह किए बिना, सामान्य मानव शरीर का तापमान 36.5°C Is 37°C तक रहता है। नए कोरोना वायरस के खिलाफ खुद को बचाने के लिए सबसे प्रभावी तरीका एल्कोहल बेस्ड सेनिटाइजर या साबुन और पानी से धोने के साथ अपने हाथों को अक्सर साफ करना है।

गर्म स्नान करने से कोविड-19 को रोक नहीं जा सकता है

गर्म स्नान करने से आप COVID-19 को पकड़ने से नहीं रोक पाएंगे। आपके स्नान या शॉवर के तापमान की परवाह किए बिना, आपके शरीर का सामान्य तापमान लगभग 36.5°C Is 37°C तक रहता है। दरअसल, वेहद गर्म पानी से नहाना हानिकारक हो सकता है, क्योंकि यह आपको जला सकता है। COVID-19 के खिलाफ खुद को बचाने का सबसे अच्छा तरीका है अक्सर अपने हाथों को साफ करना। ऐसा करने से आप अपने हाथों पर लगाने

वाले वायरस को खत्म कर सकते हैं और संक्रमण से बच सकते हैं जो तब तक आपकी आँखों, मुँह और नाक को छू सकता है।

**क्या COVID-19 वायरस मच्छर के काटने से फैल सकता है?**

आज तक इस बारे में कोई जानकारी नहीं मिली है और न ही यह सुझाव दिया गया है कि नए कोरोनावायरस को मच्छरों द्वारा प्रेषित किया जा सकता है। नया कोरोनावायरस एक श्वसन वायरस है जो मुख्य रूप से उत्पन्न बूंदों के माध्यम से फैलता है जब एक संक्रमित व्यक्ति ख़ाँसता या छींकता है, या लार की बूंदों के माध्यम से या नाक से निर्वहन करता है। अपने आप को बचाने के लिए, अपने हाथों को अक्सर एल्कोहल-आधारित हाथ से रगड़कर साफ करें या साबुन और पानी से धोएं। इसके अलावा, ख़ाँसी और छींकने वाले किसी भी व्यक्ति के साथ निकट संपर्क से बचें।

**क्या हाथ सुखाने वाले COVID-19 वायरस को मारने में प्रभावी नहीं हैं?**

COVID-19 वायरस को मारने में हैंड ड्रायर्स कारगर नहीं हैं। अपने आप को बचाने के लिए, अक्सर अपने हाथों को एल्कोहल-आधारित हाथ रगड़ कर साफ करें या उन्हें साबुन और पानी से धोएं। एक बार आपके हाथ साफ हो जाने के बाद, आपको कागज के तौलिये या गर्म हवा के ड्रायर का उपयोग करके उन्हें अच्छी तरह से सुखा लेना चाहिए। अल्ट्रा-वायलेट (यूवी) लैंप का उपयोग हाथों या आपकी त्वचा के अन्य क्षेत्रों को कीटाणुरहित करने के लिए नहीं किया जाना चाहिए।

यूवी विकिरण त्वचा को जलन और आपकी आँखों को नुकसान पहुंचा सकता है। अपने हाथों को एल्कोहल-आधारित हाथ से साफ करना या साबुन और पानी से अपने हाथ धोना वायरस को हटाने के सबसे प्रभावी तरीके हैं।

**तथ्य: ख़ारा के साथ अपनी नाक को रिस करना COVID-19 को नहीं रोकता है**

इस बात का कोई सबूत नहीं है कि नियमित रूप से ख़ारा के साथ नाक को रगड़ने से लोगों को नए कोरोना वायरस से संक्रमण से बचाया गया है। कुछ सीमित प्रमाण हैं कि नियमित रूप से ख़ारा के साथ नाक को रगड़ने से लोगों को सामान्य सर्दी से अधिक जल्दी ठीक होने में मदद मिल सकती है। हालाँकि, नियमित रूप से नाक को रगड़ने से श्वसन संक्रमण को रोकने के लिए नहीं दिखाया गया है।

**तथ्य: लहसुन खाने से COVID-19 की रोकथाम नहीं होती है**

लहसुन एक स्वस्थ भोजन है जिसमें कुछ रोगाणुरोधी गुण हो सकते हैं। हालाँकि, वर्तमान प्रकोप से कोई सबूत नहीं है कि लहसुन खाने से लोगों को नए कोरोना वायरस से बचाया गया है।

**संचरण को कैसे रोकें**

COVID-19 (1) के लिए सामरिक तैयारी और प्रतिक्रिया योजना का अतिव्यापी उद्देश्य वायरस के संचरण को दबाकर और संबंधित बीमारी और मृत्यु को रोककर COVID-19 को नियंत्रित करना है। हमारी सबसे अच्छी समझ के लिए, वायरस मुख्य रूप से संपर्क और

श्वसन बूटों के माध्यम से फैलता है। कुछ परिस्थितियों में एयरबोर्न ट्रांसमिशन हो सकता है ( जैसे कि जब एयरोसोल जनरेटिंग प्रक्रिया स्थायी देखभाल सेटिंग्स में या संभावित रूप से इनहेलर भीड़-भाड़ वाले खराब हवादार सेटिंग्स में कहीं और आयोजित की जाती है )। पैर जटारणों की जांच करने और COVID-19 को प्रसारण के लिए उनके कार्यात्मक महत्व व आकलन करने के लिए अधिक अध्ययन की तत्काल आवश्यकता है।

संचरण को रोकने के लिए, हल्कयूएओ उपायों की एक व्यापक सेट की सिफारिश करता है:

- सेंटिथ मासलों को जितनी जल्दी हो सके पहचानें, परीक्षण करें, और उपयुक्त सुविधाओं में स्थानीय मामलों (संक्रमित लोगों) को अलग करियें।
- संक्रमित लोगों को स्थानीय संघर्षों को पहचानें और संरोध करें और उन लोगों को परीक्षण करते जो रक्षण विकसित करते हैं ताकि वे संक्रमित होने पर अलग हो सकें और देखभाल की आवश्यकता हो।
- विशिष्ट स्थितियों में फौजिक मास्क का उपयोग करें, उदाहरण के लिए, सार्वजनिक स्थानों पर जहां सामुदायिक संचरण है और जहां अन्य रोकथाम के उपाय, जैसे कि शारीरिक दूरी, संभव नहीं है।
- COVID-19 रोगियों की सेंटिथ और पुष्टि के लिए देखभाल करने वाले स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं द्वारा संपर्क और छंटी-छंटी सावधानियों का उपयोग, और एयरोसोल पैट बनने को प्रक्रियाओं का उपयोग करते समय एयरबोर्न सावधानियों का उपयोग।
- पूरे शिफ्ट में सभी नियमित गतिविधियों के दौरान, सभी नैदानिक क्षेत्रों में काम करने वाले स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं और देखभाल करने वालों द्वारा चिकित्सा मास्क का निरंतर उपयोग।
- हर समय, लगातार हाथ स्वच्छता, जब संभव हो, दूसरों से शारीरिक दूरी और श्वसन शिफ्टाचार का अभ्यास करें। भीड़-भाड़ वाली जगहों, नजदीकी-संपर्क सेटिंग्स से बंद और खराब वेंटिलेशन वाले सीमित और संलग्न स्थान फौजिक मास्क पहनें जब बंद भीड़-भाड़ वाले स्थान दूसरों की सुरक्षा के लिए और सभी बंद सेटिंग्स और उच्च पर्यावरण सफाई और कटापण शोधन में अच्छा पर्यावरण वेंटिलेशन सुनिश्चित करें।

### घातक ब्रेन ड्रिपिंग अर्माबा

यदि आपका लगता है कि हमारे पास यह सब 2020 में हुआ है, और कुछ भी हमें आश्चर्यचकित नहीं कर सकता है या हमें भयभीत नहीं कर सकता है, तो यह समय है अपने आप को बांधने का। जैसे कि घातक कोरोना वायरस हमारे जीवन को दुःखी करने के लिए पर्याप्त नहीं था, एक मस्तिष्क: खाने वाला अर्माबा तनाव अमेरिका और अन्य देशों पर बड़ चिंगा पैदा कर रहा है। नैगलरिया फाउलर्स के रूप में नामित, अर्माबा अब उत्तरी संयुक्त राज्य अमेरिका में फैल रहा है। इससे पहले, मामलों की संख्या अमेरिका तक ही सीमित थे, लेकिन

अमेरिका में परीक्षण के पीछे कारणों पर परीक्षण हो सकता है। रोग नियंत्रण और रोकथाम केंद्र (सीडीसी) के अनुसार, मामलों का फैलाव है, सिस्टिस्टर्न राबर्ट्स की ओर बढ़ रहे हैं। जबकि सीडीसी ने पुष्टि की है कि अर्माबा से नुपित परमाणु से कोई संक्रमित नहीं हो सकता है, यदि नुपित पानी फिटिंग यार्क की मात्रा में फल जान है, तो मुख्य रूप से अर्माबा के लिए फलक हो सकता है। अर्माबा नाक की निर्माणों के माध्यम से शरीर में प्रवेश करता है और मस्तिष्क में प्रवेश करती है, जिससे प्रतिकारण प्रारंभ, अंततः, कहीं पर्यटन और यार्क होतों है, फिर चक्कर आना, अत्यधिक थकान, घम और प्रति घम होना है। नैपथीय फलकेंनी एक मुक्त-जीवित मूल्य अर्माबा है। यह मस्तिष्क का एक नुपित और प्रिकारकनी संक्रमण पैदा कर सकता है जिससे प्राथमिक अर्माबाक मैरीनेरुन्सराकॉरुम (कोरुम) कहा जाता है। अर्माबा आमतौर पर गर्म तापे पानी और मिट्टी में पाया जाता है। जब बोटिंग के माध्यम से समुद्राया जाता है कि नैगलरिया फाउलर्स अमेरिका पर लोगों को संक्रमित करता है, जब नुपित पानी नाक के माध्यम से शरीर में प्रवेश करता है।



## भलरीय अर्थव्यवस्था पर कोरलनलवलरस कल प्रललल और सरकर की रणनीतलतलं पर अधयन

डॉ. देवपल

असलस्ट प्रोफेसर, वलणलष्य वलभ  
चमन ललल मलवलवललल, लंलेश

### सलरलश

कोवलड-19 वलरस कोरलनल वलरस की एक आनुवंशलक शलखल है, ललसन एक गंभीर शैरलवक मलमलरी के रूप में पूरे वलरल को संक्रीनलत कलवल है। इस सलल की शुरुआत में वलरल स्वास्थ संगठन दुरल मलमलरी धोलत की गई यह वीमलरी दुनलवल भर में फैल गई है, ललसन बड़ी संख्या में ललगों की मौत हुई है और ललगों में अनलशललतल कल मलहल है। जलनलेव मलमलरी के जवलव में, अधलकलंश देशों ने वलभलन उतलत कलए हैं, ललसनमें पूर्ण लॉकडाउन लल कलवल गलल है ललसकल अर्थव्यवस्थलओं पर हलनलकरक प्रलभव पड़ल है। यह शोध पत्र भलरीय अर्थव्यवस्था के आर्थलक करलकों पर कोरलनल वलरस के प्रलभव कल अधयन करतल है औ इसमें भलरीय रलजर्व बैंक और भलरत सरकर की केंद्र सरकर दुरल कलए गलए वलभलन नीतलल उतलतलं कल भी वलशल्लेण कलवल गलल है, ललकल आर्थलक आथलत की दूर कलवल जल सके औ भलरीय अर्थव्यवस्था की वसूलों की जल सके।

### कुंजी शलड: कोवलड -19, कोरलनलवलरस, भलरीय अर्थव्यवस्था

#### परलचय:

कोरलनल वलरस एक गंभीर लींन संक्रीनलक शलसन रलग है जो Severe Acute Respirator, Syndrome Coronavirus 2 (SARS-CoV-2) के करलण हलतल है। यह जीवन-परलवर्तनकरल वीमलरी वीन के प्रलनल हुंई की रलजधनी वृहलन में दलसंबर 2019 में हुंई, और इसे वलरल स्वास्थ संगठन (डक्यू.एच.ओ.) के दुरल जनवरी 2020 में वीरलवक मलमलरी के रूप में पहचलनल गलल है। वीरलवक अर्थव्यवस्था में मलमलरी के वलषटनकरलरी प्रलभव के करलण नलकटवर्तल संकट में आ गलल है। दुनलवल भर के देशों में लॉकडाउन और आर्थलक शलटडाउन कलवल गलल और इससे करलण आलशयकलतल से अधलक दवलइतलं, सेनेदलइजर और मलस्क जैसे सलमलनों व उतलतलं में वृदुध हुंई और मलमलरी से लइने के ललए कुल वुनलवलदी आलशयकलतलओं व परलणलमस्वरूप वलभलन शैलं की आपूर्तल की कर्मी प्रलभललत होने लगी है। भलरीय अर्थव्यवस्था पर कोवलड-19 कल प्रलभव वृहल धीमल रहल है। करलल में जनवरी 2020 के अंत में पहले मलमलर की रलषोट आने के वलद, भलरत सरकर ने वलरस के प्रसर को रोकने के ललए कई एहतलवलतल करम उतलए। कइलं से ललगू कलए गलए उतलतलं के वलवजूद, 22 मलर्च, 2020 की भलरीय

प्रधलनमंत्री, श्री नरेंद्र मोदी ने 14-दलन के ललए लॉकडाउन कल आहवलन कलवल जो कल वलद में 70 दलनों की अवधल में ललगभग वलर चरणों में दलनलक 31 मई 2020 तक कलवल गलल। सलर्वजनलक स्वास्थ पर कोरलनल वलरस के वृहले संक्रीण कल नलरलनलत करने में और इसके प्रसर को रोकने के प्रयलस में लॉकडाउन ने मदद की है, लेकलन लॉकडाउन से भलरीय अर्थव्यवस्था को नुकसनल पहुंचल है। रलषुडव्यलपी तलललवदी से भलरत में आर्थलक गतलवलध वुरी तरह प्रलभललत हुंई थल। रलषुडव्यल संखलकरी करलरललल (एन.एस.ओ.) के अनुसलर चलू वलत वध में जी. डी. पी. में 7.7% की गलरलवट रहेगी। जी. डी. पी. पर एन.एस.ओ. के अनुमलन पर वलत मन्त्रललत ने कलहल कल लॉकडाउन के वलद 2020-21 में 7.7% गलरलवट कल अनुमलन यह वतलतल है कल तलमलही दुर तलमलही आर्थलक गतलवलधधलं में तेजी आ रही है और जी. डी. पी. मजवूती से आगे बढ़ रही है अलकूबर के वलद से कई शैलं में तेज सुधलर के संकत है। सरकर कल अनुमलन है कल खर्च और खपत में 5.8:तेजी से मलंग वृहणी और अर्थव्यवस्था को आगे वृहने में मदद मललेगी।

**शोध वलधल:**- प्रस्तुत शोध-पत्र दुवलरीयक आंकड़ों पर आथलरलत है। शोधपत्र के ललए इंटरनेट वेबसलइटों, न्यूजपेपर लेखों, पत्रलकलओं, सरकरलरी रलषोटों, पत्रलकलओं कल प्रयलण कलवल गलल है। **शोध कल उद्देश्य:**- शोध पत्र कल उद्देश्य भलरीय अर्थव्यवस्था के आर्थलक करलकों पर कोरलनल वलरस के प्रलभव कल अधयन करनल है एवं भलरत की केंद्र सरकर दुरल कलए गलए वलभलन नीतललत उतलतलं कल भी वलशल्लेण करनल है।

### कोरलनल वलरस कल अर्थव्यवस्था पर प्रलभव

1. कृषल शैलन पर प्रलभव:- कृषल शैलन में समग्र उत्पादन स्तरों पर कोवलड -19 के करलण पूरे देश में ललगलए गलए लॉकडाउन कल प्रलभव कृषल शैलन में कुल उत्पादन स्तर के गलरलवट के सलथ अधलक रहल है। यह संकट वेहद गंभीर समय में आलल है, जब नई फसल तैवलर थल और वलजर भेजे जलने के इंतजलम कलवे जल रहे थल। भलरत के सलमने सबसे बड़ी चुनौती यह थल कल कलठल लॉकडाउन की स्थलतल में गलंवों से खलख पलरलर्य की वे वीजें शलहों और दुनलवल के कलसी अन्य देश तक कैसे पहुंचलयी जलये? कलंकी अगल सलललई शुरु नहीं हुंई तो भलरीय कलसनलं की भलरी नुकसनल शैलनल पड़ेगल। भलरत की कुल आबलदी कल 58 पीसदी हलस्सल खेती पर नलभर है और देश की अर्थव्यवस्था में ललगभग 17 प्रतिशत जो कल 256 बलललन डॉलर कल यलगदलन है।

2. वलनलमलण उद्यलग पर प्रलभव: वलनलमलण उद्यलग कोरलनलवलरस कल खलमलतल जल भुगत रहे है कलंकी उन्हेने भलरत सरकर के दुरल अचलनक ललगये गये लॉकडाउन के करलण थोड़े समय के ललए अपने उत्पादकल उत्पादन बन्द कर दलवल थल। इन उद्यलगों के उत्पादन केंद्रों यल गलदलमों में रखे हुये मलल के मूल्य कल अवमूल्यन हो गलल है और मशीनरी भी लंबे समय तक प्रयलण न होने के करलण बेकरल हो गलली है। उद्यलगों दुरल पुन: उत्पादन शुरु करने में प्रमुख वलधल बन्द मशीनरी की पुन: उत्पादन यलग वनलने के ललये नकदी प्रवलह की कमी और आपूर्तल श्रंखलल व्यवधलन है।

संदर्भित करता है। लोकछात्रन के कारण अर्थव्यवस्था में वस्तुओं और सेवाओं की बहुत कम मांग है। इस प्रकार, सकल मांग और अर्थव्यवस्था की मुद्रा आपूर्ति की बढ़ाने के लिए, आर्योआई ने 30000 करोड़ रुपये मूल्य के बॉन्ड खरीदने का फैसला किया। इसका निम्न परिणाम होगा :

1. सकल मांग में वृद्धि
  2. मनी सप्लाई में वृद्धि
  3. याणित्जिक बैंकों की ऋण देने की क्षमता में वृद्धि
2. आत्मनिर्भर भारत योजना :- कोरोना संकट के बीच देश में योजनाएं बढ़ाने की दिशा में अहम कदम उठाते हुए केंद्र सरकार ने आत्मनिर्भर भारत योजनाएं प्रारम्भ की है। इस योजना तहत सरकार नई नीकरी पाने वाले और नई नीकरी देने वाले, दोनों को भविष्य निधि (पीएफ) पर सरकार 12-12 फीसदी की सविम्वर्ती देगी। इसके लिए मौजूदा वित्तीय वर्ष के लिए 1,584 करोड़ रुपये की धनसहायता और पूरा योजना अवधि 2020-2023 के लिए 22,810 करोड़ रुपये का बजट आवंटित किया गया है। इस स्कीम से 58.5 लाख कर्मचारियों को फायदा होगा।
3. आर्थिक पैकेज: सरकार ने 20 लाख करोड़ के आर्थिक प्रोत्साहन पैकेज की घोषणा की, जो 12 मई, 2020 तक जीडीपी का 10 प्रतिशत बनाता है। इस पैकेज में सुधार, बुनियादी ढांचे के निर्माण, पीड़ितों के लिए कुछ सीधे नकद सहायता राशि के निःशुल्क शासित थे। पैकेज में संपार्श्विक-मुक्त ऋण, एफडीआई नीति में बदलाव, भविष्य निधि योगदान और व्यापार करने में आसानी बढ़ाने के उपाय भी शामिल थे।
4. संरक्षणवाद: महामारी के कारण भारतीय कंपनियों के अवसरवादी अधिग्रहण को रोकने के लिए भारत ने 18 अप्रैल, 2020 को अपना प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) नीति को बदल दिया। इस नीति में बदलाव का मुख्य कारण यह है कि चीन गिरते वित्तीय बाजारों का लाभ उठा सकता है, जिससे शत्रुतापूर्ण अधिग्रहण हो सकता है। नई एफडीआई नीति बाजार को प्रतिबंधित नहीं करती है, हालांकि, भारत के साथ भूमि सीमा साझा करने वाले पड़ोसी देशों के प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) से सुरक्षा प्रदान करती है।
5. चीन का विकल्प: भारत सरकार इस महामारी उपयोग उन कंपनियों को आकर्षित करने के लिए एक अवसर के रूप में कर रही है जो चीन का विकल्प तलाश रहे हैं। द इकोनॉमिक टाइम्स की रिपोर्ट के अनुसार, कम से कम 461,589 हेक्टेयर भूमि को इस उद्देश्य के लिए रखा गया है। सरकार "चीन प्लस वन" रणनीति को भी देख रही है, जो बताती है कि केवल चीन में निवेश करने के बजाय, अन्य देशों से व्यापार का विविधीकरण लंबे समय में सुरक्षित और अधिक किफायती विकल्प है। महामारी के बाद, कई भारतीय कंपनियां वैकल्पिक आपूर्ति शृंखलाओं को खोजकर इस रणनीति को अपना रही हैं।

### निष्कर्ष :

पूरी दुनिया कोरोनावायरस की चपेट में है। महामारी के प्रकोप ने सामाजिक और आर्थिक संकट के साथ-साथ आर्थिक गतिविधियों और व्यापार कार्यों के अभूतपूर्व पतन के साथ एक वैश्विक स्वास्थ्य आपातकाल को जन्म दिया है। वैश्विक व्यापार जगत पर इसके गंभीर परिणाम हुए हैं। इसलिए, इस अध्ययन ने भारतीय अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों पर कोरोना वायरस के संभावित प्रभावों को सामने रखा है इसके अलावा, अध्ययन में भारतीय अर्थव्यवस्था के जीवित रहने की रणनीतियों पर प्रकाश डाला गया है जो वर्तमान स्थिति से निपटने के लिए एक व्यवसाय के लिए आवश्यक हैं। इस कठिन समय के दौरान कोरोनावायरस के प्रभाव को मुकाबला करने के लिए सरकार को अधिक रणनीतियों का निर्माण करना चाहिए। जिससे व्यवसाय के माहौल में संभावित अवसरों की पहचान की जा सके।

### सन्दर्भ सूची

1. [economictimes.indiatimes.com](http://economictimes.indiatimes.com)
2. [en.wikipedia.org](http://en.wikipedia.org)
3. [www.indiatoday.in](http://www.indiatoday.in)
4. [www.jagranjosh.com](http://www.jagranjosh.com)
5. [www.mckinsey.com](http://www.mckinsey.com)
6. [www2.deloitte.com](http://www2.deloitte.com)
7. [www.strategy&business.com](http://www.strategy&business.com)



# कोविड-19 आपदा में अवसर

श्री गजेन्द्र राठौड़

असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग

राजकीय महाविद्यालय गुडामालानी (बाड़मेर) राजस्थान

चीन के वुहान शहर से प्रारंभ होकर अंतर्राष्ट्रीय महामारी का रूप धारण करने वाली कोविड-19 बीमारी ने विश्व भर में हाहाकार मचा रखा है। भविष्य में आने वाली पीढ़ियां वर्ष 2020 को कोरोना वायरस के कारण स्मरण करेगी। किसी भी महत्वपूर्ण घटना का भविष्य में गुण अवगुण के आधार पर विश्लेषण होता है। इसी प्रकार कोरोना के प्रभाव पर कोरोना काल के दौरान व पश्चात् वैज्ञानिक व अनुसंधानात्मक शैली में अध्ययन व विश्लेषण होने हैं। कोरोना वायरस के प्रभाव की जब समीक्षा होगी तब निश्चित रूप से उसके नकारात्मक पक्ष पर सर्वाधिक चर्चा होगी जो कि स्वाभाविक भी है। यह सही है कि कोविड-19 महामारी के कारण भारत समेत विश्व के कई देशों पर आर्थिक संकट मंडराने लगा है। व्यापार, उद्योग, पर्यटन आदि की स्थिति दयनीय है। लाखों लोगों के रोजगार जा चुके हैं तथा बेरोजगारी के आंकड़ों का ग्राफ बढ़ता ही जा रहा है। भारत जैसे देश जहां करोड़ों लोग गरीबी रेखा के नीचे हैं तथा देहाड़ी मजदूरी अथवा छोटा-मोटा काम कर जीवन यापन कर रहे हैं, उनके लिए कोरोना वज्र प्रहार की तरह असहनीय है। नागरिकों की क्रय क्षमता क्षीण हो चुकी है। बाजारों में सन्नाटा पसरा है। शिक्षण संस्थान बंद है तथा विद्यार्थियों का अध्ययन बाधित हो रहा है। धन की अपार हानि से कई राष्ट्रों के समक्ष राजनीतिक संकट की भी स्थिति है। इस प्रकार कोरोना ने आम जनजीवन को बुरी तरह प्रभावित किया है, परंतु आपदा अवसर की उपजाऊ जमीन भी होती है।

बाहरवीं सदी में जब कुस्तुनतुनिया पर तुर्कों का अधिकार हो गया तब भारत व यूरोप के मध्य व्यापार हेतु स्थल मार्ग बंद हो गया। इस संकट ने यूरोप वासियों को भारत तक पहुंचने हेतु जल मार्ग की खोज करने के लिए प्रेरित किया। इतिहास इस प्रकार के उदाहरणों से भरा है जब मानव ने अपने बुद्धि बल के द्वारा नवाचारी उपायों से आपदा को अवसर के रूप में परिवर्तित किया है। जब दशकों बाद भी कोरोना के प्रभाव की विवेचना होगी तो कोरोना के कारण विभिन्न क्षेत्रों में किस प्रकार नव चिंतन के माध्यम से विकास प्रगति व मानव कल्याण हेतु कार्य किए गए, यह तथ्य अवश्य ही पटल पर आएगा। कोरोना का यह सकारात्मक पक्ष आशा के साथ उत्साह का भी संचार करता है तथा नवाचारों को आमंत्रित करता है।

## शिक्षा के क्षेत्र में नए अवसर

कोविड-19 के कारण सरकारी निर्देशों की अनुपालना में सामाजिक दूरी के पालनार्थ स्कूल, कॉलेज और कोचिंग संस्थानों को दीर्घ अवधि तक बंद रखना पड़ा। अध्ययन-अध्यापन

## वर्गाल संदेश

हेतु कई नवाचारो परल हुरै। कोरोना से बचाव हेतु भीतिक दूरी बनाए रखते हुए अध्ययन को हेतु कई नवाचारो परल हुरै। कोरोना से बचाव हेतु भीतिक दूरी बनाए रखते हुए अध्ययन को सुचारु रखने के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म का अभूतपूर्व प्रयोग दिखाई दे रहा है। तकनीकी धीरे-धीरे शिक्षा के क्षेत्र में प्रभावशाली पक्ष के रूप में उभर रही यह सर्वाधिकारित धा। परंतु कोरोना के कारण बड़ी तेजी से तकनीकी आधारित शिक्षा प्रणाली का नया मॉडल स्वतः ही निर्मित हो गया। प्राथमिक विद्यालयों से लेकर विश्वविद्यालय तक और विभिन्न कोचिंग व प्रशिक्षण संस्थानों द्वारा वीडियो लेक्चर और ऑनलाइन क्लासेज के माध्यम से विद्यार्थियों तक ज्ञान को गंगा धारीरपी प्रयासों के द्वारा पहुंचाई जा रही है। शिक्षाविद् विभिन्न तकनीकी सहायकों के साथ मिलकर कई प्रकार के शिक्षा आधारित मोबाइल ऐप बनाने में लगे हैं।

माकॉट रिसर्च एंड एनालिसिस कंपनी वेलेसिटी एम आर के सर्वे के अनुसार 72 प्रतिशत भारतीय विद्यार्थी ऑनलाइन स्टडी मेपड को पसंद कर रहे हैं। वर्तमान में भारत में कई ऑनलाइन शिक्षा एवं कोचिंग प्रदाता कंपनियों की बाढ़ आ रही है। इस क्षेत्र में स्थापित कंपनियों जैसे बारजूस, अनएकेडमी, एडमिशन 24 की सेवाओं का उपभोग करने वालों की संख्या निरंतर तेज गति से बढ़ रही है। इन माध्यमों से एक ओर विद्यार्थियों को कक्षा 1 से लेकर विश्वविद्यालय स्तर के विभिन्न पाठ्यक्रम का अध्ययन कराया जा रहा है तो दूसरी ओर मेडिकल व अभियांत्रिकी में प्रवेश परीक्षा के लिए भी अध्ययन सुविधा उपलब्ध करवायी जा रही है। बैंक, एसएससी, संघ लोक सेवा आयोग व विभिन्न लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित होने वाली भर्ती परीक्षाओं को तैयारी कई संस्थान ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध करवा रहे हैं।

इस प्लेटफॉर्म का एक आर्थिक पक्ष भी है। इस शिक्षा मॉडल से देश के हजारों शिक्षक रोजगार प्राप्त कर रहे हैं। शिक्षकों को तकनीकी जानकारी की प्राप्ति के साथ दक्षता संवर्धन का लाभ भी मिल रहा है। इस प्रकार शिक्षण गतिविधियों के साथ आर्थिक गतिविधियों को भी बढ़ावा मिल रहा है। मात्र निर्जी क्षेत्र में ही नहीं सरकारी क्षेत्र में भी डिजिटल शिक्षा की ओर कदम बढ़ाए जा रहे हैं। राजस्थान सरकार द्वारा स्कूलों शिक्षा में प्रोजेक्ट "Smile" का उत्तम क्रियान्वयन किया जा रहा है। इस प्रोजेक्ट स्माइल के तहत विभिन्न राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक प्रतिदिन कक्षा 1 से 12 तक को कक्षाओं हेतु ई-कॉन्टेंट और वीडियो लेक्चर प्राप्त 9:00 बजे विभिन्न क्लासरूम ग्रुप के माध्यम से विद्यार्थियों तक पहुंचाते हैं। राजस्थान राज्य शैक्षणिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान (एस.आई.ई.आर.टी.) उदयपुर उक्त कार्य हेतु तकनीकी सहायता प्रदान कर रहा है। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भी राजस्थान सरकार द्वारा विभिन्न सह व सहायक आचार्य को ऑनलाइन वर्करांप द्वारा ई-कॉन्टेंट तैयार करने का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। हजारों सह/सहायक आचार्य ई-कॉन्टेंट और वीडियो लेक्चर कॉलेज के यूट्यूब चैनल के माध्यम से छात्र-छात्राओं तक पहुंचा रहे हैं। इस पद्धति से अक्टूबर 2020 तक सत्र 2020-21 का स्नातक स्तर का एक तिहाई पाठ्यक्रम महाविद्यालयों में पूरा करवाया जा चुका है। इसके अतिरिक्त आयुक्तालय शिक्षा द्वारा 'ज्ञान युवा' नामक विशेष कार्यक्रम चलाया गया है। इसमें विभिन्न विशेषज्ञ शिक्षकों द्वारा विद्यार्थी हित में प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी में मदद के लिए उच्च श्रेणी के वीडियो लेक्चर प्रस्तुत किए जाते हैं। गुणवत्तापूर्ण व गुणवत्तापूर्ण

के माध्यम से विद्यार्थियों को ऑनलाइन असाइनमेंट देकर आंतरिक मूल्यांकन भी किया जा सकता है। यह आंतरिक मूल्यांकन अति महत्वपूर्ण इस तथ्य के साथ जो जाता है कि यदि जगले सत्र तक भी कोरोना का कहर जारी रहे तो विद्यार्थियों की परीक्षा किस प्रकार करायाई जाएगी। उनके अध्ययन का परीक्षण व अंकन किस भाँति होगा। इस यथ प्रश्न का जवाब एक ही है यह है डिजिटल आंतरिक मूल्यांकन। इस प्रकार आंतरिक मूल्यांकन के आधार पर वार्षिक परीक्षा न होने पर भी अंक तारिकका जारी की जा सकती है। छात्रों को प्रमोट किया जा सकता है। इस प्रकार कोरोना ने शिक्षा की रेल को डिजिटल पटरों पर डाल दिया है तथा शिक्षा की ट्रेन तेज गति से अपने गंतव्य भाग रही है। हमें शिक्षा को नवाचारों को फेंद प्रदान की है।

### रसायन के क्षेत्र में नवाचार

कोरोना महामारी सीधे ही मानव रसायन से जुड़ी है। सामाजिक दूरी बनाने हुए कोरोना के इलाज के साथ अन्य रोगों के निदान व चिकित्सा हेतु नवाचारों प्रयास हो रहे हैं। टेलोमीडिसिन की अवधारणा पर कई वर्षों से चर्चा चल रही है। आम भारतीय टेलोमीडिसिन के बजाय प्रत्यक्ष चिकित्सकीय परामर्श में अधिक विप्रवास रखते हैं। अतः टेलोमीडिसिन को इतना बढ़ावा नहीं मिला परंतु कोरोना के कारण यह एक जल्दतर के रूप में उभर कर सामने आई है। टेलोमीडिसिन प्रणाली द्वारा चिकित्सक अपने घर या अस्पताल से ही जूम या क्लासरूम वीडियो कॉल के माध्यम से रोगी से चर्चा करता है। वह ई-मेल के द्वारा प्राप्त विभिन्न रिपोर्ट के अध्ययन के आधार पर रोगी की समस्या का निदान व उपचार करते हैं। अणुलोक अहमदाबाद द्वारा 24x7 अणुलो नामक एप विकसित किया गया है व टेलोमीडिसिन सुविधा उपलब्ध करवा रहा है। इसी तर्ज पर अन्य कई अस्पताल व चिकित्सक इस प्रकार के तंत्र विकसित कर चुके हैं। यह तकनीक भारतीय भौगोलिक संरचना के हिसाब से भी बेहतर है। भारत को 70 प्रतिशत आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। ग्रामीण, दूरस्थ, छोटे शहर कस्बों में बहुत अच्छी चिकित्सा चिकित्सा सुविधा नहीं है। घर बैठे आवागमन के शारीरिक कष्ट व वित्तिय भार को उदाय विना चिकित्सा सेवा प्राप्त कर सकते हैं। कोरोना काल में विभिन्न सामाजिक संस्थानों द्वारा रक्तदान शिविर लगाए गए ताकि अस्पताल में रक्त की कमी ना हो। गल कई वर्षों से प्लाज्मा धरेपी पर भी बात हो रही है परंतु कोरोना रोगी हेतु प्लाज्मा धरेपी संजोवनों साबित हो रही है। कोरोना के कारण प्लाज्मा धरेपी चिकित्सा क्षेत्र में स्थापित हो चुकी है। भारत में आईआईटी संस्थान ऐसे उपकरण विकसित करने में लगे हैं जो कोरोना प्रोटोकॉल का पालन करते हुए रोगी को राहत व चिकित्सा चिकित्सा पहुंचाने में मदद कर सकें। डिजिटल स्टेशोस्कोपी - आई.आई.टी. मुंबई द्वारा विकसित किया गया है। यह दूर से ही रोगी की हार्टबीट सुनकर रिकॉर्ड कर सकता है तथा ब्लूटूथ के जरिए चिकित्सक तक पहुंचाए जा सकते हैं। जीवन लाइव - आई.आई.टी. हैदराबाद के सेंटर फॉर हेल्थ केयर इंटरप्योरशिप में संचालित एक स्टार्टअप के द्वारा पोर्टेबल वेंटिलेटर बनाया गया है, जिससे जीवन लाइव नाम दिया गया है। यह जीवन लाइव अन्य सामान्य वेंटिलेटर के मुकाबले काफी सस्ता है तथा मुश्किल परिस्थितियों में बहुत उपयोगी है।

**चमठा संदेश** चमठा लाल महाविद्यालय, लंडौरा जलापढ हरिद्वार

**एटी कोविड मेट** - केरल स्टेट कर्वाधार कॉरपोरेशन ने विशेष प्रकार की मेट तैयार की है। यह मेट नायिल के रेशों से बनी होती है। इसके उपयोग से जूते और चप्पलों के द्वारा कोरोना घर में प्रवेश नहीं कर पाता है। इस मंच में सेनिटाइजेशन की सुविधा है। इस नवाचार के कारण न केवल कोरोना से बचाव हो रहा है, अपितु केरल राज्य को आर्थिक लाभ भी मिल रहा है।

**ब्रेथ एनालाइजर ट्रांजिस्टर** - भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर ने ग्रीन इलेक्ट्रॉनिक्स को बढ़ावा देते हुए जिलेटिन युक्त बायोडिग्रेडेबल ट्रांजिस्टर बनाया है, जो ब्रेथ एनालाइजर के तौर पर काम करता है। जिलेटिन नमी के प्रति अधिक संवेदनशील होती है। ट्रांजिस्टर को नाक के पास ले जाने मात्र से वह Real Time 'olu दर बता देता है। आईआईटी जोधपुर के फर्लैक्सिबल लार्ज एरिया माइक्रो इलेक्ट्रॉनिक्स ग्रुप की ओर से यह डिवाइस विकसित किया है जिसको कीमत मात्र सेनेटाइजर टूंक - आई.आई.टी. रोपड द्वारा एक बॉक्स विकसित किया है निर्मित है। बाजार या 500 रूपये है। यह अल्ट्रावायलेट जर्माइडीकाल इंस्ट्रीएक्शन तकनीक से निर्मित है। बाजार या बाहर से आने वाली वस्तु को इसमें 30 मिनट तक रखा जाए तो इसे सेनेटाइज कर दिया जाता है।

**चक्र डी कोवा** - आई.आई.टी. दिल्ली के विद्यार्थियों द्वारा बनाया गया था। इसके द्वारा कोरोना राज्य मंत्री श्री अश्विनी कुमार चौबे द्वारा इसका शुभारंभ किया गया था। इसके द्वारा कोरोना की जंग में सुरक्षा कवच की भूमिका में रहे N-95 मास्क को 10 बार पुनः उपयोग में लिए जाने योग्य बनाया जाता है। कोरोना काल में मास्क की अनिवार्यता सर्वाधिकृत है। मास्क में सर्वाधिक सुरक्षित N-95 को माना जाता है। यही कारण है कि आम नागरिकों के बीच N-95 की मांग है, साथ ही सरकार द्वारा भी डॉक्टर नर्स व सभी मेडिकल स्टाफ को उपलब्ध करवाया जाता है। उपयोग के पश्चात इसके निस्कारण की समस्या रहती है क्योंकि इस्तेमाल किए गए मास्क को गलत जगह डाल देने से संक्रमण का खतरा बढ़ जाता है। इस यंत्र में उपयोग किए गए मास्क को 90 मिनट तक रखना होता है। कैंबिनेट के आकार के इस यंत्र में ओजोन कण मास्क को छिद्रों में प्रवेश कर सेनेटाइज कर पुनः उपयोग लायक बना देते हैं। एक साथ 20 मास्क सेनीटाइज किए जा सकते हैं तथा 10 बार एक मास्क का उपयोग किया जा सकता है। इस प्रकार चक्र डी कोवा ने दोहरा लाभ प्रदान किया है एक तो यह N-95 मास्क इधर उधर डाले जाने से फैलने वाले संक्रमण का खतरा समाप्त हुआ है वहीं दूसरी ओर N-95 बनाने में लगने वाला आर्थिक भार कम हुआ है व उपलब्धता में इजाफा हुआ है।

**आरोप्य सेतु** - कोरोना से बचाव हेतु सरकार द्वारा सभी को आरोप्य सेतु एप अपने मोबाइल में रखने हेतु भरपूर प्रयास किया गया था। यह ऐप कोरोना रोगी से आप के संपर्क के बारे में सूचित करता है। कोविड प्रोटोकॉल तथा केंद्रीय व विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा जारी गाइडलाइन में एप डाउनलोड करने के विशेष निर्देश दिए गए थे। नीति आयोग के तत्कालीन सीईओ अमिताभ कांत द्वारा जारी सूचना के अनुसार दस करोड़ से ज्यादा लोग इसे डाउनलोड कर चुके हैं।

इस प्रकार सैकड़ों नवाचार सामने आए जो कोरोना आपदा के द्वारा प्रदत्त अवसर के रूप में देखे जा सकते हैं। डब्ल्यूएचओ ने एक सर्वे के आधार पर कहा कि कोरोना संकट में उत्पन्न लॉकडाउन, आइसोलेशन, सोशल डिस्टेंसिंग जैसे शब्दों ने चिंता व डिप्रेषन को बन्दबा

दिया है। जिससे मानसिक समस्या भी पैदा हो रही है। ऐसे में भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग रहे योग-प्राणायाम जैसी पुरातन विधियों की तरफ पूरी दुनिया के लोग तेजी से आकर्षित हुए हैं। भारतीयों में मानसिक स्वास्थ्य यानी मेंटल हेल्थ के प्रति सकारात्मक रुझान उबर रहे हैं। कोरोना पूर्व काल में मानसिक स्वास्थ्य अथवा क्लीनिकल साइकलोजिकल सर्विसेज भारतीय हेतु ध्यान आकर्षित करने योग्य शब्द नहीं थे परंतु वर्तमान परिस्थितियों में लोग इन्हें गंभीरता से ले रहे हैं। कोरोना के कारण लोगों को शरीर को स्वस्थ रखने हेतु प्रयासरत रहने, स्वच्छता के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण और अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमता के परीक्षण व सुदृढ़ता के लिए गंभीर रहने की नव प्रवृत्ति विकसित हुई है। सार्स जैसी महामारी झेल चुके देशों की तर्ज पर भारतीयों में मास्क पहनने का प्रचलन विकसित हुआ है। जिससे वह ना केवल कोरोना से बचाव कर रहे हैं अपितु अन्य बीमारियों से भी सुरक्षा प्राप्त हो रही है। भारतीयों में स्वास्थ्य ही बखला के प्रति विकसित नव चिंतन के कारण भारतीय बाजार में एक ऑक्सोमीटर एवं धर्मल स्कैनर जैसे उपकरण की बिक्री कई गुना बढ़ गई है। विटामिन-सी के कई प्रसिद्ध ब्रांड की दवा बाजार में बहुत कठिनाई से मिल पा रही है क्योंकि इनकी मांग इनकी आपूर्ति से ज्यादा है। मेडिकल टेस्ट के प्रति स्वप्रेरणा का विकास हुआ है।

### व्यापार एवं उद्योग क्षेत्र में नवाचार

व्यापार में नए विचारों का सदैव स्वागत होता रहा है। कोरोना का देश में सर्वाधिक कुप्रभाव व्यापार क्षेत्र पर ही पड़ा है। व्यापार की कमर तोड़ देने वाली महामारी से व्यापारियों व व्यापारिक कंपनियों युद्धरत रहते हुए व्यापार के नए तरीके इस्तेमाल कर रही हैं। **होम डिलीवरी** - स्थानीय दुकानों पर किराना आदि के सामान की होम डिलीवरी की सुविधा मुहैया करवाई जाने लगी है ताकि मॉल व दुकानों पर भीड़ एकत्रित ना हो सके। ग्राहक भी सुगम तरीके से घर बैठे सामान प्राप्त कर सकें। इस प्रकार कोरोना के कारण होम डिलीवरी का प्रचलन अत्यधिक विकसित हुआ है।

**शॉपिंग पार्टी** - कोरोना के प्रभाव के कारण स्क्वायड शॉपिंग पार्टी जैसे शब्द चर्चा में है। इस प्रकार की शॉपिंग में व्यक्ति स्वयं तो ऑनलाइन शॉपिंग वेबसाइट या एप्लीकेशन पर जाकर कोई चीज पसंद कर ही सकता है साथ ही अपनी मित्रों को जोड़कर वस्तु से संबंधित चर्चा भी कर सकता है। जैसे किसी व्यक्ति को शर्ट लेनी है पर वह अपने लिए शर्ट का चयन नहीं कर पा रहा है तो वह अपने दोस्तों के साथ जोड़ सकता है तथा शर्ट के कलर डिजाइन पर चर्चा कर सकता है। यह सुविधा दुकान या मॉल में जाकर वस्तु क्रय करने जैसा भाव देती है।

**ऑनलाइन पेमेंट** - कोरोना वायरस से बचाव हेतु ऑनलाइन पेमेंट का मॉडल पूरी तरह प्रचलन में आ चुका है। स्थानीय दुकानों व सब्जी तथा टैले वाले भी वस्तु और सेवा का भुगतान पेटीएम, फोन-पे, गूगल-पे के माध्यम से प्राप्त कर रहे हैं। इस पेमेंट प्रणाली से एक और कोरोना से रक्षा हो रही है वहीं दूसरी तरफ लेन-देन में पारदर्शिता आ रही है। एटीएम पर पड़ने वाले दबाव में कमी देखने को मिली है। खुले ऐसे जैसी व्यवहारिक समस्याओं का भी समाधान हुआ है।



कोरोना के नकारात्मक प्रभाव के कारण व्यापारिक हानि देखी गई है परंतु कई क्षेत्रों में लाभ की स्थिति भी बनी है। शिक्षा की वार्षिक स्थिति बताने वाली ASER की रिपोर्ट के अनुसार देश के ग्रामीण परिवारों में से मार्च 2020 के बाद स्कूल व कॉलेज बंद हो जाने के कारण बच्चों की शिक्षा को जारी रखने हेतु नए मोबाईल खरीदे। महाराष्ट्र, गुजरात, मध्य प्रदेश, हिमाचल स्मार्टफोन यूजर्स परिवार वाले बच्चों के अनुपात में 30 प्रतिशत वृद्धि हुई है। त्योहारी मौसम व कोरोना से सुरक्षा के चलते ऑटोमोबाइल क्षेत्र में बूम आया है। सोसाइटी ऑफ इंडियन ऑटोमोबाइल मैनुफैक्चरर्स के मुताबिक सितंबर 2019 से सितंबर 2020 में 26.5 प्रतिशत पैसेंजर गाड़िया ज्यादा बिकी है। जुलाई से सितंबर 2020 के बीच कारों की बिक्री में 16 प्रतिशत बढ़ोतरी हुई है। विशेषज्ञों के अनुसार कोरोना के कारण ट्रेन, मेट्रो, पब्लिक ट्रांसपोर्ट या तो बंद रहे या बहुत कम चल रहे हैं, दूसरी ओर कोरोना से सुरक्षा के चलते लोग सार्वजनिक वाहनों के बजाय व्यक्तिगत साधनों से आवागमन को प्राथमिकता दे रहे हैं। इन कारणों से दुपहिया व चार पहिया वाहनों की बिक्री में तेजी आई है। ट्रैक्टर की बिक्री में भी बढ़ोतरी देखी गई है। अर्थशास्त्रियों के अनुसार खरीफ की अच्छी फसल व लॉकडाउन में मजदूरों की कम उपलब्धता के कारण सक्षम किसान ट्रैक्टर क्रय कर रहे हैं।

उद्योग व उत्पादन क्षेत्र में सरकारी पहल पर कई नवाचार देखे जा रहे हैं। प्रधानमंत्री ने वोकल फॉर लोकल के नारे के साथ स्वदेशी वस्तुओं के महत्व को स्थापित करने का प्रयास किया है। स्वदेशी उत्पादन हेतु कई स्टार्टअप उबर रहे हैं। आत्मनिर्भर भारत अभियान का प्रारंभ हो चुका है। शिक्षा, स्वास्थ्य, तकनीकी, कृषि, पशुपालन, मनोरंजन सूचना व प्रौद्योगिकी, व्यापार उद्योग समेत अनेक क्षेत्रों में नवाचार के अंकुर प्रस्फुटित हो रहे हैं। इस प्रकार कोरोना के उजले पक्ष के रूप में मानव की विपत्तियों के साथ अनुकूलन कर अपने विवेक से उस पर नियंत्रण स्थापित करने की क्षमता उजागर हुई है। अतः कोरोना काल को आपदा में अवसर रूप में देख सकते हैं।

### स्रोत

1. राजस्थान पत्रिका, अंक 11 नवम्बर, 2020
2. दूबे प्रियंका आलेख बीबीसी
3. नवभारत टाइम्स, अंक 11 जुलाई, 2020
4. नील राजपूत, जागरण, अंक 17 मई, 2020
5. राजस्थान पत्रिका, अंक 29 अक्टूबर, 2020

## कोरोना महामारी - एक गंभीर चुनौती

जसवन्त सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग  
नार्थ इण्डिया कॉलेज, नजीबाबाद

आज संपूर्ण विश्व कोरोना महामारी से बुरी तरह ग्रसित है। सारी दुनिया को इस महामारी ने अपनी चपेट में ले लिया है। कोरोना वायरस के आज के रूप को नोबेल कोरोना वायरस के नाम से जाना जाता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोरोना वायरस को महामारी घोषित कर दिया है। कोरोना वायरस बहुत सूक्ष्म लेकिन घातक वायरस है। कोरोना वायरस मानव के बाल की तुलना में 900 गुना छोटा है, लेकिन कोरोना का संक्रमण दुनियाभर में तेजी से फैल रहा है। भारत में भी इस महामारी ने तेजी से पांव पसारे हैं। इस बीमारी ने दुनिया भर में कई लाख लोगों की जान ले ली। कोरोना वायरस का संबंध वायरस के एक ऐसे परिवार से होता है जिसके संक्रमण में जुखाम से लेकर सांस लेने तक में तकलीफ जैसी समस्याएं देखने को मिलती हैं। जैसे-जैसे कोरोना वायरस पूरी तरह से फैला, इसके लक्षणों में भी बदलाव देखने को मिला। वास्तविकता में इसके क्या लक्षण हो सकते हैं, इसका सही अनुमान लगाना भी बहुत कठिन हो गया है। इस बीमारी ने सारी दुनिया के रहन-सहन, खान-पान तथा जीवन शैली को बिल्कुल बदल दिया है। कोविड-19 का खतरा वैसे तो हर नागरिक के लिए है लेकिन बुजुर्ग तथा जो लोग किसी गंभीर बीमारी से ग्रसित हैं उनको कोरोना वायरस के संक्रमण का खतरा सबसे अधिक रहता है। कोरोना वायरस एक बहुत ही सूक्ष्म किंतु प्रभावी वायरस है। ऐसी स्थिति में हमारे मस्तिष्क में बार-बार यह प्रश्न आता है कि इस वायरस की उत्पत्ति कैसे हुई होगी? इस प्रश्न के उत्तर में विशेषज्ञों का कहना है कि यह वायरस जानवरों से इंसान में आया है। चीन में चमगादड़ जैसे जीवों को बहुत चाव से खाया जाता है। कोविड-19 महामारी ने सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक सभी क्षेत्रों को बुरी तरह से प्रभावित किया। कोरोना वायरस ने संपूर्ण मानव जाति को अपने शिकंजे में कस लिया है। हमारे देश के प्रत्येक नागरिक को अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए कि कोरोना वायरस को हल्के में लेना बहुत ही खतरनाक हो सकता है। भारत में कोरोना के गहरे खतरे ने विश्व की पूरी मानव जाति को संकट में डाल दिया है, लेकिन मन में यह भ्रान्ति लाना भी बहुत गलत है कि कोरोना वायरस से मौत निश्चित है। अभी तक के आंकड़े देखें तो पता चलता है कि कोरोना वायरस के संक्रमण के बाद भी हजारों मरीज ठीक हुए हैं इसमें कोई संदेह नहीं है। कोरोना वायरस ने दुनिया भर में जो हाहाकार मचाया है उसके खतरनाक परिणाम को देखकर ऐसा लगता है कि आखिर धरती पर मानव का क्या अस्तित्व रहेगा। यह वायरस मानव पर

कहर बनकर दूट पड़ा है। वैश्विक संकट से जूझ रही हमारी पीढ़ी का यह सबसे बड़ा संकट है। मनुष्य स्वयं को ब्रह्मांड का सर्वाधिक शक्तिशाली प्राणी मानता रहा था किंतु वर्तमान स्थिति ने मनुष्य के इस भ्रम को उसके मस्तिष्क से निकाल दिया है। इस भयानक बीमारी के सामने सारे देश ने अपने घुटने टेक दिए हैं। कोरोना वायरस के कारण मानव जीवन की आदतें और हमारी दिनचर्या काफी हद तक बदल गई है। हमारे खान-पान और तौर-तरीकों से लेकर हमारी कार्यशैली तक बदल गई है।

कोविड-19 की इस चुनौती का एकजुटता से सामना करने में हमें अपनी विविधता एकता के भाव को बनाए रखना होगा। परस्पर निर्भरता के भाव को समझकर हम अपनी शक्ति का बेहतर लाभ उठा सकते हैं। इस आपदा से हमें यह सबक अवश्य लेना चाहिए कि भविष्य में ऐसे किसी संकट से बचाव के लिए दीर्घकालिक नीतियां और कार्यक्रम बना जाएं। यह लड़ाई प्रत्येक व्यक्ति की है और इसका श्रेय भी उन सभी को जाता है जो सामूहिक लक्ष्य को प्राप्त के लिए छोटे-बड़े त्याग कर अपना दायित्व निभा रहे हैं। दुनियाभर के सामे अगर कोरोना वायरस सबसे गंभीर समस्या बनकर उभरा है तो ये वैज्ञानिकों के लिए भी चुनौती बन गया है। ये बड़ा सवाल है कि वैज्ञानिक उसको कैसे काबू में कर पाते हैं।

पूरी दुनिया अभी कोविड-19 महामारी को फैलने से रोकने में लगी हुई है। इससे बच का फिलहाल एकमात्र उपाय है कि एक-दूसरे से दूरी बनाए रखें। सोशल डिस्टेंसिंग के लिए हमारे देश ने लॉकडाउन का सहारा लिया था।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार कोरोना वायरस बीमारी संक्रमित व्यक्ति के खांसने और छींकने से निकले धूक के बेहद चारोंक कण हवा में फैल जाते हैं। इन कणों में कोरोना वायरस के विषाणु होते हैं। संक्रमित व्यक्ति के नजदीक जाने पर ये विषाणु युक्त कण सांस के रास्ते आपके शरीर में प्रवेश कर सकते हैं। इंसान के शरीर में फेफड़े से ऑक्सीजन शरीर में पहुंचाने हेतु है जबकि कार्बन डायऑक्साइड शरीर के बाहर निकलता है। लेकिन कोरोना के बना छोटे-छोटे एयरसेक में पानी जमने लगता है और इस कारण आपको सांस लेने में तकलीब होती है और आप लंबी सांस नहीं ले पाते। ऐसे में मरीज को वेंटिलेटर की जरूरत पड़ती है कई बार इस बात को लेकर गंभीरता से न लेने पर मौत भी हो सकती है। कोविड 19 के बा में जिस एक बात को लेकर वैज्ञानिकों की चिंताएं बढ़ गई हैं, वो है व्यक्ति के ठीक होने के बाद दोबारा संक्रमित होने के बीच का कम समय। हम ये जानते हैं कि अलग-अलग बीमारियां व खिलाफ शरीर की रोग प्रतिरोधक शक्ति अलग-अलग तरह से काम करती हैं।

कोविड-19 एक नया वायरस है और वैज्ञानिक फिलहाल इसके व्यवहार को समझने के कोशिश में लगे हैं। वो इसे समझने में व्यस्त हैं कि कोरोना वायरस इतनी जल्दी कैसे फिर र लौट आता है मॉड्रिड के कार्लोस हेल्थ इंस्टीट्यूट में चर्चें शोधकर्ता काम कर रहे इजिप्ट में माटिनेज कहते हैं कि कोरोना वायरस का फिर से उसी व्यक्ति में लौटना कोई नई बात नहीं लेकिन कोविड 19 के मामले में ये काम बत में हो रहा है।

(37 डिग्री सेल्सियस) है, लेकिन हम सभी वास्तव में दिन के दौरान काफी ऊपर और नीचे जाते हैं, जितना कि एक डिग्री या आधा डिग्री। इसलिए 99.0 और 99.5 डिग्री परनाइट को बुखार नहीं कहा जा सकता है। यह तनाव के कारण भी हो सकता है, जब आप बुखार को चेक कर रहे हैं, तो सुबह के बजाय दोपहर और शाम को नापें।

कोरोना वायरस का अगला लक्षण कफ है। लेकिन नश्वरत खांसी नहीं कोरोना वायरस से संक्रमित व्यक्ति को गले में खराश और सूखी खांसी आती है। इंडिया के डॉ. अशुतोष वाणुंय ने कोरोना वायरस के लक्षण के बारे में बताया। उनके अनुसार अगर किसी व्यक्ति को सूखी खांसी और तेज बुखार है तो उसे एक बार जरूर जांच करानी चाहिए। कोरोना वायरस की रिजायत होने के 5 दिन के अंदर उस व्यक्ति को सांस लेने में समस्या हो सकती है। कई रिपोर्टें हैं कि सांस लेने की समस्या फेफड़ों में बलगम फैलने के कारण होती है। बिस्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार कोरोना वायरस के लक्षण की समस्या के अलावा प्यू और कोल्ड को जैसे भी लक्षण नजर आते हैं।

जर्मनी के एक्सपर्ट ने कोरोना वायरस के नए लक्षण बताए हैं। यह लक्षण 66 प्रतिशत लोगों में देखे गए हैं। इसके अनुसार कोरोना से संक्रमित लोगों को सूंघने और स्वाद की क्षमता में भी असर पड़ता है। इसके अलावा 30 प्रतिशत लोगों को डायरिया और उर्ती के भी लक्षण देखे गए हैं।

क्रॉना वायरस के लक्षणों के बारे में किंग्स कॉलेज लंदन की डॉक्टर नैटली मैक्डरमॉट कहती हैं, "वायरस के कारण रंग प्रतिरोधक तंत्र का संतुलन बिगड़ता है और सूजन दिखने शुरू हो जाती है। हम अब तक ये नहीं जान पाए कि वायरस कैसे ये काम करता है।"

#### मृत्यु दर:

- 9 साल तक के बच्चों में 0 फीसदी मृत्यु दर
- 10-39 वर्ष तक के लोगों में 0.2 फीसदी मृत्यु दर
- 40-49 वर्ष तक के लोगों में 0.4 फीसदी
- 50-59 वर्ष तक के लोगों में 1.3 फीसदी
- 60-69 वर्ष तक के लोगों में 3.6 फीसदी
- 60-69 वर्ष तक के लोगों में 3.6 फीसदी
- 70-79 वर्ष तक के लोगों में 8 फीसदी
- 80 से ज्यादा वर्ष के लोगों में 14.8 फीसदी

ये आंकड़े समझे जाएं तो स्पष्ट होता है कि बढ़ती उम्र, कम होती इम्युनिटी और पहले से गर्भर योग्यता में जुड़ा रहे लोगों पर कोरोना वायरस ज्यादा असर करता है। कोरोना वायरस की वजह से कारोबार टप हो गए हैं। कई देशों में अंतर्राष्ट्रीय यात्राएं रद्द कर दी गई हैं। होटल-रेस्टोरेंट बंद कर दिए गए हैं। आई टी सेक्टर की कंपनियां समेत कई सेक्टरों में काम करने वालों को वर्क फ्रॉम होम यानी घर से काम करने की सुविधा दे दी गई है। अब कोरोना वायरस के फैलने के बाद से कंपनियां और कर्मचारी दोनों ही सतर्क हो गए हैं। अब एंसे

परीश्रमियों में बहुत आघातक कार्य होने पर ही हम घर से बाहर जाने का कार्यक्रम रखते हैं। बाहर जाने के बाद योग्य डिस्टेंसिंग का पालन करना भी बहुत आघातक हो गया है, मास्क पहनना तो अनिवार्य या हो गया है।

कोरोना वायरस से आने वाली पीढ़ी भी प्रभावित रहेगी। कई देशों की महान चिकित्सा प्रणाली कोरोना की वैक्सीन बनाने में जुड़ी हुई है। कुछ देशों ने वैक्सीन बना भी दी है लेकिन वैक्सीन आना ही कोरोना वायरस उन्मूलन नहीं होगा। कोरोना वायरस का जो प्रथम चरण के मरिटाक में आ गया है, उसका टपचार यद्यपि तक मिलना दुर्लभ है। यह मानव जाति के लिए अभी तक एक खतरा ही है। कोरोना वायरस की वैक्सीन बन जाना कोरोना वायरस का टपचार तो हो सकता है किंतु उसको जड़ से मिटाने के लिए हमें एक अंतर्राष्ट्रीय श्रीष्टियन चेतना होगा, हर मानव को एकजुट होकर कोरोना को हराने के लिए प्रयास करना होगा तथा अपनी तरफ से सराहनीय कदम उठाने ही होंगे।

चिकित्सकों का मानना है कि कोरोना वायरस से संक्रमित होकर स्वस्थ हुए मनुष्य का रक्वसन तंत्र अधिक कमजोर रहेगा और स्वास्थ्य से जुड़ी हुई अनेक बीमारियां होने का खतरा भी सदैव बना रहेगा। ग्रेटर नोएडा में कोरोना वायरस से संक्रमित होने के बाद टोक हुर यकेंग कुमार जी का कहना है कि मैं कोरोना से टोक होने के बाद सामान्य बीमारियों का परीक्षण करने के लिए जब चिकित्सक के पास गया तो उन्होंने बताया कि रक्वसन तंत्र से जुड़ी बीमारियां आपको जल्दी लगने की संभावना रहेगी। अतः इस बात से यह स्पष्ट कहा जा सकता है कि करोड़ों की संख्या में कोरोना वायरस से संक्रमित होने के बाद स्वस्थ हुए स्त्रो नुतर्वा ने रक्वसन तंत्र से जुड़ी बीमारियों के होने का खतरा सदैव बना रहेगा। कोरोना वायरस एक या दो वर्ष नहीं बल्कि दशकों तक चलने वाली एक लड़ाई रहेगी।

निष्कर्ष विश्व स्वास्थ्य संगठन से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर ही हमें कोरोना वायरस से बचाव के तरीके अपनाने होंगे। सरकार ने कोरोना वायरस से निपटने के लिए कई तरह की तैयारी की है। हम सबको किसी भी तरह की अफवाह से बचना है तथा खुद को सुरक्षा के लिए भारत सरकार के द्वारा जारी निर्देशों का पालन करना है जिससे कि कोरोना वायरस से पूरी तरह से निपटा जा सके।

#### संदर्भ सूची :

- 1- विश्व स्वास्थ्य संगठन
- 2- हिन्दुस्तान न्यूज
- 3- दैनिक जागरण
- 4- इंटरनेट पर उपलब्ध जानकारी
- 5- विभिन्न बेचिनार से मिली जानकारी के आधार पर।



विश्व को लॉकडाउन तक करना पड़ा। कोरोना वायरस का चीन के वुहान शहर और उसके बाद विश्व में बहुत तेजी से प्रसार हुआ है। धीरे-धीरे इस कोविड-19 ने वैश्विक महामारी के रूप में जगह बनाई। इस महामारी के कारण वैश्विक स्वास्थ्य संकट गहराता जा रहा है और अनेक लोगों के लिए लॉकडाउन एक नियम बना। विद्वानों का कहना है कि अगले डेढ़ से दो साल तक पूरी दुनिया किसी-न किसी रूप से कोविड-19 खतरे से जूझती रहेगी और इसके बाद भी पुनर्निर्माण और इसके स्थायी प्रभाव कई वर्षों तक महसूस किए जाते रहेंगे। इस महामारी के प्रभाव को इस तरह देखा जा सकता है कि दुनिया के कई हिस्सों में सीमाएं बंद हैं। हवाई अड्डे, होटल और व्यवसाय के साथ शैक्षणिक संस्थाएं बंद थीं और अभी भी कई संस्थाएं बंद हैं। इस भयावह महामारी ने विश्व की अर्थव्यवस्था को चरमरा दिया है। परिणामस्वरूप बड़े पैमाने पर लोगों की नौकरियां छूट गयीं, जबकि लोगों को रोजगार की तलाश सामान्य दिनों में भी होती है। हालांकि नौ माह बाद ये संस्थाएं धीरे-धीरे खुल रही हैं। अभी भी देश-विदेश की स्थिति चिंतनीय ही कही जा सकती है। इतिहास में कई ऐसी महामारियां आई हैं, जिसने कुछ-न-कुछ सीख अवश्य दी है। इन महामारियों ने नुकसान तो किया ही है, किन्तु इसने कुछ नया करने, नया सोचने के लिए एक दिशा भी दी है।

तिरुचिरापल्ली आई.आई.एम. के प्रो. दीपक कुमार श्रीवास्तव ने भी कहा है कि "कोविड-19 ने दुनिया को खासा प्रभावित किया है। इससे लोगों की मौतें हो रही हैं। उनके रोजगार खत्म हो रहे हैं और रोजमर्रा के जीवन में उन्हें मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। इन तमाम परेशानियों के बावजूद कोविड-19 के घने अधियारे में उम्मीद की किरण मौजूद है। यह संकट दरअसल विभिन्न क्षेत्रों में इनोवेशन, यानी नवाचार को बढ़ावा दे सकता है और बिल्कुल नए तरीके से सोचने वाला समाज गढ़ सकता है। उन्होंने माना है कि अतीत में भी महामारी ने नवाचार को गति देने का काम किया है और नए विचारों के साथ बदलाव को मुमकिन बनाया है। जैसे, 2002 में चीन और अन्य पूर्वी एशियाई देशों में फैले सर्स ने दुनिया को बदल दिया था। माना जाता है कि सर्स से वैश्विक अर्थव्यवस्था को अरबों डॉलर का नुकसान हुआ था, क्योंकि आज की तरह ही उन दिनों लोगों का घर से बाहर निकलना बंद कर दिया था, हालांकि उस संकट ने उन तमाम राष्ट्रों में इंटरनेट की पहुंच बढ़ा दी, जहां इसका नेटवर्क काफी कम था।"

**आत्महत्या एवं मानसिक समस्या:** कोरोना के खौफ के कारण आत्महत्याओं की घटनाओं को हमने इस दौरान पाया है। कोरोना की वजह से रोजगार न मिल पाने, जरूरतें पूर्ण न होने के कारण, तनाव में रहने के कारण 'आत्महत्या' हुई हैं। 'आत्महत्या' अर्थात् अपने शरीर की हत्या करना है, जिसको हम आत्मवध, आत्महनन, आत्मघात एवं स्ववध के नाम से भी जानते हैं। 'आत्मनो देहस्य हननम्' अर्थात् अपने देह का हनन करना ही 'आत्महत्या' है। 'आत्महत्या स्वेच्छा और जानकर अपने जीवन की लीला को समाप्त करना है। "ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी ऑफ फिलॉसफी" 'आत्महत्या' को उसके व्यापक अर्थ में सत्य या स्वधर्म के लिए प्राण त्याग

अध्यायन हेल्थ केयर वर्कर्स में पाया गया।

वर्तमान में मॅटल हेल्थ फॅसिलिटी पर सरकारों को विशेष ध्यान रखने की जरूरत है। कोविड-19 जैसे संकटों के दौर में सरकारों को चिकित्सा पर बजट न बढ़ाए जाने की आवश्यकता है। पत्रकार **प्रेम बहुखंडी** ने 'उत्तराखंड विमर्श' के तहत 'कोविड-19' एवं 'महामारी और आत्महत्या' आदि विषय पर विषय विशेषज्ञों का पैनल डिसकशन करवाया। उन्होंने उसमें कहा कि डबल्यू.एच.ओ. के 2015 की रिपोर्ट के आंकड़े तहत भारत में साढ़े 7 प्रतिशत लोग किसी न किसी मानसिक रोग से पीड़ित हैं। उन्होंने कहा कि कुल बीमारियों का 1/6 भाग मानसिक रोग है। उन्होंने यह जानकारी दी की पूरी दुनिया में अबसाद का 15 प्रतिशत भार केवल भारत में है और भारत में 2020 तक 20 प्रतिशत प्रतिशत आवादी मानसिक बीमारी भारत में ग्रस्त रहेगी। जिस तरह से अबसाद रोगियों की संख्या बढ़ रही है। ऐसे में हमारे यहां 4 हजार हेल्थ प्रोफेशनल्स ही हैं, जो नाकाफी हैं। करीब 10 लाख आवादी पर तीन साइक्रोट्रिस्ट हैं तथा इससे कम साइकोलॉजिस्ट हैं, जो पूरी आवादी के लिए नाकाफी हैं। सरकारों ने मॅटल हेल्थ का बजट घटा दिया गया है। पहले 50 करोड़ था अब वह घटकर 40 करोड़ कर दिया गया है। उन्होंने कहा कि कोविड की वजह से आत्महत्या की समस्या बढ़ी है, जो काफी चिंताजनक है।

कोविड-19 का खौफ पूरे विश्व में रहा है। इस दौरान आत्महत्याओं की संख्या हमें बढ़ती हुई दिखाई पड़ती है। उत्तराखंड में कोरोनाकाल में बढ़ती हुई आत्महत्या के संदर्भ में कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून की शिक्षिका **डॉ. अर्चना डिमरी** कहती हैं कि जनवरी से अप्रैल के मध्य में 187 लोगों ने आत्महत्याएं की हैं। पिछले वर्ष की अपेक्षा 20 प्रतिशत से अधिक लोगों ने आत्महत्याएं की हैं। मानसिक स्वास्थ्य पर भी संवेदनशील न होना भी इस समस्या को दुगुना कर रहा है। दून विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग की एसोसिएट प्रोफेसर **डॉ. सविता तिवारी**, मानसिक स्वास्थ्य को शारीरिक स्वास्थ्य के समान जरूरी मानती हैं। जब हमारे व्यवहार, भावनाओं आदि में कोई अस्थिरता आ जाती है तो मानसिक स्वास्थ्य में विकार आ जाता है और आत्महत्या के तौर पर हम इस समस्या को देखते हैं। व्यक्ति अपने को समाज से अलग पा रहा है। इसलिए भी आत्महत्याएं बढ़ी हैं। समाज से जब व्यक्ति अपने को अलग महसूस करे तो तब आत्मघाती निर्णय लेने को मजबूर होता है।

हिमालयन इंस्टीट्यूट हॉस्पिटल एंड मेडिकल कॉलेज, देहरादून की एसोसिएट प्रोफेसर **डॉ. मालिनी श्रीवास्तव** कहती हैं कि 'आत्महत्या एक सामाजिक बीमारी है। आत्महत्या के कई कारण होते हैं।' अबसाद एक कारण हो सकता है। वे मानती हैं कि कहीं-न-कहीं सामाजिक दूरी होने से भी अबसाद को बढ़ावा मिल रहा है। बच्चे, बड़े व बूढ़े जब समाज से कटा हुआ महसूस कर रहे होते हैं तो वे आत्महत्या कर लेते हैं। सामाजिक रूप से अगर असुरक्षा, अकेलापन महसूस हो रहा है तो यह महत्वपूर्ण है। यू.पी. में चौपाल होती थी, वह संचार के लिए वह महत्वपूर्ण होती थी। आज वे चौपालें, बोलचाल बंद हो रही हैं। जिस कारण ऐसी भयावह स्थितियां उत्पन्न हुई हैं। चौपालों और एक दूसरे से बोलचाल से तनाव को झेलने

की क्षमता बढ़ जाती है। आज कोरोनाकाल में लोगों को खाने-दवाई की पूर्ति तो हो रही है, क्मी संचार बूध फिर प्रारम्भ नहीं किए जाने चाहिए? वह इस बात को प्रमुखता से उठाती हैं। विदेशों में कोविड-19 महामारी से उत्पन्न तनाव को दूर करने के लिए संचार बूध को बढ़ावा दिया है। ऐसे में हमें भी ऐसे ही बूध स्थापित करने की जरूरत है। व्हाट्सएप में इस दौर में जोक भी पड़े हैं। इसको बढ़ावा दिया जाना चाहिए, क्योंकि इनको पढ़कर लोगों का तनाव कम होता है। लोग खुश रहते हैं। वह कहती हैं कि जब लोग अलग-अलग पड़ जाते हैं तो तब सुसाइड करने हैं। इसको रोकने का उपाय है। हम आपस में बातचीत करें। हम आपस में संचार स्टेबलिय करें। यह अति आवश्यक है। चाहे वह छोटे स्तर पर हो या बड़े स्तर पर। लेकिन इसे किया जाना चाहिए।

कोरोना से सीख लेने की आवश्यकता है। उसने हमें बहुत कुछ सिखाया है। इस संदर्भ में राजकीय दून मेडिकल कॉलेज देहरादून के एनाटॉमी और कंसलटेंट साइकोट्रिस्ट विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. महेंद्र कुमार पंत कहते हैं कि आत्महत्या, कोविड-19 से पूर्व व परचात एक से रहे हैं। पहले भी थे और आज भी हैं। कोविड को हमें शिक्षक रूप में लेना चाहिए। उसने हमें कई चीजों के बारे में सिखाया है। पहले हम रेस्टोरेंट में जाते थे, पार्टी, मॉल में जाकर सामान लेते थे। अनावश्यक खर्च बढ़ने के साथ स्वास्थ्य में विकार पैदा होता था। अब बच रहा है। अब लोग स्वास्थ्य के प्रति चिंतित हैं। 'आत्महत्या' के संदर्भ में वह कहते हैं कि आत्महत्या के लिए घर का वातावरण महत्वपूर्ण होती है। परिवार सबसे प्रमुख बात है। आज लगभग सभी मां-बाप कामकाजी हैं। बकिंग ऑवर में बच्चों को वह समय नहीं दे पाते हैं। जबकि वास्तव में बच्चे को समय दिया जाना चाहिए। समय न देने से बच्चे विपरीत दिशा में बढ़ रहे हैं। उन्होंने अभिभावकों को डाइनिंग टेबल कम्युनिकेशन करने का सुझाव दिया है। डाइनिंग टेबल में मां-बाप अपने बच्चों से बात करें, उनके सुख-दुःख, प्लान के बारे में जानें। इससे बच्चों में आत्महत्याएं कम होंगी। उन्होंने कहा कि पहले नैतिक शिक्षा का पाठ पढ़ाया जाता था, जिसमें महापुरुषों की जीवनियां पढ़कर संदेश मिलता है। आज अभिभावक, शिक्षकों द्वारा उन प्रेरक प्रसंगों, जीवनिचों, व कहानियों का संचार नहीं हो रहा है। ऐसा न किये जाने से धीरे-धीरे बच्चा दिशाहीन हो जाता है।

एक पैनल डिस्कशन में समाजशास्त्री और एच.एन.बी. गाढ़वाल विश्वविद्यालय के पूर्व संकायाध्यक्ष समाजशास्त्र विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. जे. पी. पचौरी, 'आत्महत्या' पर बात रखते हुए सामाजिक फंक्टर बहुत महत्वपूर्ण मानते हैं। वह आत्महत्या को सामाजिक कारक मानते हैं। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि 'कोविड-19 आया है, जो अभी रहेगा। अभी स्थितियां और अधिक विकराल हो रही हैं और होंगी भी। ऐसे में सुसाइड के केस भी बढ़ेंगे। इन्हें रोकने के लिए लोगों का सोशल सपोर्ट जरूरी है। वह कहते हैं कि प्रेस क्लेयर में बॉल और सीटी नहीं हो तो खाना नहीं बनेगा और क्लेयर अत्यधिक दबाव के कारण फट जायेगा। ऐसे ही समाज में भी यदि कोई व्यक्ति के भीतर कोई ऐसी चीज घर कर रही है, यदि उसे बाहर आने का मार्ग नहीं मिलेगा तो वह फट जाएगा। ऐसे में आत्महत्या जैसे घटनाओं के

तौर पर हम देख पाएंगे। उन्होंने कहा कि ऐसा कोई समाज नहीं है, जहां मानसिक विकार न हो, लेकिन सामाजिक सपोर्ट जहां होगा, वह समाज स्वास्थ्य रूप से भी स्वस्थ होगा। उन्होंने पारिवारिक सहयोग को भी प्रमुख माना है। वह कहते हैं कि सामाजिक एकीकरण, सामाजिक सुदृढ़ता कमजोर हुई है। 'कोविड-19 के दौर में जो भी लोग गांव को गए हैं वो इसलिए गए हैं कि गांव में उसका एकीकरण होगा, वह स्वस्थ रहेंगे, वह अपनी बात एक दूसरे के समक्ष रख सकेंगे। सोशल मीडिया में हम दिन रात एक दूसरे से बात कर लें, लेकिन सोशल मीडिया से सोशल इंटरैक्शन कभी नहीं हो सकता, जो हम आमने-सामने करते हैं। हम अक्सर अपने भीतर की बातों को दोस्तों को शेयर करें, परिवार के सदस्यों के बीच साझा करें।"

**निष्कर्ष एवं सुझाव:** कोविड-19 के दौर में नौकरियां चली गई हैं और लोगों के रोजगार पर फर्क पड़ा है। फंक्टरियों से मजदूरों ने भी किनारा कर अपने-अपने गृहस्थलों को पलायन करना आरम्भ किया है। कई लोग तो अपने-अपने क्षेत्रों में पहुंच गए हैं। लोग सामाजिक रूप से भी अपने को अकेला पा रहे हैं। इस महामारी में वर्क-फ्रॉम होम हो रहा है। लॉकडाउन के कारण जीवन हमारा अस्त-व्यस्त हुआ है। हमारी जीवन शैली गड़बड़ा गई है और इसका नतीजा है कि अब लोग आत्महत्या की तरफ अग्रसर हैं। कोरोना की वजह से कहीं-न-कहीं सामाजिक दूरी बढ़ी है, जो लोग हर शाम को एक-दूसरे के साथ गप्पे लड़ाया करते थे, वह कम हुआ है। एक-दूसरे के साथ घूम करते थे, वह कोरोना के संक्रमण से बंद हुआ है। एकांतवास ने नकारात्मकता पैदा की है। आर्थिक मंदी के कारण लाखों मजदूर युवाओं की जीविका पर खतरा पैदा किया है। इस कारण मजदूरों में भी नकारात्मकता घर कर रही है। यहां तक कि बालक व युवा भी अपनी जीवनीला को समाप्त कर रहे हैं। समाज के लोग इस अस्त-व्यस्त जिंदगी से अपने को अलग पा रहे हैं। वह इस स्थिति को स्वीकार नहीं कर पा रहे हैं। इस कारण भी आत्महत्या की संख्या में बढ़ोतरी हुई है। कई शोध के आँकड़े आने पर यह आया कि कोरोना का प्रभाव समाज पर गहरा पड़ेगा। उन्हें कई समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। रोजगार की तलाश, बेरोजगारी आदि की समस्याओं के कारण मानसिक अवसाद बढ़ेगा। इसके लिए हमें और सरकारों को तैयारी करने की आवश्यकता है। यदि हम इन सभी परिस्थितियों का विश्लेषण करें तो हम पाते हैं कि मानसिक स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दिए जाने की जरूरत है। तनाव की स्थितियों से दूर रहने के लिए हमें डॉक्टर के पास जाकर परामर्श लेना चाहिए। अवसाद से बचने के लिए रचनात्मक कार्यों में अपने समय को लगाना चाहिए। चिकित्सकों को मेंटल हैल्थ के बारे में सोचना चाहिए। इस स्थिति से उबरने के लिए हमें निम्न बिन्दुओं को अपने जीवन में अपनाना होगा:-

1. मानसिक असहजता महसूस होने पर मेंटल हैल्थ काउंसलर से बात करें। उसका हम सहयोग लें। नेशनल प्रिवेंशियल लाइफ लाइन इंपॉर्मेशन पर खबर करें। एन.जी.ओ. की मदद लें। समाज की भूमिका कोई भी बच्चा, स्त्री या पुरुष आदि अस्वस्थ दिखाई दें तो उनकी मदद देने की कोशिश करें। निर्धन, अनाथ बच्चों को सहयोग दें। अपने भीतर के अंतर्द्वंद को खत्म करें।

1. वर्गाल संदेश वर्गाल लाल भागविद्यालय, लंडेया जगलपव लरिबगर
2. मीडिया की खबरों ने लोगों को डराया है। सोशल मीडिया, जैसे व्हाट्सएप, फेसबुक आदि ने भी सनसनी पैदा कर लोगों को भयभीत किया है। सोशल मीडिया की खबरों ने लोगों के मानसिक स्ट्रेस को बढ़ावा दिया है। इसलिए सोशल मीडिया में खबरों से पूरे रहें। प्रमाणिक खबरों का संज्ञान लें।
3. स्वयं को कभी भी मानसिक अवसाद में न आने दें। यदि मानसिक अवसाद में रहते हैं तो मनोचिकित्सकों के पास जाएं। खुद को व्यस्त रखें। अपनी रुचि को पहचानें और उसे बनाए रखें।
4. खाली समय में अच्छा संगीत सुनें। रंगों का प्रयोग अपनी चित्रकारिता में करें। भविष्य की चिंता में न खोएं, बल्कि हम वर्तमान में रहना सीखें।
5. अत्यधिक वर्कलोड न लें। प्रकृति का सांनिध्य लेकर आनंद लें। मोडिटेसन करें। हेल्सी डाइट लें और व्यस्त रहें।
6. आत्महत्या जैसे समस्याओं से बचने के लिए हर छोटी समस्या पर पारिवारिक और मित्रों का सहयोग लें।
7. टेला काउंसलिंग के द्वारा हम इमोशनल, मेंटल, बिहेवियर सपोर्ट दे सकते हैं। इसलिए सरकारों को एक हैल्पलाइन स्थापित कर 24 घंटे की यह सेवा खुली रखनी चाहिए। क्राइसिस हैल्पलाइन एक्टिवेट होने चाहिए। हम मानसिक रूप से स्वस्थ सक्रिय रहें। हम स्ट्रेस में जब रहेंगे तो नकारात्मकता भर जाएगी।
8. अपने पाल-पड़ोस में लोगों के व्यवहार, उनके जीवनशैली पर भी ध्यान रखने की जरूरत है। यदि उनमें 'आत्महत्या' के जिसमें लक्षण दिख रहे हैं, उनमें उनका सपोर्ट करने की जरूरत है। यदि किसी के व्यवहार में परिवर्तन दिखाई देता है तो बिना जजमेंटल हुए उसे सुनकर सहयोग करने की आवश्यकता है। उसे मानसिक आराम देने की जरूरत है।
9. कोरोना महामारी जैसी भयावह समस्याओं से निवटने के लिए चिकित्सकों, मनोविश्लेषकों, मनोविज्ञानियों, समाजशास्त्रियों आदि की संयुक्त टीम बनकर लोगों की काउंसलिंग करने की आवश्यकता है। समय-समय पर लोगों से मिलकर बातचीत करने की जरूरत है।
10. अभिभावकों को चाहिए कि वे बच्चों को बताएं, उनको छोटी-सी-छोटी बातों को सुनें। जज न करें, उन्हें समझें और मदद करने की कोशिश करें।
11. दवाई और खानपान का विशेष ध्यान रखने की जरूरत है। ब्रेन कंमेस्ट्री गड़बड़ाने से यह सब होता है। चिकित्सक से इसपर राय लेते रहें।
12. वर्तमान में वर्कप्लेस में कर्मों और अधिकारों काफ़ी तनाव में रहते हैं। ऐसे में वर्कप्लेस में भी एक काउंसलर की जरूरत है।
13. अवसादग्रस्ता का एक कारण पोर्नोग्राफी भी है। इंटरनेट पर अश्लील सामग्री की भरमार है। ऐसे में बच्चों के लिए एक आकर्षण भरा है। बच्चे इंटरनेट पर पोर्न फिल्में

14. को देखते हैं। जब यह याददायक जीवन में यह सब कुछ नहीं पाते तो फिर उनमें नकारात्मकता फैल जाती है। जिस कारण अंत में यह आत्महत्या के संकेत लेते हैं। इसलिए उनपर नजर बताने रखें।
15. स्कुली स्तर हो या भी शायद एजुकेशनल संदर्भों में भी छात्र-छात्राओं के लिए काउंसलर होने चाहिए। उससे होने से युवा आत्मकेंद्रित नहीं होंगे, बल्कि यह गुरुत्वर अपनी बात को शायर कर सकेंगे।
16. तनाव हटाने करने का कोशल सीखें। अभिभावक इस बात को समझें और अपने बच्चों को तनाव की स्थिति से दूर करें। अभिभावकों को अपने बच्चों को हर गतिविधि का ध्यान रखने की आवश्यकता है।

#### संदर्भ सूची:

1. श्रीवास्तव दीपक कुमार, 'नवाचारों से ही दूर होंगे अभियारं', हिंदुस्तान, 21 मई, 2020।
2. ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी ऑफ फिलॉसफी, 1994, पृष्ठ 365।
3. द वर्ड बुक इनसाइक्लोपीडिया, भाग 1511।
4. द इनसाइक्लोपीडिया अमेरिकाना, भाग 1511।
5. द इनसाइक्लोपीडिया अमेरिकाना, भाग 1511।
6. दुर्बोम, ई., 'सुसाइड'।





## विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र पर कोरोना के प्रभाव

अर्चित पाण्डेय

शोधार्थी

डी.ए.वी.कॉलेज, देहरादून

डॉ. प्रशांत सिंह  
एसोसिएट प्रोफेसर

डी.ए.वी.कॉलेज, देहरादून

कोरोना वायरस, एक असंगत वायरस मानव जाति के लिए न केवल जीवन का खतरा बना बल्कि हर क्षेत्र के लिए बहुत अधिक चुनौतियां लेकर आया। कोरोना वायरस महामारी का शुरुआत एक नए किस्म के संक्रमण के रूप में मध्य चीन के वुहान शहर में 2019 के मध्य दिसंबर में हुई। WHO के मुताबिक, कोरोना संक्रमित करीब 80 फीसदी लोग बिना किसी खास इलाज के ठीक हो जाते हैं। संक्रमित छह लोगों में से सिर्फ एक व्यक्ति गंभीर रूप से बीमार पड़ता है और वह सांस लेने में तकलीफ होने की स्थिति तक पहुंचता है। दुनिया इससे लड़ने के लिए मिलकर काम कर रही है और इस महामारी से रक्षा के लिए तीव्र गति से प्रयास किए जा रहे।

भारत ने जनवरी के अंतिम सप्ताह में कोविड-19 के अपने यहाँ पहले मामले की सूचना दी और वैज्ञानिकों ने अनुसंधान कार्य तब से ही शुरू कर दिया था और तभी से ही तेजी से फैल रही बीमारी, निदान और टीका विकास के प्रक्षेपक और विकास पर ध्यान केंद्रित काम गतिशीलता से प्रारम्भ कर दिया था। वैज्ञानिकों के मुताबिक आम तौर पर वायरस या तो तेजी से फैलते हैं या फिर गंभीर बीमारियों का सबब बनते हैं। कोविड-19 वायरस में दोनों ही गुण लगे होने की वजह से ज्यादा खतरनाक है। कोविड-19 वायरस जिस रफ्तार से अपनी संख्या बढ़ाते हुए फैलता है उससे उसको मारक क्षमता बढ़ जाती है। छह महीने से चले आ रही जांच और वैज्ञानिकों की राय में इस महामारी को खत्म करने के लिए महज एक तरीका है- भविष्य के लिए रोगनिरोधक टीके का विकास। फिलहाल कोविड-19 वायरस की वैक्सीन विकसित करने के लिए लगभग 100 से अधिक अलग-अलग समूहों में होड़ लगी हुई है।

कॉरोना एक ऐसा महामारी बनके आया है जिसने अपनी चपेट में हर एक क्षेत्र को लिया है, चाहे वो आर्थिक, सामाजिक या फिर वैज्ञानिक क्षेत्र हो। समूचे विश्व जगत की अर्थव्यवस्था हो चाहे लोगों के रोजगार से सम्बंधित विषय, कोई ऐसी जगह नहीं जहाँ इस महामारी के दुःश-प्रभाव देखने को ना मिले हो।

विज्ञान, एक ऐसा व्यापक शब्द है जिसको व्याख्या कई परिप्रेक्ष्यों में की जा सकती है। और जब बात कोरोना महामारी की हो तो इसके काफी सारे पहलुओं पे बात की जा सकती है। इस वकत दुनिया कोरोना के देश से गुजर रही है और पूरे विश्व की निगाहें हमारे वैज्ञानिकों पर हैं जो दिन रात कोरोना का दवाई की खोज में लग हुए हैं और काफी हद तक इसमें सफल होते

पूरे भी नजर आ रहे हैं। जिस वकत पूरे विश्व में लॉकडाउन लगा हुआ था और सभी देशों, प्रांतों ने अपनी सीमाओं को बंद कर दिया था, उसी समय से वैज्ञानिक एक विपरीत योग्यता के शिखर तक शैथिल्य महयोग का निर्माण करते हुए, एक याददा प्रयास में लग गए थे। शोधकर्ताओं का कहना है, इतने सारे देशों में इतने सारे विधायक एक ही विषय पर और इतने आग्रह के साथ एक साथ केंद्रित हैं, यह एक इतिहास है।

जैसा की ज्ञात है विज्ञान की कोई सीमाएं नहीं होती और चाहे वो चिकित्सीय सेवा हो या फिर अनुसंधान, तकनीकी उपकरणों का निर्माण हो या फिर जल-वायु में जुड़ा हुआ मुद्दा, हर तरफ ही विज्ञान अपना एक ब्रेकअउट अहम किरदार पेश करता है। कॉरोना काल में जिन तरह से PPE किट, मारक और सेनीटाइजर का उत्पादन हुआ है यह एक ब्रेकअउट आलांछनीय कदम है। पीपीई किट के उत्पादन में तेजी के साथ, भारत एक आयातक होने के बाद अब निर्यात करने किट का एक बड़ा निर्माता बन गया है, और लगभग पांच लाख किटों का निर्माण प्रतिदिन कर रहा है।

विज्ञान की दृष्टि से देखा जाए तो जल वायु भी एक महत्वपूर्ण घटक है, परन्तु मौजूदा स्थिति में हमारे सामने कई चुनौतियां हैं। "एक-पृथ्वी" का भावना - महामारी के खिलाफ संघर्ष में हमारे माध्यम से दर्शाते होती है। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि दुनिया भर में बढ़ती मानव आबादी और अनैतिक मानव गतिविधियों के साथ वायु और पानी की गुणवत्ता पर भारी असर पड़ा है। लेकिन कोरोना काल में दुनिया भर में लगे लॉकडाउन से वायु और जल प्रदूषकों में उल्लेखनीय कमी देखी गयी। जल गुणवत्ता एक ऐसा विषय है जो सांघे आन जनता को प्रभावित करता है, राष्ट्रव्यापी तालाबंदी ने पानी की गुणवत्ता और शुद्धता के लिए चमत्कार किया है। इंडिया-टुडे की एक रिपोर्ट के अनुसार, पवित्र शहर हरिद्वार में हर-को-भोड़ों में गंगा नदी के पानी की गुणवत्ता को पीने के लिए उपयुक्त माना गया है। इस बांच, उत्तराखंड में पर्यावरण संरक्षण और प्रदूषण बोर्ड के अनुसार, फेकल कोलोफॉर्म में 24% और बैक्टीरिया ऑक्सीजन डिमांड में 20% की कमी आई है। यह एक अभूतपूर्व सफलता है जो सरकार को महत्वाकांक्षी योजनाएं हजारों करोड़ रुपये के निवेश के बाद भी नहीं कर सकीं। अब जब लॉकडाउन समाप्त हो चुका है और हम एक सामान्य दिनचर्या को ओर बढ़ चुके हैं, तो हमको लंबे समय तक इस स्थिति को बनाए रखने के लिए यह देखना चाहिए कि हम कहाँ गलत थे और अब क्या किया जा सकता है। विश्व के जंगली-निवास को नष्ट करने से बचने और पृथ्वी पर मानव प्रभाव को कम करने के लिए एक तरह से सोचने की आवश्यकता है। वनों की कटाई जैसी गतिविधियों को रोकना जाना चाहिए और हमें वन को बढ़ाने के लिए गतिविधियों में संलग्न होना चाहिए साथ ही हवा की गुणवत्ता में सुधार के लिए शहरों में अधिक बनीकरण, और इनसे लड़ने के लिए किसी को स्वयं जागृत होना चाहिए।

संयुक्त राष्ट्र (डी.इ.एस.ए.) नीति में पाया गया है कि कोविड-19 महामारी जैसी शैथिल्य चुनौतियों को हल करने के लिए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में सुधार के लिए समान है जगह है। रिपोर्ट के अनुसार, कोविड-19 पर वैज्ञानिक आकलन दुनिया भर के लिए समान है

लेकिन प्रतिक्रिया का समय और तरीका देशों में काफी भिन्न होता है। विज्ञान और सरकार जनता के विश्वास को बनाए रखने के लिए विज्ञान और नीति का संयुक्त सिस्टम के कामकाज को दुरुस्त करने की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त, वैज्ञानिक मूल्यांकन का सही उपयोग किया जाना चाहिए, और सरकारों को वैश्विक वैज्ञानिक आकलन पर अधिक चेतना के साथ कार्य करना चाहिए। वैज्ञानिकों और विशेषज्ञों के बीच अंतर्राष्ट्रीय सहयोग पर नीति निर्माताओं को ध्यान देने की आवश्यकता है एवं इनकी सहायता से जनता के बीच भरोसा पैदा करने के लिए यह एक शक्तिशाली तरीका है। सितंबर 2019 में, ग्लोबल प्रिपेयर्डनेस मॉनिटरिंग बोर्ड (डब्ल्यू.एच.ओ.) और विश्व बैंक द्वारा एक वैश्विक प्रतिक्रिया के लिए "एक घातक स्वास्थ्य संबंधी रोगजनक के कारण तेजी से फैल रही महामारी" के लिए बुलाया गया। पहले आकलन में भी इस तरह की घटना की चेतावनी दी गई थी, इन सिफारिशों पर कार्रवाई करने से देशों के भीतर और आसपास की तैयारियों में तेजी आई होगी, और मौजूदा महामारी के लिए एक प्रभावी प्रतिक्रिया तेज हो जाएगी। 2019 ग्लोबल सतत विकास रिपोर्ट और 2019 सतत विकास लक्ष्य रिपोर्ट सहित अन्य हालिया वैज्ञानिक आकलन ने लोगों और प्रकृति के बीच संबंधों में तत्काल बदलाव का आह्वान किया है। इन आवश्यक कार्यों में से अधिकांश केंद्र देशों से स्वयं आने की आवश्यकता होगी, लेकिन संयुक्त राष्ट्र प्रणाली द्वारा समर्थित अंतर्राष्ट्रीय सहयोग, इन सभी क्षेत्रों में प्रगति कर सकता है। इस तरह की कई पहल की जा रही हैं, लेकिन इसे बढ़ाने की जरूरत है।

कोविड-19 महामारी ने विभिन्न तरीकों से दुनिया को प्रभावित किया है। जानकारी की कमी, सटीक जानकारी की आवश्यकता, और इसके प्रसार की कठोरता महत्वपूर्ण है, क्योंकि इस महामारी को पूरी आबादी के सहयोग की आवश्यकता होती है और इसी क्षेत्र में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी एक महत्वपूर्ण योगदान प्रदान कर रहे हैं, जिससे की लोगों को सही जानकारी वैज्ञानिक तरीके से मिल सके। हर कोई जल्द से जल्द कोविड-19 पर जीत हासिल करना चाहता है, हम सबको उन सभी लोगों के साथ सहयोग करने के लिए तैयार रहना चाहिए जो रात दिन ईमानदारी और एक-दूसरे के हितों और चिंताओं पर विचार करने के सिद्धांतों पर एक साथ काम कर रहे हैं। हमें सुरक्षा के सभी पहलुओं की अविभाज्यता के साथ सरकारों और हमारे कोरोना योद्धाओं की मदद करने के लिए तत्पर रहना है ताकि इस महामारी पे जल्द से जल्द विजय पायी जा सके।



## कोरोना: समस्या एवं समाधान (एक समाज शास्त्रीय अध्ययन)

प्रो. इला साह  
समाजशास्त्र विभाग

सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा

डॉ. ललित चंद्र जोशी

पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा

कोरोना वायरस के संकेत मानव को सन् 1930 के दशक में ही मिलने लगे थे। महिला वैज्ञानिक डोरोथी हामरे ने सबसे पहले इसका अध्ययन किया था। उनका एक शोध पत्र 1966 में प्रकाशित हुआ था, जिसमें उन्होंने इशारा किया था कि 'यह मनुष्य की श्वसन प्रणाली पर चोट करने वाला घातक वायरस है।' वह पहली महिला वैज्ञानिक थीं, जिन्होंने कोरोना प्रजाति के वायरस को अलग किया। इसके बाद डेविड टायरेल और मैल्कम व्योने ने भी ऐसी उपलब्धि हासिल की। टायरेल की प्रयोगशाला में ही जून अलमेदा ने प्रथम बार शोध कर बताया कि कोरोना दिखता कैसा है? इसकी संरचना गमले की तरह होती है। ग्रीक शब्द 'कोरोने' से लातिनी शब्द 2 कोरोना बना। ग्रीक में कोरेने का अर्थ माला या हार होता है। यह शब्द 1968 में प्रथम बार प्रयोग में आया, लेकिन तब यह इतना घातक नहीं था। कोरोना परिवार के वायरस सार्स 2002-03 में 26 देशों में फैला था और मर्स 2012 में लगभग 27 देशों में। मर्स ताकतवर था, वह कम फैला और जो कोविड-19 है, वह पूरे विश्व को तड़पा रहा है। इसी भयानक महामारी के कारण पूरे विश्व में लॉकडाउन लगा देना पड़ा। अभी भी लॉकडाउन की स्थिति बरकरार है।

कोरोना वायरस का चीन में और फिर विश्व में बहुत तेजी से प्रसार हुआ है। धीरे-धीरे वैश्विक महामारी के रूप में यह बीमारी फैली है। इस महामारी ने दुनिया की व्यवस्थाओं को प्रभावित किया है। कोविड-19 के संक्रमण के चलते अलग-अलग देशों की सरकारों ने अपने स्तर से चिकित्सा व्यवस्थाओं को दुरुस्त किया और सामाजिक दूरी का पालन कराया है। कोविड-19 महामारी के कारण वैश्विक स्वास्थ्य संकट गहराता जा रहा है और अनेक लोगों के लिए लॉकडाउन एक नियम बना। विद्वानों का कहना है कि अगले डेढ़ से दो साल तक पूरी दुनिया किसी-न किसी रूप से कोविड-19 खतरे से जूझती रहेगी और इसके बाद भी पुनर्निर्माण और इसके स्थायी प्रभाव कई वर्षों तक महसूस किए जाते रहेंगे। इस महामारी के प्रभाव को इस तरह देखा जा सकता है कि दुनिया के कई हिस्सों में सीमाएं बंद हैं। हवाई अड्डे, होटल और व्यवसाय के साथ शैक्षणिक संस्थाएं बंद थी और अभी भी कई संस्थाएं बंद हैं। इस भयावह महामारी ने विश्व की अर्थव्यवस्था को चरमरा दिया है। परिणामस्वरूप बड़े पैमाने पर लोगों की नौकरियां छूट गयीं, जबकि लोगों को रोजगार की तलाश सामान्य दिनों में भी होती है। हालांकि नौ माह बाद ये संस्थाएं धीरे-धीरे खुल रही हैं। अभी भी देश-विदेश की स्थिति निम्नलिखित है।

कोविड-19 महामारी के मानसिक व सामाजिक प्रभाव को देखा गया है। महाभागों और विभिन्न घटनाएं प्रकाश में आई हैं। लोकडाउन के कारण मनुष्य दौरेन मानसिक रोगियों और विभिन्न घटनाएं प्रकाश में आई हैं। लोकडाउन के कारण मनुष्य अधिक मार मजदूर, निम्नवर्ग, दैनिक मजदूरों/कर्मियों और प्राथमिक सेक्टरों के कर्मियों में सेवा दे रहे लोगों को नौकरी से हाथ धोना पड़ा है। ऐसे में उन्हें खाने के लाले तक पहुँच नहीं है। इसके कारण लोगों की रोजी रोटी खीन गई है। कंपनी, कारखानों या अस्पतालों में सेवा दे रहे लोगों को नौकरी से हाथ धोना पड़ा है। ऐसे में उन्हें खाने के लाले तक पहुँच नहीं है। इतने माह गुजरने के उपरान्त देश में उत्पादन कार्य अभी गति नहीं पकड़ सका है। श्रम बहुत उत्पादन कार्य हुआ है, किंतु यह अभी नाकाफी है। अनिवार्य वस्तुओं का उत्पादन किया जाना आवश्यक है। तिरुचिरापल्ली आई. आई. एम. के प्रो. दीपक कुमार शीवारस्व ने कहा है कि "कोविड-19 ने दुनिया को खासा प्रभावित किया है। इससे लोगों की मौते हो रहे हैं। उनके रोजगार खत्म हो रहे हैं और रोजमर्रा के जीवन में उन्हें मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। इन तमाम परिणामों के बावजूद कोविड-19 के घने अधियारे में उम्मीद को फिरण मौजूद है। यह संकट दरअसल विभिन्न क्षेत्रों में इन्वेषण, यानी नवाचार को बढ़ावा दे सकता है और बिल्कुल नए तरीके से सोचने वाला समाज गढ़ सकता है। उन्होंने माना है कि अतीत में भी महामारी ने नवाचार को गति देने का काम किया है और नए विचारों के साथ बदलाव को मुमकिन बनाया है। जैसे, 2002 में चीन और अन्य पूर्वी एशियाई देशों में फुंफें संसने दुनिया को बदल दिया था। माना जाता है कि सार्स से वैरिचक अर्थव्यवस्था को अरबों डॉलर का नुकसान हुआ था, क्योंकि आज की तरह ही उन दिनों लोगों का घर से बाल निकलना बंद कर दिया था, हालांकि उस संकट ने उन तमाम राष्ट्रों में इंटरनेट की पहुंच बढ़ दी, जहां इसका नेटवर्क काफी कम था।" दीपक कुमार शीवारस्व 'नवाचारों से ही दूर होंगे अधियारे', हिंदुस्तान, 21 मई, 2020।

कोविड-19 के कारण हमें कई प्रकार के प्रभाव अपने आस-पास देखने को मिले। उन प्रभावों का हमने अनुभव किया है, वह निम्नवत है:-

**कोविड-19 और बाजार व्यवस्था:** कृषि की आपूर्ति शृंखला पर इसका प्रभाव पड़ा है। कई टुक संचालकों को इस दौरान परमिट जारी नहीं हुए थे, तो सामान, फल अनाज ले जाने की अनुमति देरी से मिली। बड़ी संख्या में ट्रांसपोर्टों को परमिट नहीं मिलने से बाजार व्यवस्था पर इसका प्रभाव पड़ा। एक रिपोर्ट के अनुसार रेल मंत्रालय का सुझाव है कि माल डुलाई लोड प्रतिदिन लगभग 10,000 कारों रैक के बजाए केवल लगभग 3-4,000 रैक तक ही हो रहा है। परिणामस्वरूप, किसान को अपनी फसल को सस्ते ताम पर बेचना पड़ता है, और कम लाभ के साथ समझौता करना पड़ता है। फसलों की सुरक्षा के लिए बीच, ट्रैक्टर, लेबर सहायता, दवाओं जैसे उत्पादों की अनुपलब्धता के कारण फसलों की बुवाई और कटाई में देरी होने से हुआ। कृषि में ई-कॉमर्स ब्रांड प्रभावित हुए हैं। उत्पादों का परिवहन बंद हो गया। कृषि क्षेत्र में अपेक्षित नौकरियों में कटाई हुई है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार लगभग नौ करोड़ किसान एक समान संख्या के साथ भूमिहीन कृषि श्रमिक हैं। जबकि किसान को सीधे सरकार से राहत मिलेगी, बाद वाले को इस समय एक कठिन स्थिति में रखा गया है। निर्घात बंद होने

से प्रभाव पड़ा है। एपीडा (ए.पी.ई.डी.ए.) के अनुसार 2018-19 में भार का कुल कृषि उत्पादन 685 बिलियन रु0 था। वर्तमान में सभी बंदरगाहों को बंद करने से नुकसान पहुंचा है। छोटे और मध्यम उद्योगों, लघु उद्योग इकाइयों, छोटे व्यापारियों की दुकानों पर इस कोरोना का सीधा-सीधा प्रभाव पड़ा है। लोकडाउन के चलते व्यवसाय बंद हो गए। इससे राजस्व की मार अलग से पड़ी।

**अलग से पड़ी।**  
**कोविड-19 एवं अर्थव्यवस्था:** इस वैरिचक महामारी ने वैरिचक वित्तीय बाजार को तबाह कर दिया है। महामारी ने संचालित की कीमतों और शेयर बाजारों के साथ-साथ जीवन और वैरिचक गतिविधियों को भी बुरी तरह से प्रभावित किया है। दुनिया मंदी की स्थिति में जा चुकी है। अगले साल इस मंदी के पूरा स्वरूप ग्रहण कर लेने की संभावना है। वैरिचक जी.डी.पी. 2021 के लिए अनुमान 2.5 प्रतिशत से नीचे आ गए हैं। जब उत्पादन रक जाता है, तो यही अपेक्षित परिणाम होता है। व्यापार और विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (यू.एन.सी.टी.ए.डी.) के अनुसार गत वर्ष वैरिचक विकास 2.9 प्रतिशत था, जो बैसे ही बहुत कम था, लेकिन इस साल यह 2 प्रतिशत से नीचे गिर सकता है। वैरिचक मंदी अब निश्चित है। महामारी के कारण आर्थिक अनिश्चितता को भी बढ़ा दिया है और इसके कारण वैरिचक अर्थव्यवस्था को 2020 में एक ट्रिलियन डॉलर का झटका लगेगा। यू.एन.सी.टी.ए.डी. का मानना है कि भारत को कोरोना वायरस के प्रकोप के कारण 348 बिलियन डॉलर का व्यापार घाटा होगा।

बंद होने से पूरी दुनिया मंदी की स्थिति में जा चुकी है अगले साल इस मंदी के पूरा स्वरूप ग्रहण कर लेने की संभावना है। वैरिचक जी.डी.पी. 2021 के लिए अनुमान 2.5 प्रतिशत से नीचे आ गए हैं। जब उत्पादन रक जाता है, तो यही अपेक्षित परिणाम होता है। वैरिचक गतिविधियों को भी बुरी तरह से प्रभावित किया है। दुनिया मंदी की स्थिति में जा चुकी है। अगले साल इस मंदी के पूरा स्वरूप ग्रहण कर लेने की संभावना है। वैरिचक जी.डी.पी. 2021 के लिए अनुमान 2.5 प्रतिशत से नीचे गिर सकता है। वैरिचक मंदी अब निश्चित है। महामारी के कारण आर्थिक अनिश्चितता को भी बढ़ा दिया है और इसके कारण वैरिचक अर्थव्यवस्था को 2020 में एक ट्रिलियन डॉलर का झटका लगेगा। यू.एन.सी.टी.ए.डी. का मानना है कि भारत को कोरोना वायरस के प्रकोप के कारण 348 बिलियन डॉलर का व्यापार घाटा होगा।

**कोविड-19 एवं मानसिक स्वास्थ्य:** कोविड ने स्ट्रेस स्तर बढ़ा दिया है। मानसिक स्वास्थ्य को लेकर विशेषज्ञों ने अपने विचारों का सामने रखा है। समाजविज्ञानी एवं एच.एन.बी.

**यमन संदेश** यमन लाल महाविद्यालय, लंदौरा जगपब हरिद्वार

**केंद्रीय विश्वविद्यालय, गढ़वाल में समाजशास्त्र विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. जे.पी. पचौरी ने इस परेशानी के संबंधी में कहा है कि 'ऐसा कोई व्यक्ति नहीं रहा है, जिसे परेशानी नहीं रही हो। थोड़ा तनाव फायदेमंद होता है, लेकिन कोविड-19 ने मेंटल हेल्थ को प्रभावित किया है और यह स्ट्रेस लेवल धीरे-धीरे बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि कोविड-19 की स्थिति भयावह है। हमारे देश में हेल्थ फेसिलिटी बहुत खराब रही थी। इस दौरान सरकार ने भी तैयारी नहीं की थी, किन्तु कोविड-19 महामारी के कारण हमारी स्वास्थ्य व्यवस्था में सुधार देखने को मिला है। वह आगे कहते हैं कि मेंटल हेल्थ की समस्याएं तेजी से देश में इसलिए बढ़ रही हैं कि हम जल्द पाने की ललक रख रहे हैं। यदि हमें कुछ नहीं मिल पा रहा है तो हमारा स्ट्रेस लेवल निरंतर बढ़ता चला जा रहा है, जिसको हम युवाओं, बुजुर्गों आदि में अधिक देख सकते हैं। हमारे अभिभावक, दोस्त, परिवार, शिक्षक, समाज भी इस स्ट्रेस को देने के लिए दोषी हैं जो अपने आस-पास की इन समस्याओं पर दृष्टि नहीं डालते। वह इस स्ट्रेस को कम करने में सहायता नहीं करते। मानसिक स्वास्थ्य की बेहतरी के लिए प्रसन्न रहना जरूरी है। प्रसन्नता और हेल्थ बाजार में नहीं मिलती। मेंटल हेल्थ को सुधारने के लिए हमें खुश रहना होगा। पचौरी, प्रो. जे.पी., कोरोनाकाल में मेंटल हेल्थ से संबंधित वीबिनार में बोले गए व्याख्यान के अंश।**

### चुनौतियां एवं संभावनाएं:

**वर्क फ्रॉम होम:** कोविड-19 के कारण लोगों को अपने घर से काम करने के लिए अपनी जीवनशैली को ढालना पड़ा है। वर्क फ्रॉम होम होने से कर्मों घर से अपने को प्रौद्योगिकी से जोड़ रहे हैं। घर रहते हुए वैंटकें करने, शिक्षा ग्रहण करने, समाधान खोजने, अन्य काम करने के लिए प्रेरित होना पड़ा है। वर्क फ्रॉम होम होने से समय और ध्यान दोनों की ही बचत हुई है। कोविड-19 के कारण पूरे विश्व में ऑनलाइन वर्क को तरजोह मिली है। इस महामारी के कारण सूचना-संचार और प्रौद्योगिकी को बढ़ावा मिला है। हम कह सकते हैं कि भविष्य में सूचना संचार तंत्र और प्रौद्योगिकी और अधिक विकसित होगी। इनकी जरूरत भी कामों को निबटाने के लिए होगी। इस तरह दुनिया में प्रौद्योगिकी का प्रयोग होने की संभावना बढ़ी है। इससे विकास को बढ़ावा मिलेगा।

**रोबोट पर निर्भरता:** कोविड-19 के कारण जन संसाधनों का कम प्रयोग हुआ। इस दौरान रोबोटों का सहारा विभिन्न कार्यों के संपादन के लिए किया गया। किराने का सामान पहुंचाने, हेल्थकेयर प्रणाली में कार्यों को अंजाम देने, फैंक्टरी को चलाने आदि में इसका प्रयोग हो सकता है। कंपनियाँ भी इस बात को स्वीकार करने लगी हैं कि हम रोबोट का सहारा ले सकते हैं। भविष्य में आने वाली यामारियों के समय रोबोट से काम लिए जा सकेंगे।

**टेलीमोडिसिन:** कोविड-19 के समय अस्पतालों और स्वास्थ्य की सेवा प्रदान करने वाले कार्यालयों में भीड़-भाड़ को नियंत्रित करने के लिए, आवाजाही को कम करने के लिए मरीजों को यह सलाह दी गई की वह वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए ही परामर्श लें। कई जगह तो इसे

लागू भी कर दिया गया। भविष्य में हेल्थकेयर सेंटर जाने के बजाए टेलीकांफ्रेंस के माध्यम से मरीजों को लाभ प्राप्त होने की संभावनाएं दिखी हैं। चिकित्सकों में इसके प्रति दिलचस्पी बढ़ी है।

**ऑनलाइन खरीदारी:** ऑनलाइन खरीदारी बढ़ी है, जो ग्राहक दुकानों में भीड़ लगाते थे, आज उन्हें घर बैठे हुए सामान मिल रहा है। यह भविष्य की संभावना भी है। ऑनलाइन कंपनियों ने कोरोनाकाल में अपनी सेवाएं जारी रखी हैं।

**ऑनलाइन शिक्षण कार्य-** शिक्षा इस समाज के लिए बहुत आवश्यक है। शिक्षा की यदि व्यवस्था नहीं की जायेगी तो हमारा सामाजिक, आर्थिक विकास रूप जाएगा। पूरा समाज भयावह तत्वों से घिर जायेगा। समाज की बदतर स्थिति हो जायेगी। लोगों को जागरूक करने के लिए शिक्षा की व्यवस्था बहुत जरूरी है। भारत में शिक्षा का एक बहुत बड़ा इतिहास रहा है। भारत में तक्षशिला, नालंदा, काशी, विक्रमशिला, मिथिला आदि शिक्षा के प्रमुख केंद्र हुआ करते थे। दक्षिण भारत में एन्नारियम और तिरुमुक्कुदल जैसे प्राचीन शैक्षिक संस्थान थे। आधुनिक भारत में आधुनिक शिक्षा की शुरुआत ईस्ट इंडिया कंपनी और उससे कुछ पूर्व यूरोपीय ईसाई धर्म प्रचारकों और व्यापारियों के साथ मानी जा सकती है। शुरुआत में मद्रास ही उनका कार्यक्षेत्र था, लेकिन धीरे-धीरे बंगाल की ओर ये उन्मुख हुआ। ईसाई धर्म की शिक्षा के साथ इतिहास, व्याकरण, गणित, साहित्य, भूगोल आदि विषय पढ़ाए जाते थे। शर्नै: शर्नै: के सार्थक और सरकारी मशीनरी में विभिन्न उपयोगी कर्मचारियों की नियुक्ति के लिए शिक्षा, जानबूझकर और सरकारी मशीनरी में विभिन्न उपयोगी कर्मचारियों की नियुक्ति के लिए शिक्षा संस्थानों और विषयों का विस्तार होने लगा। ऑनलाइन सूचना स्रोत और सर्व इंजन विकिपीडिया में विभिन्न प्रामाणिक स्रोत और साक्ष्यों से शिक्षा को बढ़ावा मिला है। कोरोना ने विश्व के लोगों को शिक्षित करने के लिए तरीकों में परिवर्तन करने की संभावनाओं पर बल दिया है। यदि भविष्य में कोई संकट उत्पन्न होता है तो ऑनलाइन शिक्षण किया जाएगा। यह एक तरीके से चुनौतीपूर्ण भी है, लेकिन यदि यह संभव होता है तो ऑनलाइन शिक्षण प्रणाली विकसित हो जायेगी। साथ में ऑनलाइन शिक्षण पर निर्भरता भी बढ़ेगी। एक अनुमान के मुताबित करीब 39 देशों में लोकडाउन के कारण स्कूल बंद हो गए, जिस कारण 421 मिलियन से अधिक बच्चों को घर बैठना पड़ा है। करीब 22 देशों ने आंशिक बंदी की घोषणा इस दौरान की। बंदी होने से बच्चों की शिक्षा पर ख़ासा प्रभाव पड़ा है। जब हम विकसित राष्ट्रों को बात करें तो वहां स्कूलों, विश्वविद्यालयों में छुट्टी कर दी गई। ऑनलाइन शिक्षा पर विशेष बल दिया गया। संकट पर काबू पाने के उद्देश्य से लाखों छात्रों के लिए अस्थायी तौर पर 'होम स्कूलिंग' की परिस्थितियां उत्पन्न हो गई। चीन, दक्षिण कोरिया, इटली और ईरान आदि जैसे देशों में शैक्षिक नवाचार के नए प्रयोग देखने को मिले।

भारत में भी घर पर रहकर पढ़ने-सीखने पर बल दिया गया। टेलीविजन प्रसारण के माध्यम से शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराई गई। हालांकि अभी यहाँ इंटरनेट की गति बहुत कम है। इंटरनेट की गति तीव्र होने और 5 जी नेटवर्क की सुविधा प्राप्त होने में काफी समय है। उभरते देशों में शिक्षा मुख्य रूप से सरकार द्वारा प्रदान की गई है, यह शिक्षा भविष्य के लिए

धेदा करना होगा। भारत को कच्चे माल के लिए चीन जैसे देशों पर निर्भरता कम करनी चाहिए और आत्मनिर्भरता व स्वदेशी आधारित अर्थव्यवस्था में अवसर खोजने चाहिए। उसे विनिर्माण क्षेत्र को नए सिरे से तैयार करना चाहिए। भारत के पास स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि, तकनीक, पर्यावरण आदि में भारी संभावनाएं हैं, जिन्हें अभी तक खंगाला नहीं गया है। इसके इस्तेमाल से भारत में पुनर्निर्माण हो सकता है। भारत के बड़ते डिजिटल बुनियादी ढांचे का इस्तेमाल प्रशासन में अधिक प्रभावी तरीके से किया जा सकता है। अनुसंधान और विकास पर जोर दिया जाना चाहिए। सामाजिक सुरक्षा व्यवस्थाओं में उत्पन्न खामियों को दूर करने के लिए काम करना चाहिए। समाज के निचले तबके में रहने वाले लोगों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

भारत देश में कई वस्तुओं का आयात चीन आदि देशों से होता है। दवाइयाँ, कपड़े, गींटिंग कार्ड, इलेक्ट्रिक सामग्री आदि की पूर्ति पर प्रभाव पड़ेगा। रोजमर्रा के जीवन से जुड़े आवश्यक वस्तुओं के उत्पादन के लिए हमें विशेष ध्यान देना चाहिए। भारत के पास सूचना प्रौद्योगिकी, पर्यटन, फार्मास्यूटिकल्स, जैव प्रौद्योगिकी, चिकित्सा आदि क्षेत्र ऐसे हैं, जिनमें हमें संभावनाएं नजर आती हैं। हमें चीन जैसे देशों पर निर्भर कम रहने की सोख कोरोना से मिली है। हमें मांग, निर्यात वृद्धि पर ध्यान रखना होगा।

अर्थव्यवस्था विकास के लिए विश्व व्यापार पर निर्भर रहने से बेहतर है कि हम आत्मनिर्भर रहने के लिए काम करें, जैसा कि प्रधानमंत्री ने भी इशारा किया है। निकट भविष्य में कमजोर वित्तीय तिमाहियों, नौकरियों के नुकसान, वेतन में कटौती और कम लाभ मार्जिन जैसी बाधाएं होंगी। कोरोना ने देश की अर्थव्यवस्था को काफी नुकसान पहुंचाया है। लॉकडाउन से पूर्व ही अर्थव्यवस्था लड़खड़ा गई है। अब जीने-मरने का सवाल उत्पन्न हो गया है। अर्थव्यवस्था वेंटिलेटर पर है। हमारी अर्थव्यवस्था तभी गतिशील रहेगी, जब देश में मांग की स्थिति बनी रहेगी और उत्पादन होता रहेगा। मगर लॉकडाउन के दौरान अधिकांश उत्पादन ठप रहा। लोग सामान खरीद नहीं पा रहे थे। ज्यों-ज्यों लॉकडाउन खुलने लगा, त्यों-त्यों कोरोना पीड़ितों की संख्या बढ़ रही है। अर्थशास्त्री अरुण कुमार ने भी माना है कि जानमाल को तबाही को रोकने में लॉकडाउन कारणर साबित हुआ है, लेकिन इसे और भी बेहतर बनाया जा सकता है।



## वर्तमान संदेश कोरोना वायरस का शिक्षा पर प्रभाव

इशा राय

योगेश्वर

महाराज विनायक, ग्लोबल यूनिवर्सिटी, जयपुर

### कई साल पीछे चली जाया देश की शिक्षा व्यवस्था

बोला एक साल पूरे विश्व के लिए एक ऐसी चुनौती लेकर आया जिसके लिए दुनिया का कोई भी देश तैयार नहीं था। विश्व का हर क्षेत्र इससे प्रभावित हुआ। कुछ ही महीनों में हर इंसान को दुनिया बदल गई। इतना ही नहीं हजारों लोगों को अपने जीवन से हाथ तक धीरे पड़ा। कोरोना वायरस के कारण व्यापार हो या शिक्षा सबको जिंदगी धम सी गई।

### 190 देशों के करीब डेढ़ लाख लोगों को मृत्यु

कोविड-19 ने दुनिया के 150 देशों पर अपना कहर बरपाया। लाखों लोग बीमार पड़े हैं। हर दिन बॉनारों और मौत के आंकड़े बढ़ते जा रहे हैं। जो लोग इस वायरस के प्रकोप से बचे हुए हैं उनका रहन-सहन भी बदल गया है। लोग अपने घरों में कैद हो गए हैं और आपसो सव्यन्ध सोशल डिस्टेंसिंग के शिकार हो गए हैं। वायरस के दुनिया में कहर बरपाने को शुरूआत पर गौर करें तो, ये वायरस दिसंबर 2019 में चीन के वुहान शहर में पहली बार सामने आया था। उसके बाद से दुनिया में सब कुछ जलट-पुलट हो गया। वर्तमान समय में, कोरोना वायरस के 190 से भी अधिक देशों में फैल चुका है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने इस वायरस को महानारों घोषित कर दिया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, 15 अप्रैल 2020 तक दुनियाभर में इस बीमारी से लगभग 1.34 से ज्यादा लाख लोगों की मृत्यु हो चुकी है। 24 दिसंबर 2020 तक के आंकड़ों के मुताबिक अभी तक दुनिया भर में 79,177,742 कोरोना के केस सामने आ चुके हैं। वहीं, 17,40,245 को इस महामारी के चलते मौत हो चुकी है। हालांकि इस सबके बीच राहत का खबर यह है कि इसमें से 55,769,907 लोग इस बीमारी से ठीक भी हुए। बीमारों को चंपट में आएं देशों पर नजर डालें तो इनमें विकसित देशों की 50 प्रतिशत आबादी इस बीमारी को चंपट में आई। इन देशों में अमेरिका, इटली, जर्मनी, फ्रांस और ब्रिटेन जैसे विकसित देश शामिल हैं।

### शिक्षा व्यवस्था पर प्रश्न

21वीं शताब्दी में अभी तक की सबसे बड़ी समस्या या काल के रूप में सामने आए कोरोना वायरस ने ना केवल किसी देश के लोगों के स्वास्थ्य पर प्रहार किया है। बल्कि इसने किसी भी देश की रीढ़ समझे जाने वाली अर्थव्यवस्था, शिक्षा, रक्षा और स्वास्थ्य विभागों तक को बुरी तरह से प्रभावित कर दिया है। अकेले भारत की बात करें तो देश के प्रधान मंत्री नरेंद्र

मोदी ने कोविड-19 के खतरे को भांगते हुए 24 मार्च में 3 मई 2020 तक करीब 40 दिनों तक पूर्ण लॉकडाउन रखने की घोषणा की। देश की जनता ने भी इसका पालन किया। इस लॉकडाउन में सारे विद्यालय, कॉलेज व अन्य उच्च शिक्षण संस्थान पूरी तरह से बंद रखे गए। जिस कारण इसका सीधा असर देशभर के विद्यार्थी वर्ग पर देखने को मिला।

### जिस कारण इसका सीधा असर देशभर के विद्यार्थी वर्ग पर देखने को मिला।

इतिहास का सबसे बड़ा शिक्षा संकट संयुक्त राष्ट्र महासचिव के शिक्षा पर दिए गए बयान पर गौर करें तो उनके मुताबिक, कोविड-19 महामारी ने इतिहास में शिक्षा के क्षेत्र में अर्थ का सबसे बड़ा अर्थोपद्रव पैदा किया है, जिससे सभी देशों और महाद्वारों के करीब 1.6 अरब छात्र प्रभावित हुए हैं। इसमें अलावा करीब 2.38 करोड़ बच्चों अगले साल स्कूल की पढ़ाई बीच में छोड़ सकते हैं। दुनिया में यह अभी तक इतिहास का सबसे बड़ा शिक्षा संकट होगा। जिसके चलते छात्र ठक चले हैं और सफल शिक्षा का अधिकार अभियान भी कई साल पीछे चलना जाएगा।

### आ रहे सफल शिक्षा का अधिकार अभियान भी कई साल पीछे चलना जाएगा।

भारत में 32.06 करोड़ छात्र प्रभावित  
संयुक्त राष्ट्र शैक्षणिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) द्वारा जारी एक रिपोर्ट के मुताबिक कोरोना महामारी से भारत में लगभग 32.06 करोड़ छात्रों को शिक्षा प्रभावित हुई है। जिसमें 15.81 करोड़ लड़कियां और 16.25 करोड़ लड़के शामिल हैं। स्कूल बंद होने का सबसे अधिक असर वंचित तबकों के छात्रों एवं लड़कियों पर ज्यादा पड़ा है। इन साल 10वीं, 12वीं और उच्च शिक्षा की परीक्षाएं दे रहे छात्रों के कुछ पंचर होने रह गए हैं। जिससे इन सभी विद्यार्थियों को मुसीबतों का सामना करना पड़ रहा था। दसवीं और बारहवीं कक्षाओं के छात्र रिजल्ट को लेकर और अधिक चिंतित थे, क्योंकि यह कक्षाएं एंट्रेंस हैं, जिनमें एक विद्यार्थी के भविष्य का पथ निर्धारित होता है। यह विद्यार्थी के जीवन का महत्वपूर्ण पहलू और दूसरी सीढ़ी है। लेकिन यह वर्ष कोरोना को बजह से दोनों कक्षाओं के छात्रों के लिए संकट की घड़ी बन गया। लॉकडाउन से बंद पड़े शिक्षा संस्थानों से नए एडमिशन होने की तारीख भी टाल दी गयी। स्वाभाविक बात है कि अगर पंचर लेट होने तो रिजल्ट भी लेट आया। केवल छात्र ही नहीं उनके अभिभावक भी अपने बच्चों के कॉलेज को लेकर चिंतित हैं। कई महत्वपूर्ण उच्च परीक्षाएं भी टाल दी गयी हैं जिससे दिल्लो उच्च न्यायिक सेवा मेन जैसी परीक्षाएं भी शामिल हैं। शिक्षा विभाग ने आदेश जारी करते हुए नर्सरी से लेकर आठवीं तक, नौवीं और ग्यारहवीं कक्षा के सभी विद्यार्थियों को बिना पंचर दिए ही पास कर दिया था।

### शिक्षकों ने निभाई अभूतपूर्व जिम्मेदारी

कोरोना महामारी के कहर के बीच चूँ तो हर विभाग ने अपनी जिम्मेदारी बखूबी निभाई। लेकिन, इन सब के बीच देश के शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों ने अपनी भूमिका एक नए आयाम पर जाकर निभाई। शिक्षकों ने छात्रों को पढ़ाने के लिए ऑनलाइन कक्षाओं का एक बेहतर विकल्प निकाला। जिससे प्रतिदिन लाखों छात्र अपने अध्यापकों से ऑनलाइन माध्यम के जरिये जुड़ पाए और अभी भी अपनी समस्याओं का समाधान पाकर पढ़ाई कर रहे

**उत्तम संदेश** उत्तम लाल माला विद्यालय, लखीमपुरा जिला, हरियाणा

है। इस ऑनलाइन क्लास में भी दो तरफा संचार की सुलभता होने से अध्यापकों व छात्रों बीच विद्यालय और कॉलेज जैसा ही संपर्क हो पा रहा है। ऑनलाइन क्लास आज डिजिटलीकरण दौर की मांग व जरूरत है। इस बात का महत्व समझते हुए मानव विकास संसाधन मंत्री रमेश पोखरियाल 'निशंक' की ओर से कहा गया है कि केंद्र सरकार ने "भाषा पढ़े ऑनलाइन" अभियान की शुरुआत की है। इसका सबसे बड़ा फायदा यह हुआ है कि इससे जो छात्र कक्षा में शर्म के कारण प्रश्न नहीं पूछ पाते हैं, वे ऑनलाइन फीस सस्ती होने के अपने समस्या खुलकर पूछ लेते हैं। कुछ विशेष कोर्स की ऑनलाइन क्लास करने के ज्यादा छात्र इसका अधिक लाभ उठा पा रहे हैं। लॉकडाउन होने से ऑनलाइन क्लास के महत्ता को छात्र अधिक समझ पाने में सक्षम हुए हैं। लॉकडाउन की स्थिति में शिक्षा स्तर पढ़ने वाले नकारात्मक प्रभाव को ऑनलाइन क्लासों ने बहुत कम करने का काम किया। इतना ही नहीं सीबीएसई ने भी शिक्षकों और छात्रों की समस्या का समाधान करने के लिए सभी पुस्तकों को ऑनलाइन कर दिया है। साथ ही विद्यार्थियों की समस्याओं के निवारण के लिए टोल फ्री हेल्पलाइन शुरू की ताकि छात्रों को किसी प्रकार की कोई भी समस्या न हो।

**चुर्नाती भी है ऑनलाइन शिक्षा**

लॉकडाउन के समय ऑनलाइन शिक्षा का उपयोग अब बढ़े स्तर पर हो रहा है, भारत जैसे विकसित देशों में ये जहाँ अच्छा भी है तो वहीं ऑनलाइन शिक्षा व परीक्षा के दुष्परिणाम भी हैं। पिछले कुछ सालों में जिस तरह से डाटा चोरी और परीक्षाएं लीक होने में वृद्धि हुई है। उसमें ऑनलाइन शिक्षा का क्षेत्र सबसे आगे है। विश्व के विकसित देशों में भी यह बड़ी समस्या है। यूएन वॉर्ड 10 वीं परीक्षा का सामाजिक विज्ञान, एएसई, रेलवे भर्ती वॉर्ड (आरआरबी) के जूनियर इंजीनियर भर्ती परीक्षा के प्रश्न-पत्र और इंडियन एयरफोर्स के तकनीकी पदों के लिए हुए महत्वपूर्ण परीक्षाओं का लीक होना इसकी सबसे बड़ी खामोश व लापरवाही को दर्शाता है। कोरोना को लेकर आम आदमी द्वारा सहयोग के लिए बनाए गए पत्र "पाएनकेयर्स फंड" का भी देश के कुछ गलत लोगों ने फेक अकाउंट तक बना डाला। ऐसे गतिविधियों में देशवासियों और परीक्षार्थियों का हांसला व विश्वास टूट जाता है। इसका अलावा देश में एक बर्ग ऐसा भी है जहां छात्रों के पास मोबाइल फोन तक उपलब्ध नहीं है। ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम बहुत महंगे आते हैं जिन्हें कम ही परिवार खरीदने में असमर्थ होते हैं। इससे गरीब परिवार ज्यादा प्रभावित हुए हैं।

**सरकार को उठाने होंगे अहम कदम**

सरकार द्वारा 2021 में 100 उच्च शिक्षा संस्थानों को खोलने की बात पर उन्हें ध्यान देना होगा। शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे निरन्तर तकनीकी सुधारों को ना केवल प्राइवेट स्कूलों तक बल्कि सरकारी स्कूलों को भी ऐसे सुधारों से लैस करना चाहिए। प्राइवेट शिक्षा संस्थान में हो रही फीस बढ़ावों को लेकर की जा रही मनमर्जी पर कड़े एक्शन लेने होंगे। साइबर क्राइम के बढ़ते मामलों पर विशेष रूप से ध्यान देना होगा। ताकि किसी भी प्रकार से ऑनलाइन



## कोविड-19 की विभीषिका एवं भारत

डॉ. मनोज कुमार तोमर

असिस्टेंट प्रोफेसर

राजकीय कन्या महाविद्यालय, सवाई माधोपुर

चीन के बुहान शहर से निकला कोविड 19 वायरस पूरी दुनिया को अपनी चपेट में ले चुका है। जिसने समस्त देशों को आर्थिक, सामाजिक एवं प्रौद्योगिक विकास को पूरी तरह से तहस-नहस कर दिया। विषाणु के इस तांडव ने जहाँ एक तरफ कुछ प्रचलित मिथकों पर प्रश्नचिह्न लगाया है वहीं कुछ चुनौतियाँ भी हमारे सामने खड़ी की हैं। जिसके कारण हमारे युवा, राजनेता, विकिस्तक एवं नौकरशाहों के सामने एक नई तरह की रणनीति बनाने की आवश्यकता आ गई है। भारत में 24 मार्च 2020 को लॉकडाउन की घोषणा कर दी थी उसी दिन से सभी लोग घरों में दुबके डरे सहमे अपन टेलीविजन सेट एवं मोबाईल स्क्रीन से चिपक कर देश-विदेश के समाचारों से अपने आप को सम्भालने के प्रयास में लग गये। मीडिया पर आने वाली खबरें व्यक्तियों को सन्तुष्ट करने की बजाय डरावनी तस्वीर अधिक पेश कर रही थी। वायरस के संक्रमण के प्रथम काल में समस्त मीडिया का का उद्देश्य किसी वर्ग विशेष को दोषी देना करार ही रहा, जबकि इसकी जड़ में अनेक कारक थे। पूरे देश में अविश्वास की एक लकीर खींचती दिखाई दी। देश के अनेक स्थानों पर कोरोना वारियर्स पर होने वाले हमले भी किसी भी तरह से न्याय संगत एवं तर्कसंगत नहीं कहे जा सकते। वर्तमान में सम्पूर्ण विश्व जिन कुछ मिथकों के साथ जीवित था उसमें तो कुछ सिद्धान्त तो पूर्ण रूप से सार्वभौमिक रूप से मान्य हो चले थे। जिसमें से प्रथम मान्यता है कि यूरोप एवं अमेरिका का ज्ञान सर्वोत्तम एवं सभी समस्याओं को हल करने वाला है। दूसरी मान्यता है कि वैश्वीकरण ही सभी समस्याओं का हल है जबकि तीसरी मान्यता यह है कि सामाजिक कल्याण का यह क्षेत्र व्यर्थ या अनप्रोडेक्टिव है जो मात्र घाटे का बड़ावा देता है। यहाँ यदि हम यूरोप के ज्ञान, बौद्धिक क्षमता, विकिस्ता सुविधा एवं प्रौद्योगिक विकास की बात करें तो निश्चित रूप से यह सभी सर्वोत्तम मानी जाती हैं, परन्तु क्या कारण है कि संक्रमण की प्रसार दर एवं मृत्यु दर में यूरोपीय देशों एवं अमेरिका का ही बोल-चाला है। आंकड़ों के अनुसार अमेरिका, फ्रांस, स्पेन, इटली एवं थाइलैण्ड जो विश्व की कुल जनसंख्या 780 करोड़ का मात्र 7.16 प्रतिशत जनसंख्या रखते हैं। दिनांक 03.05.2020 कोरोना वर्ल्ड मीटर के आंकड़ों के अनुसार सम्पूर्ण संक्रमित व्यक्तियों का 56.2 प्रतिशत इन्हीं देशों से आता है एवं सम्पूर्ण मृत्यु में यह आंकड़ा 71.1 प्रतिशत तक पहुँच जाता है। यूरोप और अमेरिका अपनी सम्पूर्ण बौद्धिक क्षमता को लगाकर आज तक यह ज्ञात नहीं कर पाये हैं कि कोविड 19 नामक विषाणु प्राकृतिक है या किसी लैब

में कृत्रिम रूप से बनाया गया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की चीफ साइंटिस्ट डॉ. सोम्या स्वामीनाथन में अपने साक्षात्कार में इसे पूर्ण रूप से प्राकृतिक बताया। सोम्या स्वामीनाथन आगे कहती हैं कि 30 जनवरी 2020 को विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 'विश्वजन स्वास्थ्य आपातकाल' की घोषणा कर दी थी। लेकिन उसके पश्चात् भी अमेरिका एवं यूरोपीय देशों ने इस घोषणा को गम्भीरता से नहीं लिया। यहाँ यह उल्लेख करना आवश्यक है कि विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अपने सम्पूर्ण इतिहास में केवल एक बार ही इस प्रकार के आपातकाल की घोषणा की है। अमेरिका एवं यूरोपियन देश बार-बार विश्व स्वास्थ्य संगठन पर चीन की तरफदारी का आरोप लगाकर कहते हैं कि विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इसे महामारी घोषित करने में जानबूझकर देरी की जिसके कारण हालात बद से बदतर हुए, जबकि विश्व स्वास्थ्य संगठन का तर्क है कि आज तक पेंडिमिक शब्द का प्रयोग केवल इन्फ्लूएन्जा डीजीज (रलैप्पिक ज्वर) में ही किया जाता है। इसी कारण इसे 11 मार्च 2020 को पेंडिमिक घोषित किया गया। दूसरा बड़ा मिथक कि वैश्वीकरण ही एक मात्र सभी समस्याओं का निदान है। जिसमें सबसे बड़ा महत्व सामूहिक एवं साझा व्यापार परन्तु एकल संकट सिद्धान्त पर कार्य किया जाता है। वैश्वीकरण के इस दौर में संकट के समय सभी बड़े-बड़े राष्ट्र एकल संकट का राग अलापते हुये अपना राग बजाते फिर रहे हैं। अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों की भूमिका संदेह पैदा करती रही एवं राष्ट्र विशेष अपने-आप को इन संगठनों से बड़ा साबित करने में लगे रहे। भारत जैसे विकासशील राष्ट्र के सन्दर्भ में तीसरे मिथक पर बात करना अति आवश्यक हो जाता है। जिसके आधार पर सामाजिक या सामुदायिक कल्याण को घाटे का सौदा माना जाता है। स्मरण रहे कि सामाजिक मूल्यों के सोपानों पर सामुदायिक कल्याण भी सर्वोच्च पायदान पर माना जाता है। जिसका समाजशास्त्रीय महत्व यदि सभी राष्ट्र विशेषकर विकसित राष्ट्रों ने समझकर इन मूल्यों को आत्मसात किया होता तो शायद इस विषाणु से फैंली महामारी शायद अस्तित्व में नहीं आती।

क्या गाँव क्या शहर क्या अमीर क्या गरीब सभी वर्ग इससे प्रभावित हुए। आज आवश्यकता न केवल इसके उपचार की नवीन तकनीक खोजने की है वरन समाज के जीवन जीने की रीति नीति पर पुर्नविचार करने की भी हैं। एक और जहाँ विशेषज्ञ इसके निदान व उपचार में दिनरात एक कर रहे हैं वहीं समाज वैज्ञानिक, अर्थशास्त्री एवं राजनैतिक विश्लेषक देश एवं विश्व पर पड़ने वाले प्रभावों का आकलन करने में लगे हुए हैं। भारत में राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन का प्रभाव देश की अर्थव्यवस्था पर स्पष्ट दिखाई देने लगा है। अर्थव्यवस्था के निरन्तर गतिमान रहने वाले पहिये पर विराम दिखाई देने लगा है। एवं इस सम्पूर्ण व्यवस्था के केन्द्र में बैठा वह मजदूर जो अपने खून पसीने से मुस्कुराता हुआ इसे रफार देने में लगा रहता था आज बेवस एवं लाचार कभी उन बन्द कारखानों की विमनियों की तरफ देखा है तो कभी भूख से तड़पते अपने परिवार के सदस्य की तरफ। आज वह एक अजीब दृष्ट में हैं फैंसला नहीं कर पा रहा के वह उस शहर को छोड़े जिसके लिए अपने गाँव को हजारों मील छोड़कर सुनहरे भविष्य के सपने संजोए थे। या फिर चल दे गाँव की और। देश में बेरोजगारी के

आँकड़े नियमित रूप से संग्रहित करने वाली संस्था सेन्टर फॉर मॉनिटरिंग ऑफ इण्डियन इकॉनोमी के अनुसार फरवरी माह तक 40.4 करोड़ लोग किसी न किसी तरह का रोजगार कर रहे थे। परन्तु अप्रैल माह के अन्तिम सप्ताह में इनकी संख्या 28.1 करोड़ रह गई अर्थात् 12 करोड़ रोजगार रह गये। इसी बीच मजदूरों का धैर्य टूटा और वो सभी कोई पैदल कोई साइकिल कोई अपने अपने साधनों से गाँव की ओर चला दिए। केन्द्र एवं राज्य सरकारें यह समझने में नाकाम रही। आखिर इन कामगारों का क्या किया जाए। सरकारी फरमान के अनुसार उन्हें वही रूकना होगा जहाँ वो हैं। लेकिन भारतीय सामाजिक व्यवस्था में यह इतना आसान नहीं है। यहाँ यह उद्भूत करना आवश्यक है कि सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों ने पूरे मनोयोग से इन कामगारों के लिए भोजन आदि की व्यवस्था की परन्तु परिवार के सदस्यों की मनोदशा एवं भारतीय संवेगात्मक व्यवहार उन सब को सन्तुष्ट करने में बाधक बना रहा। सामाजिक संरचना के इस ताने-बाने में एक पलित एवं परिवार के अन्य सदस्यों से एक कार्यविहीन प्रवासी कामगार का तारतम्य एक टेढ़ी खीर रहा। अप्रैल के अन्तिम सप्ताह में केन्द्र और राज्य सरकारें इस विषय पर गम्भीर नजर आई और रेलगाड़ी एवं बस सेवा प्रारम्भ करने की पहल की गई। हजारों लाखों प्रवासी मजदूर अनेक परेशानियों से जूझते हुए जब अपने गाँव पहुँच रहे हैं। तो उन्हें एक अलग तरह की सामाजिक व्यवस्था से सामना करना पड़ रहा है, जिस सुरक्षा, लगाव एवं अपनेपन की आशा में यह लोग अपने अपने गाँव पहुँच रहे हैं उन्हें उस आत्मीयता से उनके अपने गाँव में गले नहीं लगाया जा रहा है उन्हें कोविड-19 वायरस के कैरियर के रूप में देखा जा रहा है। तथा वे उन्हें गाँवों में महानगरों की कुछ सामाजिक गन्दगिरियाँ लाने का दोषी करार दिया जा रहा है समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से यदि हम किसी समस्या पर विचार कर उसके निदान या समाधान को खोजते हैं तब वहाँ की सामाजिक व्यवस्था एवं मूल्यों को समझना आवश्यक हो जाता है। हमारे गाँव आज भी पारिवारिक इतिहास के सन्दर्भ में परिवारों का नामकरण करते आए हैं एवं रोटी बेटों के इस चलन में पारिवारिक इतिहास बहुत बड़ी भूमिका निभाता है। कोरोना काल में प्रचलन में आया शब्द सोशल डिस्टेंसिंग हमारी जाति व्यवस्था में घुलकर विभिन्न जातियों एवं वर्गों से स्थायी रूप से सोशल डिस्टेंसिंग को बढ़ावा देकर कहीं स्थान न हो जाए इस पर विचार करना आवश्यक है। सामाजिक विश्लेषण के अतिरिक्त अर्थव्यवस्था को भी पटरी पर लाना आवश्यक है। यदि यह लोकडाउन जल्द ही पूर्णरूप से समाप्त भी हो जाए तो भी उद्योगों को इसकी काली छाया से निकलने में महिनों लग जाएंगे। प्रमुख शोध एजेन्सी डन एण्ड ब्रैडस्ट्रीट देश के 16 प्रमुख उद्योग और इन पर कोविड-19 के प्रभाव पर एक रिपोर्ट प्रस्तुत की है। जिसके अनुसार 9 ऐसे उद्योग हैं जो तालाबंदी एवं अन्तर्राष्ट्रीय हालात से काफी लम्बे समय तक प्रभावित रहेंगे इसमें पर्यटन, ऑटोमोबाइल, मनोरंजन, इलेक्ट्रॉनिक्स, हॉस्पिटैलिटी, बैंकिंग, रत्न एवं आभूषण कारोबार, इलेक्ट्रिकल एवं छोटे एवं मझोले उद्योग सेक्टर प्रमुख है। यह सर्वाधिक है कि देश में रोजगार पैदा करने में इन सभी उद्योगों की भूमिका अति महत्वपूर्ण है। इसके अतिरिक्त रिपोर्ट के अनुसार ड्रग्स एवं फार्मास्यूटिकल्स, रिटेल, थोक कारोबार, टेक्सटाइल व लाईव स्टीक पर

फ़लहाला असर तो होगा पर यह असर बहुत दिनों तक दिखाई नहीं देगा। रिपोर्ट में सर्वाधिक चिन्ता एन.पी.ए. पर है जिसके अनुसार बैंकों में फँसे कर्ज की समस्या समय पर कर्ज का पैसा नहीं लौटाना जैसे घटना या समस्या केन्द्रीय बैंक के अनुमान से कहीं अधिक होंगी। सर्वाधिक एवं सर्वाधिकृत है कि कोविड-19 विषाणु ने केवल भारत वरन् पूरे विश्व को आर्थिक एवं सामाजिक आघातों पर बहुत अधिक प्रभावित किया। अब प्रश्न यह उठता है कि भारतवर्ष अपने आप को इन समस्याओं से किस प्रकार बाहर निकाले। भारत का प्रत्येक नागरिक इस दृष्ट में है कि हमारी रीति-नीति किस प्रकार की होगी। सरकार द्वारा समय-समय पर जारी दिशा निर्देशों का देश के नागरिकों ने पालन कर सरकार को अपनी प्रतिबद्धता का प्रमाण दे दिया है। आज प्रत्येक नागरिक हमारे राजनेताओं एवं नीति निर्धारण में उच्च स्तर पर पदासीन नौकरशाहों की ओर टक-टकी लगाकर देख रहे हैं कि वो ऐसी कौनसी तरकीब निकाले जिससे देश इस विपदा से बाहर निकाल कर तेजी से विकास के मार्ग पर अग्रसर हो सके। केन्द्र एवं राज्य सरकार के स्तर पर सरकार को चलाने वाले राजनेताओं के लिए यह एक स्वर्णिम समय है जब वो अपने ज्ञान एवं दूरदर्शिता का उपयोग कर अपने सम्पूर्ण राजनीतिक एवं अन्य स्वार्थी को त्यागकर जनता को एक नवीन सुदृढ़ भारत की तस्वीर पेश करें जिससे जनता को भी उन पर नाज हो और वो एक बार फिर अपने आप को ठगा सा महसूस ना करें। कुछ सुझाव जनता भी दे सकती है उन पर भी विचार करके कुछ सार्थक परिणाम निकाले जा सकते हैं। इस सन्दर्भ में मेरे अपने विचार हैं कि -

1. **अर्थव्यवस्था के लिए तुरन्त एक नवीन राष्ट्रीय योजना बनाई जाये -** अर्थव्यवस्था को मजबूत करना आज हमारा प्रथम लक्ष्य होना चाहिए जिसके लिए केन्द्र एवं राज्य सरकार सभी दलों के सदस्य एवं देश के प्रबुद्ध अर्थशास्त्री मिल कर एक ऐसी नई आर्थिक नीति बनाए जिसमें तीन मुख्य बिन्दु हों प्रथम - लोगों के रोजगार को कैसे बचाये, द्वितीय नये रोजगारों का सृजन किस प्रकार करें तथा तृतीय वर्तमान में विद्यमान रोजगारों से लोगों को तुरन्त जोड़ा जाये। देश में पहले से चल रही योजना मनरेगा एक बड़ा प्लेफार्म हो सकती है इस योजना के क्षेत्र को बढ़ाकर शहरी क्षेत्र को भी इसमें जोड़ा जा सकता है तथा इसका बजट बढ़ाया जा सकता है जो न केवल शहरी प्रवासी मजदूरों का पलायन रोकने में मदद करेगा वरन् भूखे परिवारों को ठण्डा नहीं होने देगा। मनरेगा के सन्दर्भ में एक योजना का प्रारूप अजीज प्रेमजी विश्वविद्यालय के प्रोफेसर श्री अमित कुमार और राजेन्द्र बत्ता चुके हैं। इस योजना के प्रारूप में यथोचित परिवर्तन कर इनको लागू किया जा सकता है।

2. **स्वच्छ भारत अभियान की तर्ज पर स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ करने के लिए एक आन्दोलन चलाया जाये -** नोबेल पुरस्कार विजेता अर्थशास्त्री प्रो. अर्मुत्य सेन ने कहा है कि भारत जैसे विकासशील देश को अपनी स्वास्थ्य सेवा एवं शिक्षा व्यवस्था को मजबूत करना चाहिए। भारत में वर्ष 2013-14 में सरकार ने जी.डी.पी. का 1.2 प्रतिशत स्वास्थ्य पर खर्च किया, वर्ष 2016-17 में इसे बढ़ाकर 1.4 प्रतिशत



इस दौर में भी हमारे कृषि एवं पशु-पालन में किसी भी प्रकार से कमी आई है और ही उत्पादों के दाम बढे हैं। आज भी किसान का गेहूँ 1800 से 2000 रुपये क्विंटल खरीदा जा रहा है और उसी गेहूँ का आटा 3500 से 4000 रुपये क्विंटल विक्र रहता है। यह अर्थशास्त्र समझ से परे है। यही वह कारण है कि किसान का बेटा किसानी छोड़ शहर में मजदूरी करने आता है और मुम्बई जैसे महानगरों में धारावी जैसी एशिया की सबसे बड़ी गन्दी बस्ती (स्लम) को जन्म देता है। महात्मा गाँधी आज एक बार फिर प्रासंगिक हो जाते हैं जो अपने पूरे जीवन काल में गाँव एवं लघु उद्योग की वकालत करते रहे एवं भारत को आत्मनिर्भर बनाने का रास्ता गाँवों के बीच से देखते रहे।

7. राजनीति को एक आर्दश रूप दिया जाये - प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया व ब्रैकिंग न्यूज एवं तस्वीरें हमें विचलित करती हैं। जिसमें प्रवासी मजदूरों की दुर्दशा, स्वास्थ्य व्यवस्थाओं की बदइंतजामी एवं भूख से संतान का कष्ट न झेल पाये एवं असहाय मजदूर मजदूर वाप की आत्महत्या की तस्वीरें किसी भी संवेदनशील व्यक्ति को विचलित कर सकती हैं। प्रत्येक नागरिक हसरत भरी नजरों से सरकार की ओर देख रहा है। निश्चय ही दो विपरीत विचारधारा जब केन्द्र में राज्य में सरकार चलाती है उनमें विरोधाभास दिखाई देना एक साधारण बात है। परन्तु ऐसे विशिष्ट अवसर पर हम राजनीति के स्तर को ऊँचा कर आर्दश राजनीति का स्वरूप अपने राजनेताओं से अपेक्षा करते हैं। आज हमें वास्तविकता पर ध्यान देने की आवश्यकता है न कि सुविधा से उनकी आलोचना या विरोधी दल की प्रत्येक सलाह में गलती निकालकर उसको खारिज करने की।

8. समाज में सहयोग की भावना विकसित की जाये - किसी भी समाज या राष्ट्र के लिए किसी भी प्रकार के आपातकाल से जूझना या जीतना तब तक नामुकिन है जब तक उस राष्ट्र के जनमानुष सरकार एवं राजकीय संस्थाओं में सहयोग की भावना से कार्य ना करे। भारतीय संघीय ढांचे के अन्तर्गत केन्द्र सरकार राज्य की इकाइयों को संचालित नहीं कर सकती। राज्यों को एवं अपने स्वास्थ्य एवं कानून व्यवस्था का दायित्व स्वयं निभाना होता है। केन्द्र सरकार का मुख्य कार्य दिशानिर्देश देकर और समन्वय बनाकर उनका पालन करना था परन्तु राज्य एवं केन्द्र के बीच एक टकराव दिखाई दिया जिस कारण कुछ राज्य केन्द्र पर एवं केन्द्र राज्यों पर दोषारोपण करने लगे, जिसका परिणाम जनता ने भुगता। आने वाले समय में विभिन्न राज्यों में सूखा-बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदा आने वाली है। अतः न केवल राज्य व केन्द्र सरकार बल्कि आम नागरिकों को भी सहयोग की भावना से कार्य करना होगा तभी हम इस विश्वव्यापी महामारी से जंग जीतकर एक सुनहरे भारत की नींव रख सकेंगे।

## कोरोना काल में ऑनलाइन शिक्षण का स्वरूप व प्रभाव

मुकेश जैन

असिस्टेंट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग

राजकीय महाविद्यालय, गुडामालनी (बाड़मेर) राजस्थान

आज के इस आधुनिक-वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में इन्टरनेट व डिजिटल उपकरणों के बिना कुछ भी संभव नहीं है। हाल ही में इसका जीता-जागता उदहारण 'ऑनलाइन शिक्षण' है। शिक्षण शब्द संस्कृत के 'शिक्ष' धातु से बना है। शिक्षण शब्द सीखना एवं सीखाना, अधिगम एवं अध्यापन की प्रक्रिया से सम्बंधित है। जब यह प्रक्रिया ऑनलाइन रूप में संचालित की जाए तो इसे ऑनलाइन शिक्षण कहते हैं। कोरोना महामारी के भयंकर कहर के चलते इसी माध्यम से ही पढाई संभव हो पा रही है। साल 2020 की लगभग शुरुआत में ही कोरोना ने अपनी जड़ें भारत में जमानी शुरू कर दी थी, परन्तु सरकार व जनता की वजह से हमारे हालात अन्यो की तुलना में कुछ बेहतर है। ऐसे हालातों में पढाई करना नामुमकिन हो जाती, यदि आज टी.वी. और मोबाइल फोन नहीं होते। अध्ययन के मामले में सरकार हर उस साधन से अध्ययन को प्रोत्साहन दिया है, जो आजकल हर घर में होता है चाहे वो रेडियो हो, मोबाइल हो या फिर टी.वी. हो। राजस्थान के सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए 1 जून से रेडियो व दूरदर्शन पर पाठ्यक्रम के अनुसार पढाई शुरू की जाएगी। 2 घंटे नौर्वी से ग्याहरवी तथा 75 मिनट पहली से आठवीं तक के विद्यार्थियों की पढाई होगी। विभाग का यह भी प्रयास रहेगा कि वे पांचवी तक के बच्चों के लिए कार्टून कार्यक्रम का प्रसारण कर सके। जिस प्रकार किसी भी बात के दो पक्ष होते हैं उसी प्रकार इस शिक्षण पद्धति के भी सकारात्मक एवं नकारात्मक दो पहलू हैं-

1. सकारात्मक प्रभाव कोरोना वायरस जनित प्रभाव को इसके नुकसान को कम करने के लिए केंद्र सरकार ने 'भारत पढ़े ऑनलाइन योजना' पर काम शुरू कर दिया है। इसे और बेहतर बनाने के लिए इसमें जनता से सुझाव भी मांगे हैं। स्कूली शिक्षा, कॉलेज स्तर के इंजीनियरिंग और व्यावसायिक पाठ्यक्रम भी यथासंभव ऑनलाइन शुरू हो रहे हैं। कोचिंग संस्थान भी ऑनलाइन योजना पर काम करने के लिए जुड़ गए हैं। सिविल सेवाओ एवं बड़ी-बड़ी भर्ती परीक्षाओं के लिए भी ऑनलाइन शिक्षण की व्यवस्था आरम्भ हो रही है। 2 इस प्रकार की व्यवस्था से कोचिंग के लिए प्रसिद्ध नगरों जैसे कोटा, दिल्ली आदि में भार कम होगा। परिजनों के लिए सबसे बड़ा फायदा हो सकता है कि बच्चा घर बैठकर भी उच्च स्तर की शिक्षा सामान्य खर्च पर प्राप्त कर सकता है। आने वाले समय में हो सकता है कि पाठ्यक्रम का एक बहुत बड़ा भाग ऑनलाइन पढाया जाए एवं कुछ विशिष्ट टॉपिक ही कक्षा में बैठकर प्रत्यक्ष तौर पर पढ़े जाएं।

ऑनलाइन शिक्षण का एक बहुत बड़ा लाभ पर्यावरण के दृष्टिकोण से भी है। ऑनलाइन शिक्षण से पेपर की बचत होती है, पेपर की बचत से कई पेड़ कटने से बच जाते हैं और पेड़ों के बचने से पर्यावरण की रक्षा होती है। इस प्रकार ऑनलाइन शिक्षण से अप्रत्यक्ष रूप से वर्तमान की सबसे बड़ी समस्या पर्यावरण की हानि को बचाने में भी सहायक है। वर्तमान में सेमीनार जो कि वेबीनार के रूप में परिवर्तित हो चुका है, ऑनलाइन शिक्षण का एक श्रेष्ठ माध्यम साबित हो रहा है। मैं मेरे व्यक्तिगत अनुभव की बात करूँ तो मैं पिछले दो माह में ऑनलाइन वेबीनार के द्वारा जितनी वार्ताएं सुनी, उतने सेमीनार सहायक आचार्य पर पर रहते हुए गत डेढ़ वर्ष में मैं भाग ग्रहण नहीं कर सका। इसका सबसे बड़ा कारण कि मेरे यात्रा व्यय की बचत हुई, मेरे समय की बचत हुई तथा मैं अन्य कई समस्याओं से भी स्वयं को बचा सका। उन सुदूर भागों में आयोजित वेबीनार को भी अटेंड किया जा सकता है जिनको यात्राद सेमिनार के रूप में इच्छा होते हुए भी कई कारणों से विचार त्याग करना पड़ता है।

के.पी.एम.जी. व गूगल द्वारा किये गए अध्ययन ऑनलाइन एजुकेशन इन इंडिया 2021 के मुताबिक भारत में ऑनलाइन शिक्षा का बाजार 2021 तक बढ़कर 1.96 अरब डॉलर होने की उम्मीद है। उच्च करियर आकांक्षाओं और कम आय के साथ भारतीय आबादी का एक बड़ा हिस्सा ऑनलाइन शिक्षा के लिए अच्छा बाजार हो सकता है। सरकार को महात्वाकांक्षी परियोजना डिजिटल इंडिया 1.3 अरब से अधिक की आबादी, हाई स्पीड नेट की उपलब्धता, स्मार्ट फोन का उपयोग व तकनीकी रूप से संचालित कार्ययोजना के साथ देश में ऑनलाइन शिक्षा से लाभ प्राप्त करने की अपार सम्भावना है।

ऑनलाइन एजुकेशन के लाभों में सबसे बड़ी बाधा हाई स्पीड डेटा व डाउनलोड की है। हाल ही में ऑस्ट्रेलिया में स्वाइनबर्न, मोनाश और आर.एम.आई.टी. विश्वविद्यालयों के शोधकर्ताओं की टीम ने 44.2 टेराबिट्स प्रति सेकंड की रिकॉर्ड डेटा स्पीड दर्ज की जो ऑस्ट्रेलिया सरकार के स्वामित्व वाले नेशनल ब्रॉडबैंड नेटवर्क कनेक्शन की गति से एक लाख गुना तेज है। शोधकर्ताओं की उम्मीद है कि इस तकनीक के जरिये भविष्य में सस्ता और बेहतर इन्टरनेट मिल पायेगा। यह शोध यदि सफल होता है तो ऑनलाइन शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी होगा क्योंकि वर्तमान की सबसे बड़ी समस्या ही उपलब्ध कंटेंट का शीघ्रता से डाउनलोड न होना अथवा इन्टरनेट स्पीड के कारण शिक्षा में उपस्थित होने वाली बाधा है।

ऑनलाइन पाठ्यक्रमों का सबसे बड़ा लाभ है कि केवल बुनियादी तौर पर इन्टरनेट, ऑडियो, वीडियो की जानकारी होने पर इसका उपयोग किया जा सकता है। विद्यार्थी अपनी सुविधा व समय के अनुसार उपलब्ध कंटेंट का उपयोग कर सकता है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उपलब्ध सूचना व मान्यता प्राप्त विशेषज्ञों के ज्ञान को इच्छुक व्यक्ति स्वतंत्रतापूर्वक प्राप्त कर सकता है। इस लोकडाउन की अवधि ने कई विद्यार्थियों को अल्पसंख्यक ऑनलाइन सामग्री के समीप ला दिया है। इसी समस्या को अब ध्यान में रखते हुए यू.जी.सी. ने आई.सी. टी. का प्रयोग करते हुए ऑडियो, वीडियो व टेक्स्ट कंटेंट प्राप्त करने के लिए 10 लिंक बताये

हैं, वहीं शिक्षकों के लिए भी पोर्टल के जरिये रिसर्च जनरल पढ़ने की सुविधा है यूजी/पीजी है, वहीं शोध गंगा (260000 से अधिक ई-थीसिस), सी.ई.सी.-यू.जी.सी. यू-ट्यूब चैनल, नूक्स, ऑनलाइन कोर्स, विद्वान (फैकल्टी के लिए), ई-शोध सिन्धु (रिसर्च स्कोलर व स्वयं ऑनलाइन), ई-पी.जी. पाठशाला (23000 से अधिक मोड्यूल), स्वयंप्रभा (32 डी.टी.एच. शिक्षक), ई-पी.जी. पाठशाला (23000 से अधिक मोड्यूल), स्वयंप्रभा (32 डी.टी.एच. शिक्षक)।

वर्तमान में व्हॉट्सएप ग्रुप भी पढ़ाई का सशक्त माध्यम बनकर उभर रहे हैं। कई विद्यालय एवं महाविद्यालय अपने-अपने विभागों के आदेशों की अनुपालना में कक्षा व विषय के अनुसार व्हॉट्सएप ग्रुप बनाकर लोकडाउन की अवधि में शिक्षण कार्य को सुचारू रूप से जारी रखे हुए थे। राजस्थान में भी आयुक्तालय कॉलेज शिक्षा के आदेशानुसार व्हॉट्सएप ग्रुप बनाकर कई उपयोगी जानकारीयों विद्यार्थियों के साथ साझा की गईं। तथा फैंकल्टी द्वारा इस अवधि में किये गए कार्यों का संग्रहण किया गया। विद्यालय स्तर पर भी ऐसे अनुपम प्रयोग किये जा रहे हैं। एन.आई.ओ.एस. ने स्वयंप्रभा चैनल पर ऑनलाइन कक्षा शुरू की है। इसमें दक्ष शिक्षकों की एक्सपर्ट टीम विषयवार जानकारी देते हैं। 6 यह NCEHT व अन्य विद्यार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो रहा है। आब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन की सीनियर फेलो डॉ. लीना वाडिया के अनुसार ऑनलाइन एजुकेशन में बड़ी समस्या शिक्षक छात्रों के पास पर्याप्त नैजेट्स नहीं होना है। एन.ई.पी. (national edu-policy) के तहत एजुकेशन से जुड़े सभी लोगों तक यह सुविधा पहुँचाना है। यह माना जा रहा है कि 2025 तक हर विद्यार्थी के पास कंप्यूटर होगा। 7

हर सिकके के दो पक्ष होते हैं, जहाँ लाभ है वहाँ हानि भी है इसी प्रकार ऑनलाइन शिक्षण के लाभों के साथ एक समानांतर धारा हानि की भी चलती है। कोरोना जनित वायरस के प्रभाव से यूनेस्को की एक रिपोर्ट के अनुसार तब से भारत में करीब 32.1 करोड़ स्कूलों बच्चे घर में बैठे हैं। हालांकि उनके लिए ऑनलाइन कक्षाएं लगायी जाने लगी हैं, लेकिन पहले से पढ़ाई में निराशाजनक स्तर और इन्टरनेट की पहुँच से दूर या कम उपयोग वाले देश में कितने बच्चे सामान्य दिनों की तरह पढ़ाई कर सकते हैं? गैर सरकारी संगठन प्रथम की वार्षिक रिपोर्ट 2018 के अनुसार कक्षा पांच में 50% ग्रामीण बच्चे ही कक्षा 2 की किताने पढ़ सकते थे। उदाहरण के तौर पर झारखण्ड में सिर्फ 11% परिवारों में एक कंप्यूटर साक्षर सदस्य है। नेशनल सैपल सर्वे एजुकेशन की रिपोर्ट के मुताबिक 5 साल की उम्र के सिर्फ 20% भारतीय बच्चे इन्टरनेट का इस्तेमाल कर सकते हैं और सिर्फ 24% परिवारों में इसकी सुविधा है। 8 ये आंकड़े वर्तमान परिस्थितियों में विशेष रूप से आर्थिक कक्षाओं के लिए ऑनलाइन एजुकेशन के लाभों को संदेहास्पद बनाता है। 2017-18 में नेशनल सर्वे सैपल रिपोर्ट बताती है कि देश में केवल 23.8% परिवारों के पास ही इन्टरनेट है। 16.5% लोग कंप्यूटर व 20.1% लोग इन्टरनेट चलाना जानते हैं। इस कारण सभी विद्यार्थियों को ऑनलाइन माध्यमों के जरिये शिक्षा पहुँचाना बड़ी समस्या है।

जिसकी तरफ यदि ध्यान नहीं दिया गया तो आने पीढ़ी को उसके घातक परिणाम

का संवादन यदि घर बैठे ही किया जाने लगा तो शिक्षण संस्थाओं के स्वरूप का परिदृश्य अनिश्चित-सा प्रतीत होता है। यदि ऑनलाइन व ऑफलाइन शिक्षा में उचित सम्बन्ध नहीं किया गया तो पहला मुख्य निरोगी काया, यथस्थ परिार में यथस्थ मन नियाम करता है, 'शरीरमाद्य खलुधर्मसाधनं' जैसी शाश्वत दीर्घायु भी खलु में पड़ जाएगी। आज हम देख रहे हैं की ऑनलाइन शिक्षण में सबसे युगम साधन के रूप में अधिकतर शिक्षार्थी मोंवाइल का प्रयोग करते हैं जिसका वे पहले से ही अधिक प्रयोग करते थे। मोंवाइल का इतना अधिक प्रयोग किसी भी दृष्टिकोण से विद्यार्थियों व शिक्षकों के शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य के लिए उत्तम नहीं है। इस से वे कई रोगों व चुरी आदतों का शिकार हो सकते हैं। कई विद्यार्थी ऑनलाइन पढ़ने का वहाना बनाकर घंटों लैपटॉप व मोंवाइल पर बैठकर समय व्यतीत करते हैं तथा पढ़ने के स्थान पर कई नकारात्मक वेबसाइट्स का प्रयोग या गेम खेलने में अपना समय नष्ट करते हैं। इस प्रकार ऑनलाइन शिक्षण में माता-पिता को भी निगरानी होना आवश्यक है अन्यथा वह समाज के लिए घातक भी सिद्ध हो सकता है।

ऑनलाइन शिक्षण वर्तमान समय की अनिवार्यता भी है तथा इसको कई उत्कृष्ट उपयोगिताएं भी हैं। इस तथ्य को हम नकार नहीं सकते किनु ऑनलाइन शिक्षण चक्री वास्तव में उपयोगी तभी सिद्ध होगी जब ऑनलाइन व परंपरागत शिक्षण में उचित सम्बन्ध किया जाए। परंपरागत श्रेष्ठ शिक्षण विधियों में सहायक बनकर ही ऑनलाइन शिक्षण हमारे लिए उपयोगी हो सकता है अन्यथा इसके नकारात्मक प्रभावों का हवा होना निश्चय है। इस प्रकार हम नए व प्रगतिशील विचारों के साथ चले, किनु प्राचीन व उन्मत्त विचारों के सहयोग से इसे और अधिक उत्तम व श्रेष्ठ बनाकर हम ऑनलाइन शिक्षण को समाज के हित में और अधिक उपयोगी बना सकते हैं।

### सन्दर्भ सूची

- 1 राजस्थान पत्रिका (21.5.2020)
- 2 m.jagran.com (21.4.2020)
- 3 www.amarujala.com (1.4.2020)
- 4 राजस्थान पत्रिका (24.5.2020)
- 5 aajtak.intoday.in (30.3.2020)
- 6 m.livhindustan.com (22.4.2020)
- 7 दैनिक भास्कर (27.5.2020)
- 8 राजस्थान पत्रिका (24.5.2020)
- 9 दैनिक भास्कर (27.5.2020)

## कोविड-19 का निदान विज्ञान अथवा ज्योतिष ?

गौरव विपशि  
एम.ए. (ज्योतिष)

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

**प्रस्तावना** - मानव शरीर प्रकृति की सर्वश्रेष्ठ रचना है और प्रकृति के समस्त रहस्यों को जान लेना मानव की सहज प्रवृत्ति है वह निरंतर खोजों की सहायता से प्रकृति के समस्त रहस्यों को जान लेना चाहता है ज्योतिष और विज्ञान भी इसी परंपरागत खोज का हिस्सा है। फलित ज्योतिष और चिकित्सा विज्ञान परस्पर विरोधी होने के बावजूद मानव जाति को निरोगी और सुखी रखने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहते हैं दोनों का केंद्र मानव देह के जटिल अंग तंत्रों का अध्ययन एवं साध्य असाध्य रोगों के कारण एवं निदान के ऊपर केंद्रित रहता है। आज कोरोना विषाणु अथवा कोविड-19 नामक महामारी सम्पूर्ण वसुधा पर एक वैश्विक संकट व अबूझ पहेली के रूप में मानव जाति के समक्ष खड़ी है। आज प्रत्येक मानव के मन में कोरोना वायरस के साध्यात, असाध्यात, कालावधि एवं परिणाम के बारे में अनेक भ्रमियां व्याप्त हैं जिससे कारण कोरोना वायरस ने रोग की तुलना में कई गुना मानसिक कष्ट देकर सम्पूर्ण वसुधा क्लृप्त को विचलित सा कर दिया है। सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि यह वायरस आया कहां से है? इसका निदान कैसे और कब होगा? इत्यादि की शांत करने के लिए इसका ज्योतिष और वैज्ञानिक पृष्ठभूमि को जानना अत्यंत आवश्यक है।

### कोरोना विषाणु की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

(Historical Background of Corona Virus)

कोरोना वायरस को विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू.एच.ओ.) ने महामारी घोषित किया है इसका संक्रमण बहुत तेजी से एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलता है इसके संक्रमण से ब्रुखार, सर्दी जुकाम और सांस लेने में तकलीफ जैसी समस्याएं हो सकती हैं अधिक परेशानी उत्पन्न होने से मानव की मौत तक हो जाती है यह अत्यंत घातक वायरस दिसम्बर 2019 में चीन के वुहान शहर से उत्पन्न होकर संपूर्ण वसुधा पर तेजी से फैल गया यह विषाणु मानव के बाल की मोटाई से 900 गुना छोटा होता है परन्तु इसका प्रभाव अत्यंत घातक होता है।

चिकित्सा विज्ञान के अनुसार विषाणु सूक्ष्म जीव होते हैं जो हजारों वर्ष तक सुषुप्त चक्र को आरंभ करने लगते हैं जीवित होकर और अनेकों बीमारियों का कारण बनते हैं। सर्वप्रथम एडवर्ड जेनर ने 1796 चेचक वायरस को खोज कर उसका टीका बनाया था।

ज्योतिष शास्त्र की एक पौराणिक कथा के अनुसार देवासुर संग्राम में राहु नामक असुर ने छल से अमृतपान कर लिया सूर्य और चंद्र ने इसकी सूचना विष्णु भगवान को दी और उन्होंने सुदर्शन चक्र से राहु के दो भाग कर दिए परंतु अमृत पान के कारण उसका सिर राहु उरुंते सुदर्शन बन गया तथा उसके रक्त की कुछ बूँदें धरती पर छलक कर विषाणु बनके और धड़ केतु गई। यही विषाणु गंभीर रोगों के कारण बनते हैं क्योंकि इनमें आसुरी शक्ति है ज्ञान हो गई। यही केतु को सर्प रूप में संक्रामक और गंभीर रोगों का कारक माना गया है व ज्योतिष ग्रंथों में राहु केतु का सर्प रूप में संक्रामक और गंभीर रोगों का कारक माना गया है व सूर्य चन्द्र का परम शत्रु कहा गया है जिनके कारण मानव कुण्डली में कालसर्प और सूर्यचन्द्रग्रहण जैसे घातक विष योग बनते हैं। ऋग्वेद में रक्त चूसक विषाणुओं उल्लेख है जो मानव की मृत्यु के कारक होते थे। देवी भागवत पुराण में भी रक्तबीज नामक असुर का वर्णन है जो अपने रक्त की बूँदों से नये असुर उत्पन्न कर देता था।

### मानव कोशिका व श्वसन तंत्र

(Human Cell & Respiratory System)

कोरोना विषाणु मानव शरीर में आंख और मुंह या नाक के माध्यम से प्रवेश करता है और मानव कोशिकाओं के सुरक्षा तन्त्र को भेदकर उसके केंद्र में स्थित डी.एन.ए. में अपनी सूचना बदल के जीवन चक्र आरंभ कर देता है तथा मानव के श्वसन तंत्र को बाधित कर मानव की मृत्यु का कारण बन जाता है।

चिकित्सा विज्ञान के अनुसार मानव शरीर छोटी-छोटी असंख्य कोशिकाओं से निर्मित है इन कोशिकाओं से उत्पन्न, उत्तको से मानव अंग (हृदय, फेफड़े इत्यादि), अंगों से अंग तंत्र (श्वसन तंत्र, रक्त परिवहन तंत्रादि) और विभिन्न अंग तन्त्रों से मिलकर मानव शरीर बनता है। प्रथम कोशिका की खोज डॉ. रॉबर्ट हुक ने सन 1665 ईस्वी में की थी। वैज्ञानिकों के अनुसार प्रत्येक कोशिका में जीवन होता है और उनके केंद्रक में डीएनए होता है और इन कोशिकाओं का पोषण हृदय से प्रवाहित शुद्ध रक्त से होता है।

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार समस्त जीवों की आत्मा सूर्य तथा हृदय व मस्तिष्क चन्द्रमा है। एक कल्पित काल पुरुष में आत्मा, कोशिका व अस्थि मज्जा का सूर्य हृदय, दिमागतन्त्र, रक्त परिवहन तन्त्र श्वेत रक्त कणिकाओं का कारक चन्द्रमा को माना गया है और रक्त, त्वचा, चर्बी, शुक्राणु व स्नायु तन्त्र के कारक ग्रह क्रमशः मंगल, बुध, गुरु, शुक्र व शनि माने गये हैं। राहु केतु छाया ग्रह है जो आकस्मिक आपत्ति और संक्रामक व गम्भीर रोगों के कारक कहे गये हैं। न्याय दर्शन के प्रवर्तक महर्षि कणाद का सृष्टि परमाणुवाद ही आधुनिक कोशिका विज्ञान है उनके अनुसार मानव शरीर अत्यंत अखण्डनीय परमाणुओं के समूह से बना है जिनमें ब्रह्मा की इच्छा से जीवन होता है। गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने भी सृष्टि के कण कण में जीवन अर्थात् अपना वास बताया है।



होता है।  
ज्योतिष शास्त्र में इसे आगातुक रोक कहा जाता है जन्मकुंडली में कमजोर, मारकेश, अथवा अकरोही दशाओं का आना लगन और लगनेश का कमजोर होना सूर्य चंद्रमा पर पाप ग्रहों का प्रभाव एवं गोचर इत्यादि से कोविड-19 के लक्षण को पहचाना जा सकता है।

### कोरोना विषाणु के उपचार

(Identification of Coronavirus)

चिकित्सा विज्ञान वर्तमान में इस वैश्विक महामारी का समुचित इलाज ढूँढने में असमर्थ है और इस पर निरंतर शोध जारी है। वैज्ञानिकों के द्वारा सामाजिक दूरी, मुंह पर मास्क, इम्यून सिस्टम को मजबूत बनाना, पौष्टिक आहार, योग व ध्यान को दिनचर्या में शामिल करने की सलाह दी जाती है।

ज्योतिष शास्त्र का आधार अध्यात्म है। ईश्वर पर आस्था और अपनी वैदिक परंपराओं का पालन करना ही ज्योतिष विज्ञान के उपचार है ध्यान, योग, प्राणायाम, मंत्र जाप इत्यादि इसके अंग हैं। ज्योतिष शास्त्र में कमजोर ग्रहों की पहचान कर उनका उपचार इत्यादि से कोविड-19 के दुष्प्रभाव से बचा जा सकता है।

### निष्कर्ष

(Conclusion)

मानव निसंदेह प्रकृति की सर्वश्रेष्ठ रचना है किंतु प्रकृति के लिए सभी रचनाएं सर्वश्रेष्ठ हैं विज्ञानवादी मनुष्य प्रकृति के सभी संसाधनों पर अपना एकाधिकार समझने की भूल करता है जबकि प्रकृति के संसाधनों पर सभी जीवों का बराबर अधिकार है। आज मानव की मानव से दूरी और प्रकृति से मुँह छिपाना मानवीय भूल का नतीजा है। कोरोना वायरस संकट मानव को प्रकृति का संकेत मात्र है यदि विकास की आड में विज्ञान द्वारा प्रकृति से छेड़छाड़ बन्द नहीं की गयी तो न जाने कितने संकट मानव जाति के सामने आएंगे। ज्योतिष का कार्य भी केवल अशुभ ग्रहों से मानव को आगाह करना मात्र है परन्तु उनको बदलने का रास्ता करने वाले झूठे हैं।



## कोरोना महामारी (कोविड-19)

नितिन कुभार  
कनिष्ठ सहायक  
उत्तराखण्ड भाषा संस्थान, देहरादून

मनुष्य को कई बार महामारियों का सामना करना पड़ता है। वर्तमान में कोरोना वायरस (कोविड-19) जैसी महामारी से पूरा विश्व ग्रस्त है, इसने एक भयंकर बीमारी का रूप धारण कर लिया है, बड़े-बड़े सुविधा सम्पन्न विकसित देशों का आर्थिक तथा स्वास्थ्य का ढांचा चरमरा गया है, जो अब वायरल भारत में भी अपना पैर पसार चुका है। कोरोना वायरस नवल (नए) कोरोना वायरस (सारस-कोव-2) की वजह होती है, जिसे इसान में पहले कभी नहीं देखा गया था, कोरोना वासरस के कई प्रकार हैं और इनमें यह भी शामिल है जो आमतौर पर ऊपरी श्वसन तंत्र (साइनस, नाक की नली, जल आदि जाने की नलिका और कंठ) में हल्की बीमारी पैदा करता है। COVID-19 में CO-Corona, VI-Virus, D-Disease व 19 वर्ष-2019 के लिए प्रदर्शित करता है। कोरोना वायरस (कोविड-19) के नाम से 17 नवम्बर, 2019 को कोरोना का पहला केस सामने आया। चीन के वुहान शहर में विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) से इसे वैश्विक महामारी घोषित कर दिया गया। इसके संक्रमण से बुखार, सांस लेने में तकलीफ की समस्या सामने आती है। कोविड-19 का यह वायरस अब तक विश्व के 140 देशों से अधिक देशों में फैल चुका है, दुनिया में कोरोना के मामले लगभग 8.11 करोड़ के पार हो चुकी हैं। दुनियाभर में कोरोना वायरस से संक्रमण के मामले में अमेरिका पहले पायदान पर है, भारत दूसरे और ब्राजिल तीसरे पायदान पर है।

**कोविड-19 के लक्षण** - कोविड-19 मुख्य लक्षण, बुखार, खाँसी और साँस लेने में समस्या है। बीमार को थकान बढ़न दर्द और नाम जाम होना, गले में खराश और उल्टी दस्त की समस्या भी हो सकती है, हालाँकि कुछ लोग जो इससे संक्रमित हो जाते हैं, उनको कोई भी लक्षण नहीं होते हैं। इससे संक्रमित होने वाले अधिकांश लोगों को किसी विशेष इलाज की जरूरत नहीं होती लेकिन कुछ लोग वेहद गम्भीर रूप से बीमार हो जाते हैं और उन्हें साँस लेने में परेशानी होने लगती है। कोरोना वायरस संक्रमित व्यक्ति के सम्पर्क में आने से फैलता है। संक्रमित व्यक्ति के छींकने या खाँसने पर छिटे निकलते हैं यह किसी सतह पर गिरते हैं जिसको छूने से दूसरे व्यक्ति को संक्रमण फैल जाता है। अभी तक इस बीमारी को अन्य लोगों को भीड़-भाड़ वाले स्थानों पर जाने से सार्वजनिक स्थानों पर से ही हुआ है।

**कोरोना वायरस से बचने के उपाय** - अभी तक इस बीमारी की दवा, वैक्सीन नहीं बन पाई है, बार-बार साबुन से हाथ धोना व मास्क का प्रयोग कर नाक व मुँह पूरा ढका होना चाहिए

व एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति की दूरी 02 गज की होनी चाहिए। भीड़-भाड़ वाले स्थानों पर जाने से अपने आप को रोकना छोड़ते व खाँसते समय मुँह को कपड़े या टिश्यू पेपर से ढकना ही कोरोना वासरस से बचने के उपाय हैं।

कोराना के कहर से, काँप रहा संसार।  
कहीं मर्ज सता रहा है, कहीं होत संहार।  
जग लड़े एक विषाणु से, मिलकर देश अनेक।  
एक कोरोना कर गया, सारी दुनिया एक।।

कोरोना वायरस से संक्रमण का मुख्य कारण शरीर की प्रतिरोधक क्षमता कम होने के कारण तेजी से फैलता है। इसके लिए आवश्यक है कि सभी को शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को बनाए रखने के लिए दैनिक दिनचर्या पर विशेष ध्यान देना चाहिए, 60 वर्ष से अधिक आयु के व्यक्तियों एवं 10 वर्ष से कम आयु के बच्चों को ध्यान देना अनिवार्य है साथ ही मधुमेह (डायबिटीज), ब्लड प्रेशर, श्वास रोग आदि बीमारियों से ग्रसित व्यक्तियों को भी विशेष ध्यान रखना अनिवार्य है। इसके लिए आवश्यक है कि सभी को शुद्ध खान-पान के साथ-साथ योगा व प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने हेतु धरोलू उत्पाद जैसे अदरक, तुलसी, गिलोय, काली मिर्च जैसे उत्पादों को उपयोग अपने भोजन में करना चाहिए।

आज सम्पूर्ण विश्व इस महामारी से जूझ रहा है। इस वैश्विक महामारी से दुनिया के समस्त देशों को आर्थिक तंगी से गुजरना पड़ रहा है। इस महामारी के कारण दुनिया व देश में विभिन्न स्तरों पर व्यापार, रोजगार से बहुत आर्थिक नुकसान हुआ है। सभी सेक्टरों में अलग-अलग प्रकार से देश दुनिया को आर्थिक नुकसान उठाना पड़ा है। इसके लिए दुनिया के सभी देश मिलकर कार्य कर रहे हैं तथा इस महामारी को समाप्त करने हेतु देश व दुनिया के वैज्ञानिक वैक्सीन परीक्षण कर रहे हैं, इसमें उर्माद लगायी जा रही है कि वर्ष-2021 में इस महामारी हेतु भारत में सभी को वैक्सीन प्राप्त हो जाएगी जिसका क्रमवार वितरण किया जाएगा। जैसा कि विदित है कि प्रथम हमारे कोरोना योद्धाओं जो कि मेडिकल क्षेत्र से होंगे, उसके पश्चात् हमारे पुलिस प्रशासन से जुड़े व सफाई कर्मचारियों को उपलब्ध कराया जाये। आज सभी के सहयोग से इस महामारी में अपने-अपने क्षेत्रों में कार्य कर सुरक्षित किया है। इसके लिए सरकार द्वारा जारी लाईन - "जब तक दवाई नहीं, तब तक दिलाई नहीं" पर विशेष ध्यान देना अनिवार्य है और सकारात्मक सोच से अपने-अपने दिए गए कार्यों को सुचारु रूप से निर्वहन करना हम सब की प्राथमिकता है।



## कोरोना- एक और मानवीय ग्रासदी

पुनम चौहान  
असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा शास्त्र विभाग  
तीर्थकार महावीर विश्वविद्यालय, मुस्ताबाद

कोविड-19 वर्तमान समय में एक विश्वव्यापी महामारी बनकर उभरी है, जिसकी भयावहता ने सम्पूर्ण विश्व को हिलाकर रख दिया है। कोरोना एक वायरस का नाम है, जिसके कुछ प्रकार इंसानों के लिये खतरनाक हैं, तो कुछ जानवरों के लिये। यह एक ऐसी बीमारी है जो सीधे तौर पर आपके रक्तसन्त तंत्र को प्रभावित करती है और इस बीमारी से सारी दुनिया में तरह प्रभावित है। डब्ल्यूएचओ इसे महामारी घोषित कर चुकी है। इसके शुरुआती लक्षण फ्लू जैसे ही होते हैं जो धीरे-धीरे एक विकराल रूप धारण कर लेते हैं। कोरोना वायरस ने पूरी दुनिया को अपनी चपेट में ले लिया है। पहले इस वायरस की चपेट में चीन आया, जिसके बाद इस वायरस ने इटली को अपनी चपेट में लिया और फिर अमेरिका और भारत समेत अनेक देश इसकी चपेट में आ गए। सरकार इस वायरस से अपने नागरिकों की जान बचाने के लिए एंडी-चोटी का जोर लगा रही हैं। कोरोना वायरस के खिलाफ यह महायुद्ध तब तक जारी रहेगा जब तक हम इस वायरस को जड़ से खत्म न करें। इस महामारी से बचने का केवल एक ही तरीका है- लोगों से दूरी, लेकिन आपको सभ्यता: यह पता नहीं होगा कि दुनिया में कोरोना महामारियों से सामना हुआ है। कभी हैजा तो कभी प्लेग जैसी भयावह महामारियों ने मानव समाज को अपने संक्रमण से प्रभावित किया है, किन्तु मानव समाज इन महामारियों के संक्रमण से जूझता हुआ अपने विकास पथ पर अग्रसर होता रहा है किन्तु कोविड-19 एक ऐसी चपेट में ले लिया है, जिससे विश्व के सभी देश इस महामारी के दंश को झेलने को अपनी गये हैं। इसे प्रकृति का अपना तरीका कहें या फिर कुछ और लेकिन दुनिया को हर 100 साल में कोरोना जैसी अनेक महामारी का सामना करना पड़ा है। वे दौर पिछले 400 सालों से चलता आ रहा है। इससे पहले साल 2009 में स्पाइन फ्लू को महामारी घोषित किया गया था। विशेषज्ञों के मुताबिक स्पाइन फ्लू की वजह से कई लाख लोग मारे गए थे। महामारी होने की राह हो और लोगों के बीच संपर्क से प्रभावी और निरंतरता से फैल रहा हो। कोरोना वायरस इन सभी पैमानों को पूरा करता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोरोना वायरस को पैनडेमिक यानि महामारी घोषित कर

दिया है। पहले डब्ल्यू.एच.ओ. ने कोरोना वायरस को महामारी नहीं कहा था। महामारी उस बीमारी को कहा जाता है जो एक ही समय दुनिया के अलग-अलग देशों में लोगों में फैल रही हो। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अध्यक्ष ने कहा है कि वो अब कोरोना वायरस के लिए महामारी शब्द का इस्तेमाल कर रहे हैं क्योंकि वायरस को लेकर निष्क्रियता चिंताजनक है। अब हम इतिहास की सबसे बड़ी वैश्विक महामारियों के बारे में जानने का प्रयास करेंगे-

**प्लेग-** फ्रांस के एक छोटे से शहर मॉर्साईल में 1720 में फैली प्लेग महामारी ने 1 लाख से ज्यादा लोगों की जान ले ली। प्लेग फैलते ही कुछ महीनों में 50 हजार लोगों की मौत हो गई। बाकी 50 हजार लोग अगले दो सालों में मारे गए। बता दें कि उस समय लोगों को इस बीमारी का पता ना होने के कारण यह कई शहरों और प्रांतों में फैलती गई और लोगों को अपनी चपेट में लेती गई। धीरे-धीरे ये बीमारी बाकी देशों में भी फैली। इसने माल्टा में 1679, विएना में 76 हजार प्राग में 83 हजार लोगों की जान ली। यह महामारी इतनी भीषण थी कि इससे दस हजार की आबादी वाले डेन्सडेन नगर में 4,397 नागरिक इसके शिकार हो गए। प्लेग ने भारत पर भी आक्रमण किया। इस बीमारी से संपूर्ण भारत में दहशत का माहौल पैदा हो गया। यह महामारी पाली से मेवाड़ पहुंची, फिर मेवाड़ में इस महामारी ने इतना तांडव मचाया कि लोग डरने लगे। ये चूहों से फैली महामारी थी। इस महामारी से हालात यह थे कि अस्पताल पहुंचने से पहले भी लोगों की मौत हो जाया करती थी।

एक सरकारी रिपोर्ट के मुताबिक, इस महामारी से 1800 करोड़ का नुकसान हुआ। प्लेग एक ऐसा संक्रमण था जो जानवरों से इंसानों में पहुंचता है। इस महामारी से बचने के लिए गुजरात के सूरत में हजारों लोगों ने पलायन किया था। पलायन की शुरुआत गुजरात के सूरत से शुरू हुई थी। यहां रहने वाले लोग जब प्लेग की चपेट में आकर मरने लगे तो यूरप और बिहार से आकर यहां बसने वाले लोग भी अपने घरों को पलायन करने लगे। इस महामारी से देखते ही देखते सूरत से 25 फीसदी आबादी बाहर चली गई। उस दौर में भी लोगों को आइसोलेश की हिदायत दी गई थी।

### कॉलरा

प्लेग महामारी के 100 साल बाद 1820 में कॉलरा ने महामारी का रूप लिया। इस महामारी ने जापान, भारत, बैंकॉक, मनीला, चीन, सीरिया आदि देशों तो अपनी चपेट में ले लिया। कॉलरा की वजह से सिर्फ जावा में 1 लाख लोगों की जान चली गई। इस महामारी से सबसे ज्यादा मौतें थाइलैंड, इंडोनेशिया और फिलीपींस में हुई थी। वर्ष 1820 में अस्तित्व में आई जानलेवा बीमारी हैजा (कॉलरा) वर्ष 1910 और 1911 के बीच भारत में फैली। इसके बाद मध्य पूर्व, अफ्रीका और यूरप और रूस तक यह महामारी फैली थी, जिससे करीब 8 लाख से ज्यादा लोग मारे गए होंगे। विनियो कॉलरा नाम के बैक्टीरिया से होने वाला हैजा रोग इंसानी शरीर के गंदे अवशेष, पानी या खाने या फिर किसी दूसरे के हाथों तक पहुंचते हैं। इस बीमारी में रक्त और जलियां होती हैं, जिससे मरीज शरीर का सारा पानी खो देते हैं। साफ पानी न

मिलने पर मरीज की मौत घंटों के अंदर-अंदर हो सकती है। कई सालों के शोध के बाद पता चला कि हैजा रोग की शुरुआत सबसे पहले बांग्लादेश से हुई थी।

**स्पैनिश फ्लू**

कॉलोरा महामारी के 100 साल बाद 1920 में स्पैनिश फ्लू ने अपने पैर पसार दिए। बताया जाता है कि इस महामारी की वजह से पूरी दुनिया में 1.70 करोड़ से 5 करोड़ लोगों की जान चली गई थी। माना जाता है कि यह वायरस अमेरिका से फैला था। उस समय विश्व युद्ध का समय था और यह फ्लू अमेरिकी सैनिकों से यूरोप में फैला था। भारत में स्पैनिश फ्लू को बॉम्बे फीफ के नाम से जाना गया। एक अनुमान के मुताबिक भारत में इस महामारी से लगभग एक से षे करोड़ लोगों की जान चली गई थी। उस समय इस महामारी की कोई वैक्सीन ना होने के चलते सरकार ने लोगों को आइसोलेट करके वायरस को काबू में पाया था।

**कोरोना वायरस**

वर्षों, एक बार फिर 100 वर्ष पुराना इतिहास दोहराया गया है और 2020 में कोरोना वायरस महामारी सामने आई है। कोविड-19 एक भयावह विषाणु जनित वैश्विक महामारी है, आज कोरोना वायरस संपूर्ण मानव जीवन को अस्त-व्यस्त कर दिया है।

चीन से फैले इस वायरस के मामले करोड़ों की संख्या पार कर गए हैं, अपने देश भारत में कोरोना के संक्रमण से मरने वाले लोगों की कुल संख्या बढ़कर 1,47,092 हो गई है। दुनियाभर के 188 देशों में कोरोना वायरस के संक्रमण (कोविड-19) से अब तक कई लोगों की मौत हो चुकी है। चीन से फैले कोरोना वायरस का सबसे ज्यादा असर इटली के बाद अमेरिका में देखा गया।

कोरोना वायरस कोविड-19, अब एक महामारी का रूप ले लिया है। यह बहुत ही खतरनाक वायरस है, परंतु नुझाए गए वचाव के तरीकों का पालन करके इससे बचा जा सकता है। कोरोना से संक्रमित होने के 4 से 14 दिनों में इसके प्रभाव नजर आते हैं। कोरोना एक वायरस जनित रोग है और समस्त संसार में तबाली मचा रहा है। इस रोग की शुरुआत जुकाम एवं खांसी मात्र से होती है जो धीरे-धीरे आगे चल कर एक विकराल रूप ले लेती है और रोग के प्रथम तंत्र का वृत्त तरह प्रभावित करता है। कई बार तो रोगी मृत्यु तक हो जाती है।

**इसकी उपचार कर्त से हटें?**

कोरोना की उत्पत्ति सबसे पहले 1930 में एक मुर्गी में हुई थी और इसने मुर्गी के प्रथम प्रणाली को प्रभावित किया था और अंततः 1940 में कई अन्य जानवरों में भी गया गया। इसके बाद सन् 1960 में एक व्यक्ति में पाया गया जिस सर्दी की शिकायत थी। इन सब के बाद वर्ष 2019 में इसे दुबारा इसका विकराल रूप चीन में देखा गया जो अब धीरे-धीरे पूरे विश्व में फैल चुका है। कोरोना वायरस के विकराल रोगी रोकना ही सबसे अहम है। कई देशों की महान चिकित्सा प्रणाली कोरोना की वैकरीयन यनान में चुटी हुई है। कुछ देशों ने वैकरीयन यनान भी दी है लेकिन कोरोना वायरस को वैकरीयन यनान को कोरोना वायरस का उपचार तो हो सकता है, किन्तु कोरोना वायरस के विकराल रणनीति तभी सफल होगी जब सभी देशवासी

मिलकर अपना पूरा-पूरा सहयोग देंगे। एक ओर जहां कोरोना का खतरा गहरा रहा है, वहीं सोशल मीडिया के जरिये कोरोना को लेकर बहुत सारी अफवाहें भी फैलाई जा रही हैं, कोरोना को लेकर मजाक बनाया जा रहा है, आज की परिस्थितियों को देखते यह सब ठीक नहीं है। सोशल मीडिया के इस तरह के दुरुपयोग पर लगातार जागरूक होने की जरूरत है सोशल मीडिया के 'महाजानी' लोग कोरोना को लेकर बोलने का दावा करते हुए इस संदेश को तेजी से वायरल करके 'महाजानी' लोग कोरोना को लेकर बोलने का दावा करते हुए इस संदेश को तेजी से वायरल करने को कह कर रहा है तो कोई गैर-पेशेवर के सेवन से कोरोना से बचने का सलाह दे रहा है। इसी प्रकार कुछ लोग लहसुन, प्याज, गर्म पानी, विटामिन सी, स्टैरॉयड, शराब इत्यादि के जरिये कोरोना को भगाने की ऊलजुलूल सलाह दे रहे हैं। नोबल कोरोना प्रथम संवर्ध रोग है और कोरोना वायरस को 75 प्रतिशत अलकोहल छिड़कने तथा उससे साफ करने से ही माया जा सकता है, शराब पीकर नहीं। आज के समय में सोशल मीडिया पर फैलती अफवाहों पर तत्काल प्रभाव से अंकुश लगाए जाने की सख्त जरूरत है। कई बार गलत सूचनाओं के कारण समाज में दहशत का माहौल भी बन जाता है। प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि देश को कोरोना के बड़े खतरे से बचाने के लिए ऐसी अफवाहों से बचते हुए केवल सरकार तथा विन्य स्वास्थ्य संगठन द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का ही पालन किया जाए। अगर कोरोना को लेकर शुरुके ज्ञान बांटने के बजाय सोशल मीडिया प्लेटफार्म का लोगों को जागरूक करने के लिए बेहतर उपयोग किया जाए।

**क्या कोरोना वायरस से मृत्यु निश्चित नहीं:** जरूरी नहीं कि आपको यदि कोरोना है तो अब बचने की कोई उम्मीद नहीं है। सच यह है कि जितनी जल्दी आपको इसका ज्ञान होता है अपने नजदीकी अस्पताल जरूर जाएँ, क्योंकि इसका उपचार घर पर मुमकिन नहीं।

**क्या है कोरोना के प्रमुख लक्षण**

एक कोरोना प्रभावित व्यक्ति में तुरंत असर नहीं दिखता, उसमें इसके लक्षण दिखने में करीब 14 दिन भी लग जाते हैं। इस लिये यदि आप कहीं संक्रमित क्षेत्र से आये हों या आपको जरा भी संदेह हो तो खुद को सब से अलग कर लें और जब तक खून की जांच की रिपोर्ट नहीं आजाती खुद को सुरक्षित रखें। इसके लक्षण इस प्रकार हैं:

- सुखी खांसी आना
- बुखार का रहना
- सर्दी होना
- शरीर में अकड़न और दर्द
- पूरा दिन थकान महसूस करना
- सांस लेने में तकलीफ।
- गले में खराश



## कोविड-19 का प्यावरण पर प्रभाव

डॉ. भरत गिरी गोसाईं

असिस्टेंट प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान विभाग

श्रीमती हंसा धनाई राजकीय महाविद्यालय, अमरोड़ा

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग

राजकीय महाविद्यालय, पौड़ी गढ़वाल

पूरे विश्व में कोविड-19 (कोरोना) ने भयंकर तबाही मचा रखी है। सभी देश

कोविड-19 जैसे महामारी से जूझ रहे हैं। कोरोना महामारी के सामने बड़े से बड़े शक्तिशाली देश भी बौने साबित हो रहे हैं। कोरोना एक विषाणु जनित रोग है जो मानव के रक्तसम प्रणाली को प्रभावित करता है। कोरोना विषाणु की उत्पत्ति चीन के वुहान शहर में दिसंबर 2019 में हुई। कोरोना महामारी से अभी तक पूरे विश्व में लगभग 9 लाख लोग काल के गाल में समा चुके हैं। इस महामारी को कोई वैक्सीन, दवाइयां नहीं बनने के कारण यह लगातार तेजी से मानव प्रजाति को संकट में डाल रहा है। पूरे विश्व में इस महामारी का स्थाई समाधान हेतु शोध कार्य किए जा रहे हैं, उम्मीद है कि जल्दी हमें इस दिशा में सफलता मिल जाएगी।

एक और जहाँ कोविड-19 मानव जाति के ऊपर संकट पैदा किया है, वहाँ दूसरी ओर पर्यावरण के लिए वरदान साबित हो रहा है। महामारी के इस दौर में जहाँ मानव अपने घरों में कैद है, और जीव-जंतु, पक्षी प्रकृति में स्वतंत्र रूप से विचरण करते देखा जा सके हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन को एक रिपोर्ट के अनुसार विश्व में करीब 7 लाख मौतें प्रतिवर्ष वायु प्रदूषण के कारण होती हैं। कोरोना महामारी के दौरान लॉकडाउन के कारण वायु प्रदूषण में भारी गिरावट देखी गई है। चंडीगढ़ से हिमाचल की हिमालय की चोटियां भी लॉकडाउन के कारण देखने को मिलीं। कोविड-19 के कारण ही अमेरिका के न्यूयॉर्क शहर में प्रदूषण की मात्रा में 50% कमी तथा चीन में 25% की कमी देखी गई।

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड नई दिल्ली के ताजा आंकड़ों के अनुसार 22 मार्च को जनता कर्फ्यू के दौरान वायु गुणवत्ता इंडेक्स 101 से 250 के बीच में था। साथ ही साथ वायु में उपस्थित प्रदूषणकारी धूलकणिकाओं पी एम 10 की मात्रा में 44% तथा पी एम 2.5 की मात्रा में 8% की कमी पाई गई, जो कि पर्यावरण सुधार की दृष्टि से एक बहुत अच्छा संकेत है। जनता कर्फ्यू के बाद दिल्ली के कुछ क्षेत्रों में नाइट्रोजन, सल्फर के ऑक्साइड में 34% से 51% की कमी ऑकृत की गई, जिससे दिल्ली की हवा साफ हुई तथा आसमान भी चटक नीला दिखने लगा।

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड नई दिल्ली द्वारा लॉकडाउन के दौरान वायु की गुणवत्ता हेतु भारत के 168 देशों में एक शोध किया गया। अध्ययन से जो आंकड़े सामने आए उनमें 103 शहरों की वायु गुणवत्ता 23 दर्ज की गई तथा 65 शहरों की वायु गुणवत्ता

सोपानक ऑकृत की गई वर्ल्ड एयर क्वालिटी रपट 2019 में विश्व के 30 सबसे प्रदूषित शहरों में भारत के 21 शहर शामिल थे, लॉकडाउन के उपरांत केवल 10 शहर ही इस श्रेणी में रखे गए हैं। पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से यह एक बड़ी उपलब्धि है।

आंकड़ों के अनुसार 60 दिनों के वैश्विक लॉकडाउन के चलते हुआ है। फॉक्सन्यूज सुधार नहीं हो पाया, जो पिछले 60 दिनों के वैश्विक लॉकडाउन के दौरान भीड़ में काफी कमी देखी और टैगमेंट ट्रैफिक इंडेक्स के अनुसार लॉकडाउन के दौरान भीड़ में काफी कमी देखी गई, लोग घरों में रहकर अपना कार्य करते रहे। न्यूयॉर्क शहर में 45% तथा लॉसएंजेलिस में 51% की गिरावट देखी गई। वैश्विक महामारी कोरोना के दौरान जी वाइरस की मांग में 10% की कमी आई है, जिसके परिणाम स्वरूप वायु प्रदूषण में गिरावट देखी गई। लगभग 10% की कमी आई है, जिसके परिणाम स्वरूप वायु प्रदूषण में गिरावट देखी गई। कोरोना वायरस की वजह से हुए वैश्विक लॉकडाउन पर्यावरण को बहुत फायदा हुआ है। इसकी मुख्य वजह है कि दुनिया के उद्योगों वाहनों कल कारखानों आदि का बंद होना। जिससे इसकी मुख्य ऑक्साइड की मात्रा में कमी आई है, फलस्वरूप ओजोन परत में भी सकारात्मक कार्बनडाइ ऑक्साइड की मात्रा में कमी आई है, फलस्वरूप ओजोन परत में भी सकारात्मक सुधार होता साफ दिख रहा है।

लॉकडाउन का जल प्रदूषण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। गंगा को साफ करने के लिए नमामिगो अभियान में विगत वर्षों से करोड़ों खर्च कर के भी जलप्रदूषण में जो मामूली सफलता दिखी, लॉकडाउन के 21 दिनों के में इस गंगा को निर्मल बना दिया। गंगा के अलावा यमुना, गण्डकी नदी के तटों के प्रदूषण स्तर में भी कमी ऑकृत की गई। लॉकडाउन के दौरान मछुआरों द्वारा मछलियों का शिकार भी नहीं किया गया, जिससे पारिस्थिति को तंत्र मजबूत हुआ है। बेनिन जैसे क्षेत्र में पानी इतना साफ हो गया है कि मछलियों को तालाबों एवं नदियों में साफ देखा जा सकता है। पानी का प्रवाह भी पहले से बेहतर हुआ है। इसमें कोई संदेह नहीं की इसानों की आवाजा ही कम होने से समुद्र के हालात में भी सुधार आया है।

जल तथा वायु प्रदूषण के अलावा ध्वनि प्रदूषण पर भी लॉकडाउन का सकारात्मक असर देखने को मिलता। दरअसल ध्वनि प्रदूषण का मुख्य स्रोत वाहन है, जिनमें कार, बस, रेलगाड़ी, हवाईजहाज आदि प्रमुख है। वाहनों की ध्वनि से प्रदूषण उत्पन्न होता है। लॉकडाउन में वाहनों की आवाजा ही पर पूर्ण पाबंदी थी, जिसके चलते वायु प्रदूषण में भारी कमी आई है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की अध्ययन रिपोर्ट के मुताबिक ध्वनि प्रदूषण में 5 से 10 डेसीबल की कमी देखी गई है। दिल्ली के भीड़ भाड़ इलाकों में जहाँ दिन के समय ध्वनि प्रदूषण का सामान्य स्तर 55 डेसीबल और रात में 45 डेसीबल होता था। वहाँ लॉकडाउन के चलते ध्वनि प्रदूषण में भारी गिरावट आई है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट में कहा गया है कि शुद्ध हवा, शुद्ध पानी एवं घटती प्रदूषण के कारण ही कोरोना महामारी में इतने दिनों तक चले लॉकडाउन के बाद भी मानसिक बीमारियों के कोस उस रफ्तार से नहीं बढ़े जैसे बढ़ सकते थे, क्योंकि लॉकडाउन के दौरान सभी प्रकार की आवाजाही पूर्णरूप से बंद था। परिणाम स्वरूप प्रदूषण के स्तर में भारी कमी आई है, जिसके चलते हमें शुद्ध ऑक्सीजन, ताजा पानी, शुद्ध वातावरण मिलता रहा और



**चमन संदेश** चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा जनपद हरिद्वार

मानव के मन में सकारात्मकता का प्रसार होता गया जिस कारण मानव प्रजाति मानसिक रूप से भी इस महामारी के खिलाफ अप्रत्यक्ष रूप से लड़ता रहा।

विशेषज्ञों का मानना है कि बिना महामारी के दौर में भी सरकार को समय-समय पर कम से कम 1 महीने का संपूर्ण लॉकडाउन लगाना चाहिए, जिससे प्रकृति खुद पुनः रिचार्ज हो जाए तथा प्रकृति का संतुलन भी बना रहे। वक्त आ गया है कि हमें पर्यावरण का संरक्षण करना चाहिए। प्रकृति को प्लास्टिक, प्रदूषण मुक्त करने की दिशा में अपना योगदान के लिए समय निकालना चाहिए। शायद यही वजह है कि इस साल विश्व पर्यावरण दिवस की थी "टाइम फॉर नेचर" यानी प्रकृति पर ध्यान देने का समय रखी गई है।



## कोरोना ने तो बदलकर रख दिया आम इंसान को

डॉ. शिवा अग्रवाल

स्वतंत्र लेखक एवं शिक्षक

बेसिक शिक्षा विभाग, उत्तराखण्ड

एक शहर ऐसा भी जिसने दुनिया को समझाया क्वारंटीन का मतलब सभ्यताओं का बसना व नष्ट होना कोई अनोखी या नई बात नहीं है। जब-जब विकास के रास्ते पर मानव बढ़ता गया वह अपने कदमों के साथ ऐसे निशान भी छोड़ता चला गया जो इस बात के सूचक थे की विकास की आंधी में उसने प्रकृति के साथ छेड़छाड़ की है जिसका परिणाम उसे भुगतना ही पड़ेगा। समय-समय पर कुदरत की विनाशलीला शायद यही संदेश है कि मनुष्य यदि स्वयं से नहीं समझा तो प्रकृति अपने हिसाब से उसको समझा देगी। आज कोरोना जैसी महामारी ने पूरे विश्व पर संकट खड़ा कर दिया है साथ ही जीवन की धारा को एकदम बदल कर रख दिया है। सामाजिक प्राणी कहलाने वाला मनुष्य आज सामाजिक दूरी तलाश रहा है तथा आइसोलेशन एवं क्वारंटीन जैसे अजनबी शब्द अब जीवन का हिस्सा होने लगे हैं। भय-असुरक्षा के माहौल के बीच कुछ रोचक तथ्य भी हैं जो इस बात की तसदीक करते हैं कि यह समूचा विश्व महामारियों से पहले भी पीड़ित रहा है तथा तभी से संक्रमण आदि से बचने के लिए अपने-अपने तरह से प्रयास किये जाते रहे। हमारे देश में तो पहले से ही ऐसी व्यवस्थाएं हैं जिनका वैज्ञानिक आधार है। दुनिया भर में कोविड-19 के फैलने के बाद से यही सलाह दी जा रही है कि अगर आप कहीं विदेश से आए हैं या ऐसे किसी व्यक्ति के संपर्क में आए हैं जिसे कोविड-19 हुआ हो तो सेल्फ-क्वारंटीन में रहें। आज की इस महामारी के समय में सेल्फ-क्वारंटीन का महत्व समझने के लिए 'क्वारंटीन' शब्द का इतिहास जानना दिलचस्प रहेगा। इस शब्द का मूल छिपा है मध्यकालीन यूरोप में। "क्वारंटीन" शब्द इटैलियन भाषा के 'क्वारंतीनो' शब्द से निकला है, जिसका अर्थ है चालीस दिन की अवधि। 14वीं शताब्दी में यूरोप में फैले प्लेग से वेनिस जैसे तटीय शहरों को बचाने के लिए संक्रमित बन्दरगाहों से वहाँ पहुँचने वाले हर जहाज को शहर की धरती छूने से पहले 40 दिन तक पानी में ही लंगर डालकर खड़े रहना पड़ता था यानी उन्हें अपनी यात्रा 40 दिन तक रोकनी पड़ती थी। वर्ष 1374 में वेनिस ने एक आदेश निकाला कि जब तक वेनिस की विशेष स्वास्थ्य परिषद, जहाजों और उसके यात्रियों को शहर में आने की अनुमति न दे दे, उन्हें पास के सेन लैजारो द्वीप में ही रहना होगा। लेकिन जैसा कि "लैजरेटो इन ड्यूब्रोन्विक : द बिगनिंग ऑफ द क्वारंटीन रेग्युलेशन इन यूरोप" के सह-लेखक एंटे मिलोसेविच लिखते हैं, "इसके कारण वेनिस में कुछ विशेष देशों के जहाजों और यात्रियों के साथ भेदभाव तथा अन्य गड़बड़ियाँ शुरू हो गईं।"



उधर, एडुवाटिक सागर के पार रागुजा (आधुनिक ड्यूब्रोविक) की मरणाधिकारी को फँलने से रोकने के लिए 1377 में एक नया कानून बनाया जिसके मुताबिक रागुजा आने वाले हर जहाज और व्यापारियों के काफिले को 30 दिन तक आइसोलेशन में रने प्रवेश करने से पहले खुद को संक्रमणमुक्त बनाने के लिए नजदीकी तट कस्बे या फ्फानों में 30 दिन बिलाने होंगे। इस प्रकार, जैसा कि मिलोसेविच कहते हैं, "ड्यूब्रोविक ने पहले एक ऐसा तरीका लागू किया जो न केवल पक्षपातरहित और न्यायोचित था, बल्कि बेर समझदारो भरा और सफल भी साबित हुआ। इसे पूरी दुनिया ने अपनाया।" किलाय के सह-लेखका एना बाकोजा-कोसुआ कहती हैं, "ड्यूब्रोविक, संक्रमित इलाकों से जलपाणों और धलानागं, दीनों के रास्ते आने वाले लोगों, पशुओं और सामान को स्वस्थ आबादी से अलग रखने वाला मध्य सागर का पहला बन्दरगाह था। जबकि वेनिस ने सभी जहाजों और व्यापाण पर रोक लगा दी जिससे वहाँ का जीवन धम-सा गया। रागुजा गणतन्त्र ने 30 दिन के क्वारंटन कानून (जिसे ड्यूब्रोविक के 27 जुला 1377 के एक दस्तावेज में ट्रेडीन कहा गया है) का उल्लंघन करने पर कठोर दंड दिए और जुर्माने लगाए। शुरू में आइसोलेशन की अवधि 30 दिन हो थी, लेकिन फिर इसे 40 दिन का कर दिया गया।"

ऐसा करने को सही-सही वजह कोई नहीं जानता। कुछ लोग मानते हैं कि 30 दिन की अवधि नाकाफ़ी समझी गयी क्योंकि वीमारी के इन्वैरेशन अवधि की सही जानकारी नहीं थी। बालीस दिन, हजारत नूला के मांडं सिनाय पर बिलाए चालीस दिन आदि पर आधारित है। वेनिस को सॉनेट ने 1448 में अपने बन्दरगाह में प्रवेश करने वाले जहाजों के लिए क्वारंटन की अवधि आधिकारिक रूप से 30 दिन से बढ़ाकर 40 दिन कर दी। लेजरटे ऑफ ड्यूब्रोविक में बाकाजा-कोसुआ लिखती हैं, "ड्यूब्रोविक प्रशासन को क्वारंटन का विचार कुछ गो फँलने से रोकने के लिए कुछ रोगियों को दूसरों से अलग रखने के उनके अनुभव से आया था। ड्यूब्रोविक के इतिहास में कई रोगों ने तबाही मचाई थी, जिसमें कुछ रोग और प्पेा को अवधारणा ड्यूब्रोविक को ही देन है। 1272 के 'स्टेवुट ऑफ ड्यूब्रोविक' में पहली बार कुछ रोगियों को आइसोलेशन में रखे जाने का उल्लेख है। यह स्टेवुट क्रोएशिया के प्राचीनतम कानूनी दस्तावेजों में से एक है। यह भी कहा जाता है कि वाइबिल में कुछ रोग से पीड़ित 'लेजरस' को कुछ रोगियों का संरक्षक संत माना गया है और उन्हीं के नाम पर कुछ झोंपड़ियाँ, तंबुओं और कई बार खुले में की गयीं। झोंपड़ियों के साथ अच्छी बात यह थी कि उन्हें आसानी से जलाकर पूरे इलाके को विसंक्रमित किया जा सकता था। यह बात तो विदेशों में अपनाई जाने वाली व्यवस्था को हुई। बात भारत की करें तो हमारी तो दिनचर्या ही शांतिपाठ से होती थी। जिसमें अंतरिक्ष से लेकर वनस्पति तक की शांति संरक्षण का संदेश है। आयुर्वेद

का भरा पूरा ज्ञान तथा वेद मंत्र भी यही संदेशा लिये हुए हैं। हमारे यहाँ वज्वे का जन्म होता है जो जन्म के बाद मां-बेटे को अलग कमरे में रखते हैं, महीने भर तक, मतलब होम क्वारंटन। ऐसे समय में उन घरों का पानी भी नहीं पिया जाता। हमने सदैव होम हवन किया, कर्त्ते हैं। ऐसे समये वातावरण शुद्ध होता है, आज विश्व समझ रहा है, हमने वातावरण को समझाया कि इससे वातावरण शुद्ध होला है, आज विश्व समझ रहा है, हमने वातावरण को करने के लिये भी और अन्य हवन सामग्री का उपयोग किया। हमने आरती को कपूर से जोड़ा, कर्त्ते हैं। हमने भोजन करने के पहले अच्छी तरह हाथ धोये और उन्होंने चम्मच का सहारा लिया। हर दिन कपूर जलाने का महत्व समझाया ताकि घर के जीवाणु मर सकें। हमने वातावरण को शुद्ध करने के लिये मंदिरों में रांखनाद किये, हमने मंदिरों में बड़ी-बड़ी चंटियां लगाईं जिनकी ध्वनि आकर्षण से अनंत सूक्ष्म जीव स्वयं नष्ट हो जाते हैं। हमने भोजन को शुद्धता को महत्व दिया। हमने भोजन करने के पहले अच्छी तरह हाथ धोये और उन्होंने चम्मच का सहारा लिया। हमने घर में घेरे धोकर अंदर जाने को महत्व दिया। हमने मेले लगा दिये कुंभ और सिंहस्थ के सिर्फ शुद्ध जल से स्नान करने के लिये। हमने अमावस्या पर नदियों में स्नान किया, शुद्धता के लिये ताकि कोई भी जीवाणु या वायरस हो तो दूर हो जाये। हमने वीमार व्यक्तियों को गोम से नहलाया। हमने भोजन में हल्दी को अनिवार्य कर दिया और अब परिचर्मा देश हल्दी पर रिसर्च कर रहे हैं। हमने होती जलाई कपूर, पान का पत्ता, लौंग, गोबर के उपले और हवन सामग्री सब कुछ सिर्फ वातावरण को शुद्ध करने के लिये। हमने गोबर को महत्व दिया, हर जगह लौंग और हजारों जीवाणुओं को नष्ट करते रहे, वो इससे घुणा करते रहे। हम दीपावली पर घर के कोने-कोने को साफ करते हैं, चूना पोतकर जीवाणुओं को नष्ट करते हैं, पूरे सलोक से विषाणु मुक्त घर बनाते हैं। हम अतिसूक्ष्म विज्ञान को समझते हैं आत्मसात करते हैं और परिचर्मा देश सिर्फ कोराना के भय में समझने को तैयार हुए। हम उन जीवाणुओं को भी महत्व देते हैं जो हमारे शरीर पर सूक्ष्म प्रभाव डालते हैं। आज हमें गर्व होना चाहिए कि हम ऐसी देव संच्युति में जन्मे हैं जहाँ क्वारंटन का आदिकाल से महत्व है। यही हमारी जीवन शैली है।

आज संपूर्ण मानव धूमकर उसी का अनुसरण कर रहा है जिसको वह आधुनिकता के नाम पर पीछे छोड़ आया था। सामाजिक दूरी, शारीरिक दूरी की अवधारणा ने हाथ निलाने का जैटलमैन परम्परा को हाथ जोड़कर नमस्कार करने की परम्परा में पुनः स्थापित कर दिया है। कोराना वायरस जैसे भी सबसे ज्यादा श्वसन तंत्र को प्रभावित करता है हमारे यहाँ तो योग, प्राणायाम आदि के जरिए इन व्याधियों को दूर करने के लिए किस प्रकार प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाई जाए इसका भरा पूरा ज्ञान है। बस आव यकता सिर्फ इस बात को है कि इन अपने इन मूल्यों को जानें तथा इन्हें आत्मसात करें।



भारतीय नीति निर्माताओं को इसकी उत्पत्ति व फ़ैलने के कारणों तथा इसके व्यापक प्रयोग में उदापोह की स्थिति है। भारतीय सरकार ने वारवेल तकनीक का प्रयोग प्रभाव के सम्बंध में खराब परिस्थिति होने की स्थिति भापकर उसी हिसाब से तैयारी शुरू कर

करते हुए खराब से खराब परिस्थिति होने की स्थिति भापकर उसी हिसाब से तैयारी शुरू कर दी।

एक सख्ता लॉकडाउन की शुरुआत चरणों में की गई। भारत सरकार ने इस बात पर ध्यान दिया कि इसका प्रभाव आवश्यक वस्तुओं की पूर्ति पर न पड़े। इसके लिए विशेष नियम बनाए गए। बाजारों के खुलने का समय निश्चित किया तथा लोगों की आवाजाही को दुरुस्त किया गया। क्योंकि भारतीय अर्थव्यवस्था के केंद्र में कृषि थी। अतः कृषि आदानों का विशेष ध्यान दिया गया जिससे कृषि क्षेत्र ज्यादा प्रभावित न हो।

क्रिया दिया गया जिससे कृषि क्षेत्र ज्यादा प्रभावित न हो। अतः यह समय कोरोना की वजह से भारतीय बाजार में मांग का स्तर बहुत गिर गया था। अधिकांश प्रवासी मजदूर अपने अपने ग्रामों की ओर पलायन करने पर मजबूर हो गए थे। अतः यह समय भारतीय शासन प्रशासन को भूख से भी विचलित प्रवासियों को भरपेट भोजन के साथ भारतीय शरास संरचनात्मक सुधार भी करने थे और ठप अर्थव्यवस्था को फिर से गति देना था इसी आधारभूत संरचनात्मक सुधार भी करने थे और ठप अर्थव्यवस्था को फिर से गति देना था इसी बात को ध्यान में रखते हुए भारतीय सरकार ने 2 लाख करोड़ के व्यापक सुधारवादी पैकेज की घोषणा की।

भारत सरकार द्वारा किये गये सुधार भारतीय सरकार की गंभीरता को प्रदर्शित करता है यह बात जरूर है कि भारतीय अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने में दो-तीन साल लग सकते हैं महामारी के दौरान बनी नीतियाँ इतिहास में सुरक्षित होंगी तथा भविष्य के नीति निर्माताओं को लिए एक सबक का कार्य करेंगी जिससे भविष्य में होने वाली महामारी के अनुसार जीवन की जीवन्ता को बचाए रखेगी।





- नेटवर्क एवं संचार माध्यम
- प्रिन्टर
- इन्टरनेट वर्ल्ड वाइल्ड नेटवर्क
- लोकल एरिया नेटवर्क
- प्रशिक्षित पुस्तकालय कार्मिक
- 6. पुस्तकालय कार्मियों को कोविड-19 के सुरक्षित सूचना पहुंचाने में भूमिका कितनी भी सेवा को प्रदान करने में उस सेवा को प्रदान करने के लिए प्रशिक्षित कार्मियों को जल्द ही होनी है इस महामारी के दौर में डिजिटल सूचना का जन-जन तक पहुंचाने में वही भूमिका अदा की है इसके लिए नए तकनीकी एवं सोशल मीडिया का भरपूर उपयोग किया गया है जो कि निम्नलिखित है।
- फेसबुक
- इनस्टाग्राम
- व्हाट्सप
- ट्विटर
- टेलीग्राम
- वेबलॉग/ब्लॉग

7. डिजिटल पुस्तकालय सूचना जगत पर प्रमाण: पर्यावरण विज्ञान से सम्बन्धित समस्त वैज्ञानिकों ने डिजिटल पुस्तकालय व विशेषकर सी.डी.रोम के महत्व को स्वीकार किया "एक सी.डी. बनाओ वृक्ष बचाओ" उसके उपयोग से कागज का उपयोग कम हो जायेगा जिससे वृक्ष व पर्यावरण पर इसका दुष्प्रभाव नहीं पड़ेगा। समय की वचत डिजिटल माध्यमों के बढ़ते उपयोग से समय की वचत हो गई एवं सूचना प्राप्त करने के स्पीड एवं एक्जुरेसि होती है।

डिजिटल पुस्तकालय के लाभ और हानि-  
लाभ

- सूचना को तीव्रगति से पहुंचाना
- सूचना के विशाल भण्डार को एक जगह में व्यवस्थित करना
- 24 घण्टे सूचना उपलब्ध करवाना
- सूचना की पुनरावृत्ति को रोकना
- सूचना का आसानी से अदान-प्रदान

हानि

- सभी परम्परागत पुस्तकों का डिजिटलीकरण पड़ता है।
- इसके द्वारा कॉपीराइट कानून का उल्लंघन होता है।

**निष्कर्ष:** इस प्रकार कहा जा सकता है कि डिजिटल पुस्तकालय से एक नये युग का सूत्रपात हुआ है एवं इस महामारी के दौर में हमें यह सोचने पर मजबूर कर दिया हमारी शिक्षा को कैसे सुदृढ़ बनाया जाए जिससे कि बुरे वकत में भी बिना रुके आगे बढ़ सके अतः आज डिजिटल पुस्तकालय वकत की जरूरत है और सभी संस्थाओं को उन्हें बढ़ावा देना चाहिए। भय और भूख मानव स्वभाव के लक्षण है। ये दोनों ही नए अविकार करने हेतु प्रेरित करते रही है एक अदृश्य वायरस से सारी दुनिया डरी हुई थी तब हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी ने नारा दिया आपदा में अवसर की तलाश ही सच्ची कर्मशीलता है। तब डिजिटल पुस्तकालयों में भारतीय ऑनलाइन शिक्षा के क्षेत्र में बड़ा ही योगदान दिया और विपत्तिकाल में छात्रों को घर पर ही पढ़ने का मौका दिया।

इसका ताजा उदाहरण है  
NDL National Digital Library

**संदर्भ सूची**

1. अंसारी (महताब आलम) : सूचना प्रौद्योगिकी के जानकार ग्रन्थ कार्मिकों के लिए उज्जवल भविष्य रोजगार समाचार 11-17 जनवरी-2006 30, अंक-46
2. BAKCR (Phillp): Electronic Library: Vision Of Future
3. The Electronic Libraries 12, No. 4, 1994, 221-29





### अलसी के बीज

अलसी के बीज में एंटी एलर्जिक सिलियम और ओमेगा 3 फैटी एसिड होते हैं, जो कि रोगों से लड़ने की क्षमता को मजबूत बनाने में मदद करते हैं।

### गिलोय का लाभ

गिलोय का सेवन रोजाना करने से इम्यूनिटी तो स्ट्रांग होती ही है उसके साथ-साथ हम क्रॉनिक बुखार, तनाव एवं चिंतन, कमजोर दृष्टि एवं स्किन की एलर्जी से भी बच सकते हैं।

इस प्रकार यदि हमें अपनी इम्यूनिटी को स्ट्रांग बनाना है तो हमें औषधीय पौधों का इस्तेमाल करना पड़ेगा, जिसका कोई साइड इफेक्ट भी नहीं है और जो हमारी सेहत के लिए भी उचित है।



सन्त समीर  
वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति,  
अध्यायेता एवं वरिष्ठ पत्रकार, दिल्ली (NCR)

सबसे पहले यह सोचिए कि कोरोना से अब तक कितने लोग मौत के शिकार हुए हैं? जब तक आप सोचेंगे, तब तक दस-बीस और अनन्त की यात्रा पर निकल चुके होंगे। संक्रमण के शिकार कितने हैं? इसकी गिनती करना और बेकार है, क्योंकि रफ्तार बेतहाशा है। रोज-रोज़ की रिपोर्टों और खबरों में जैसा दिख रहा है, उस हिसाब से ऐसा ही सोचा और कहा जा सकता है, पर इस पूरे कोरोना परिदृश्य को देखने का एक दूसरा नज़रिया भी हो सकता है। वह यह कि कई और बीमारियों के फैलने की रफ्तार भी करीब-करीब कोरोना-जैसी ही रही है, लेकिन उनमें इस तरह से जाँचें नहीं की जाती थीं, तो उनके बारे में हम ज्यादा जान भी नहीं पाते थे। साधारण फ्लू की ही बात कर लें। जिस अमेरिका में सबसे ज्यादा मौतें हो रही हैं, वहाँ के आँकड़ों पर निगाह डालिए। सेण्टर फॉर डिजीज़ कण्ट्रोल एण्ड प्रिवेंशन (CDC) की वेबसाइट पर 1 अक्टूबर, 2019 से 4 अप्रैल, 2020 तक की फ्लू की रिपोर्ट है। इस रिपोर्ट के अनुसार अनुमान है कि इस दौरान अमेरिका में तीन करोड़ नब्बे लाख से पाँच करोड़ साठ लाख तक लोग फ्लू के शिकार हुए। एक करोड़ अस्सी लाख से दो करोड़ साठ लाख लोगों ने इसके लिए मेडिकल सलाह ली। चार लाख दस हजार से सात लाख चालीस हजार तक लोग अस्पतालों में भर्ती हुए। मरने वालों के बारे में अनुमान है कि इनकी सङ्ख्या चौबीस हजार से बासठ हजार के बीच होगी। सीडीसी ने ही 2018 की रिपोर्ट दी है कि उस साल साधारण फ्लू से अमेरिका में अस्सी हजार से ज्यादा लोग मौत के शिकार हुए, जो चार दशकों में सबसे बड़ी सङ्ख्या है। सामान्य निष्कर्ष यह है कि अमेरिका जैसे देश में फ्लू से हर साल चालीस-पचास हजार या इससे कुछ ज्यादा लोग मरते ही हैं। इसी के साथ बीते मई महीने की दिलचस्प रिपोर्ट यह है कि मई में जब अमेरिका में कोरोना बेतहाशा फैल रहा था तो ठन कुछ हफ्तों में वहाँ के अस्पतालों में फ्लू के मरीज़ न के बराबर आए। सवाल है कि जिस देश में करोड़ों लोग हर साल फ्लू से संक्रमित होते हैं और लाखों अस्पताल पहुँचते हैं, वहाँ इस बार ऐसा कैसे हो गया? क्या फ्लू के मरीज़ धरती में समा गए? निष्कर्ष साफ़ है कि पहले कोरोना वायरस की पहचान नहीं थी तो फ्लू का मरीज़ बस फ्लू का माना जाता था, अब कोरोना की पहचान के बाद फ्लू वाले मरीज़ भी कोरोना में रूपान्तरित हो गए, क्योंकि कोरोना भी अनन्तः फ्लू वायरस ही है। अमेरिका में कोरोना से हुई मौतों में से फ्लू, हृदय रोग, उच्च रक्तचाप, अस्थमा, मधुमेह वगैरह की वजह से हुई मौतों की छँटाई की जाय तो कोरोना से मरने











जो भी हो, सामान्य निष्कर्ष यही है कि यह वायरस उतना खतरनाक नहीं है, जितना कि बताया जा रहा है। अलबत्ता, इसका हमला हमारे श्वसन तन्त्र पर है तो उस हिसाब से बर्तने के उपाय भी जरूरी हैं। यह स्पष्ट हो चुका है कि यह मारक तभी बनता है जब मरीज पहले से किसी गम्भीर बीमारी से ग्रस्त रहा हो। कुछ कमजोर दिल वाले लोग डर की वजह से हिम्मत हार रहे हैं, तो वह अलग बात है। फिलहाल, ये कुछ उपाय आप याद रख सकते हैं, जो सरकार तो मुझे कोरोना मरीज देने से रही, पर कई कोरोना मरीज फोन वगैरह पर मुझसे बातें कर रहे हैं और इन्होंने उपायों से मैं उनको परेशानी से बाहर जनकलने में मदद करवा रहा हूँ।

आपके पास कोई दवा न हो, किसी दवा की जानकारी न हो और संक्रमण के शिकार हो गए हों तो स्थिति की गम्भीरता के हिसाब से एक, दो या तीन दिन के उपवास पर आ जाएं। दिन भर गरम पानी पीजिए। मौसमी, सन्तरे का रस पीजिए या सीधे ये फल खा जाएं। इन फलों की उपलब्धता न हो तो दिन भर में पाँच-छह गिलास नारियल पानी पीजिए। सामान्य स्थितियों में समस्या इतने भर से काबू में आ जाएगी। बाद में थोड़े-थोड़े फल, सलाद से शुरु करके ठोस आहार पर आइए। उपवास में यह सावधानी हमेशा बरतनी चाहिए। आस-पास प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र हो तो उसकी शरण में जाएँ, आपका मजे में ठीक हो जाएँगे।

2. तुलसी, दालचीनी, सोंठ, मुलहठी, काली मिर्च और लौंग का काढ़ा बनाकर (चाहें तो गुड़ जमला लें) चाय की तरह दिन में दो-तीन बार पिएँ। इन सारी चीजों में श्वसन तन्त्र को बल देने के अद्भुत गुण पाए गए हैं। इस नुस्खे को मैं बहुत पहले से भी रहा हूँ और लोग इससे फायदा भी महसूस करते रहे हैं। बाद में आयुष मन्त्रालय ने इस नुस्खे को अपनी एडवायिरी में शामिल किया। यह जानना दिलचस्प होगा कि सन् 1918 में जब स्पेनिश फ्लू फैला था तो रोग के प्रसार वाले कुछ इलाकों में दालचीनी की फेंकट्टी में काम करने वाले मजदूरों में किसी को भी संक्रमण नहीं हुआ। इस काढ़े की ताकत और बढ़ानी हो तो इसमें पाँच चीजें और मिला सकते हैं। ये चीजें हैं छोटी इलायची, बड़ी इलायची, पीपर, जावित्री और जायफल। बेहतर रहेगा कि सोंठ, काली

मित्र, पीपर और मुलहठी को बाकी चीजों की तुलना में दूनी मात्रा लें। सबका मतलब यह कि शेष चीजें 1-1 ग्राम हों तो इन चारों की 2-2 ग्राम मात्रा लें। 2 से 5 ग्राम चूर्ण बनाकर एक में मिलाकर किसी शीशी में रख लें। एक बार के लिए 2 से 5 ग्राम मात्रा पर्याप्त है। महामारी के इस समय इस काढ़े को आप जादुई कह सकते हैं। जहाँ भी इसे दिया गया, मरीज हफ्ते-दस दिन में पॉजिटिव से निगेटिव हो गए। अँतों में अल्सर हो, पित ज्य़ादा बढ़ा हुआ हो, गर्भावस्था हो तो किसी वैद्य से सलाह लेकर इसे सेवन करें, तो बेहतर है। राजस्थान में चुरू का गांधी विद्या संस्थान इसी तरह का एक

लाख पैकेट काढा पाउडर प्रतिदिन तैयार कर रहा है।

3. गिलेय या गुडुची तीनों दोषों, यानी कफ-पित्त-वात से पैदा होने वाले सभी तरह के सामान्य ज्वर को काबू करने के लिए बहुत पुराना आजमाया हुआ उपाय है। इसका काढा बनाकर सवेरे-शाम ले सकते हैं। जब भी लें तो कम-से-कम इक्कीस दिनों तक जरूर लें। इक्कीस दिन को कोई अन्धविश्वास न समझें। इसका मजबूत विज्ञान है, पा अलग से चर्चा का विषय है।

4. श्वसन तंत्र को मजबूती देने के लिए गरम दूध में हल्दी मिलाकर रात में सोने से पहले पी सकते हैं। इसके बजाय दिन में एकाध बार पानी में थोड़ा-सा हल्दी चूण मिलाकर भी ले सकते हैं।

5. दिन में तीन-चार टमाटर खाएँ या दो-तीन मौसमी चूसें, तो शरीर को आवश्यक विटामिन-सी मिल जाएगा और इम्युनिटी मजबूत करने में मदद मिलेगी।

6. एक महत्वपूर्ण शोध यह है जक जिसके शरीर में ऑक्सीजन का स्तर अच्छा होगा, कोरोना वायरस उसको ज्यादा नुकसान नहीं पहुँचा पाएगा। ऑक्सीजन का स्तर बढ़ाकर रखने के लिए सबसे अच्छा तरीका नियमित प्राणायाम करना है। भस्त्रिका, कपालभाति, अनुलोम-विलोम और शीतली-शीतकारी प्राणायाम सवेरे खुले में बैठकर जरूर कीजिए। दस-पन्द्रह मिनट से लेकर आधे घण्टे तक कीजिए। सर्दी का समय हो तो शीतली-शीतकारी मत कीजिए।

7. संक्रमण से बचने के लिए आर्सेनिक अल्बम-30 (Arsenic Album-30) हफ्ते भर सवेरे-दोपहर-शाम तीन बार लीजिए, फिर कुछ दिनों तक रोज सवेरे दिन में एक बार ले सकते हैं। जो लोग पूरी तरह स्वस्थ हैं, वे केवल तीन दिनों तक दवा ले लेंगे तो उनके शरीर में इतने भर से ही कोरोना जैसे लक्षणों से लड़ने की इम्युनिटी विकसित हो जाएगी। एकाध महिने बाद चाहें तो इसी तरह तीन दिन फिर से दवा ले सकते हैं। यदि रखिए गोलियाँ हों तो दवा जीभ पर रखकर चूसनी है और द्रव रूप हो तो दो-तीन बूँद जीभ पर टपका लेंगे हैं। दवा लेने के आधे घण्टे पहले या आधे घण्टे बाद तक पानी के अलावा कुछ भी खाना-पीना नहीं है। संक्रमण हो गया हो तो भी यह दवा काम आएगी, पर लक्षणों पर ध्यान देना जरूरी है। इसके मरीज को बार-बार प्यास लगती है, पर वूँट-दो वूँट से ज्यादा पानी नहीं पीता। प्याराहट होती है। पानी पीते ही उल्टी हो जाने की प्रवृत्ति भी हो सकती है। सूखा खाँसी तो खर हो ही सकती है। इन लक्षणों के आधार पर दवा लेंगे तो आसानी से ठीक हो जाएँगे।
8. कैम्फर-1 एम (Camphora-1M) भी इसी तरह ले सकते हैं। यह भी इम्युनिटी बढ़ाएगी। जिन इलाकों में कोरोना मरीजों में दस्त लगाने के हेजा-कैने लक्षण हों, वहाँ के लिए यह इलाज भी रामबाण की तरह असर दिखाएगा। इसके मरीज के शरीर की त्वचा टण्डी महसूस होती है। वायजुट इसके वह खिड़की-दरवाजे खुले रखना चाहता है, टण्डी हवा चाहता है। एम्प्लूएजनीम-30 (Influenzium-30) तथा एकोनाइट-30 (Aconite-30) की दो-दो

दो जीभ पर टपका लें। दिन में एक बार कई दिनों तक रोज ले सकते हैं। फर्षा-छह दिन लेंगे तो भी कोई दिक्कत नहीं है। संक्रमण से बचाने के अलावा यह बार-बार लक्षणों के समय भी काम आ सकता है। जब भी लगे कि रोग का अचानक नुस्खा इलाज है, सिरदर्द, छींकें, गले में खराशा वगैरह शुरू हो गए हैं तो किसी भी आरम्भ हुआ है, सिरदर्द, छींकें, गले में खराशा वगैरह शुरू हो गए हैं तो किसी भी बीमारी में इस नुस्खे को याद कर सकते हैं।

9. नुस्खा इलाज है, सिरदर्द, छींकें, गले में खराशा वगैरह शुरू हो गए हैं तो किसी भी बीमारी में इस नुस्खे को याद कर सकते हैं।
10. नुस्खा इलाज है, सिरदर्द, छींकें, गले में खराशा वगैरह शुरू हो गए हैं तो किसी भी बीमारी में इस नुस्खे को याद कर सकते हैं।
11. नुस्खा इलाज है, सिरदर्द, छींकें, गले में खराशा वगैरह शुरू हो गए हैं तो किसी भी बीमारी में इस नुस्खे को याद कर सकते हैं।

10. नुस्खा इलाज है, सिरदर्द, छींकें, गले में खराशा वगैरह शुरू हो गए हैं तो किसी भी बीमारी में इस नुस्खे को याद कर सकते हैं।
11. नुस्खा इलाज है, सिरदर्द, छींकें, गले में खराशा वगैरह शुरू हो गए हैं तो किसी भी बीमारी में इस नुस्खे को याद कर सकते हैं।

11. नुस्खा इलाज है, सिरदर्द, छींकें, गले में खराशा वगैरह शुरू हो गए हैं तो किसी भी बीमारी में इस नुस्खे को याद कर सकते हैं।
12. नुस्खा इलाज है, सिरदर्द, छींकें, गले में खराशा वगैरह शुरू हो गए हैं तो किसी भी बीमारी में इस नुस्खे को याद कर सकते हैं।

12. नुस्खा इलाज है, सिरदर्द, छींकें, गले में खराशा वगैरह शुरू हो गए हैं तो किसी भी बीमारी में इस नुस्खे को याद कर सकते हैं।
13. नुस्खा इलाज है, सिरदर्द, छींकें, गले में खराशा वगैरह शुरू हो गए हैं तो किसी भी बीमारी में इस नुस्खे को याद कर सकते हैं।



## कोरोना वायरस के लक्षण

कोरोना वायरस (सीओवी) का संबंध वायरस के ऐसे परिवार से है जिसके संक्रमण से जुकाम से लेकर सांस लेने में तकलीफ जैसी समस्या हो सकती है। इस वायरस को पहले कभी नहीं देखा गया है। इस वायरस का संक्रमण दिसंबर में चीन के वुहान में शुरू हुआ था। डब्ल्यूचओ के मुताबिक बुखार, खांसी, सांस लेने में तकलीफ इसके लक्षण हैं। अब तक वायरस को फैलने से रोकने वाला कोई टीका नहीं बना है।

इसके संक्रमण के फलस्वरूप बुखार, जुकाम, सांस लेने में तकलीफ, नाक बहना और गले में खराश जैसी समस्याएं उत्पन्न होती हैं। यह वायरस एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलता है। इसलिए इसे लेकर बहुत सावधानी बरती जा रही है। यह वायरस दिसंबर में पहले चीन में पकड़ में आया था। इसके दूसरे देशों में पहुंच जाने की आशंका जताई जा रही है। कोरोना से मिलते-जुलते वायरस खांसी और छींक से गिरने वाली बूंदों के जरिए फैलते हैं। कोरोना वायरस अब चीन में उतनी तीव्र गति से नहीं फैल रहा है जितना दुनिया के अन्य देशों में फैल रहा है। कोविड 19 नाम का यह वायरस अब तक 70 से ज्यादा देशों में फैल चुका है। कोरोना के संक्रमण के बढ़ते खतरे को देखते हुए सावधानी बरतने की जरूरत है ताकि इसे फैलने से रोका जा सके।

**क्या है इस बीमारी के लक्षण ?**

कोरोना वायरस (सी.ओ.वी.) का संबंध वायरस के ऐसे परिवार से है जिसके संक्रमण से जुकाम से लेकर सांस लेने में तकलीफ जैसी समस्या हो सकती है। इस वायरस को पहले कभी नहीं देखा गया है। इस वायरस का संक्रमण दिसंबर में चीन के वुहान में शुरू हुआ था। डब्ल्यू.एच.ओ. के मुताबिक बुखार, खांसी, सांस लेने में तकलीफ इसके लक्षण हैं। अब तक इस वायरस को फैलने से रोकने वाला कोई टीका नहीं बना है।

इसके संक्रमण के फलस्वरूप बुखार, जुकाम, सांस लेने में तकलीफ, नाक बहना और गले में खराश जैसी समस्याएं उत्पन्न होती हैं। यह वायरस एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलता है। इसलिए इसे लेकर बहुत सावधानी बरती जा रही है। यह वायरस दिसंबर में पहले चीन में पकड़ में आया था। इसके दूसरे देशों में पहुंच जाने की आशंका जताई जा रही है। कोरोना से मिलते-जुलते वायरस खांसी और छींक से गिरने वाली बूंदों के जरिए अन्य देशों में फैल रहा है। कोविड 19 नाम का यह वायरस अब तक 70 से ज्यादा देशों में फैल चुका है। कोरोना के संक्रमण के बढ़ते खतरे को देखते हुए सावधानी बरतने की जरूरत है ताकि इसे फैलने से रोका जा सके।

निष्ठा कौंसे  
एम.ए.-प्रथम  
वज्राल लाल महाविद्यालय, लंडौरा

वज्राल लाल महाविद्यालय, लंडौरा जगदपद हरिद्वार

वज्राल संदेश

**कोरोना वायरस के लक्षण ?**

इस बीमारी के लक्षणों में पहले बुखार होता है। इसके बाद सूखी खांसी होती है। कोविड-19 कोरोना वायरस में परेशानी होने लगती है। फिर एक हफ्ते बाद सांस लेने में परेशानी होने लगती है। इन लक्षणों का हमेशा मतलब यह नहीं है कि आपको कोरोना वायरस का संक्रमण है। कोरोना वायरस के गंभीर मामलों में न्यूमोनिया, सांस लेने में बहुत ज्यादा परेशानी, फिडनी फल होना और यहां तक कि मौत भी हो सकती है। बुजुर्ग या जिन लोगों को पहले से अस्थमा, मधुमेह या हार्ट की बीमारी है उनके मामले में खतरा गंभीर हो सकता है। जुकाम और फ्लू में कोरोना वायरस का संक्रमण हो जाए तब ?

मधुमेह या हार्ट की बीमारी है उनके मामले में खतरा गंभीर हो सकता है।

कोरोना वायरस का संक्रमण हो जाए तब ?  
इस समय कोरोना वायरस का कोई इलाज नहीं है लेकिन इसमें बीमारी के लक्षण कम होने वाली दवाइयां दी जा सकती हैं।  
जब तक आप ठीक न हो जाएं, तब तक आप दूसरों से अलग रहें।  
कोरोना वायरस के इलाज के लिए वैक्सीन विकसित करने पर काम चल रहा है।  
इस साल के अंत तक इंसानों पर इसका परीक्षण कर लिया जाएगा।  
इस साल के अंत तक इंसानों पर इसका परीक्षण कर रहे हैं।

**कुछ अस्पताल एंटीवायरल दवा का भी परीक्षण कर रहे हैं।**

**क्या है इससे बचाव के उपाय ?**  
स्वास्थ्य मंत्रालय ने कोरोना वायरस से बचने के लिए दिशा-निर्देश जारी किए हैं।

इनके मुताबिक हाथों को साबुन से धोना चाहिए।  
एल्कोहल आधारित हैंड रब का इस्तेमाल भी किया जा सकता है।  
खांसते और छींकते समय नाक और मुंह रूमाल या टिशू पेपर से ढंकर रखें।  
जिन व्यक्तियों में कोल्ड और फ्लू के लक्षण हों, उनसे दूरी बनाकर रखें।  
अंडे और मांस के सेवन से बचें।  
जंगली जानवरों के संपर्क में आने से बचें।

**अगर आप स्वस्थ हैं तो आपको मास्क की जरूरत नहीं है।**

अगर आप किसी कोरोना वायरस से संक्रमित व्यक्ति की देखभाल कर रहे हैं, तो अगर आप किसी कोरोना वायरस से संक्रमित व्यक्ति की देखभाल कर रहे हैं, तो आपको मास्क पहनना होगा।

जिन लोगों को बुखार, कफ या सांस में तकलीफ की शिकायत है, उन्हें मास्क पहनना चाहिए और तुरंत डॉक्टर के पास जाना चाहिए।

**मास्क पहनने का तरीका :-**

मास्क पहनने का तरीका :-  
मास्क पर सामने से हाथ नहीं लगाना चाहिए।  
अगर हाथ लगा जाए तो तुरंत हाथ धोना चाहिए।  
मास्क को ऐसे पहनना चाहिए कि आपकी नाक, मुंह और दाढ़ी का हिस्सा उससे ढंका रहे।

मास्क उतारते वक्त भी मास्क की लास्टिक या फीता पकड़कर निकालना चाहिए।

मास्क नहीं छूना चाहिए।

हर रोज मास्क बदल दिया जाना चाहिए।

कोरोना का खतरा कैसे करें कम, पढ़ें उपाय

कोरोना से मिलते-जुलते वायरस खांसी और छींक से गिरने वाली बूंदों के जरिए फैलते हैं।  
अपने हाथ अच्छी तरह धोएं।

खांसते या छींकते वक्त अपना मुंह ढंक लें।

हाथ साफ नहीं हो तो आंखों, नाक और मुंह को छूने बचें।

कोरोना का संक्रमण फैलने से कैसे रोकें ?

सार्वजनिक वाहन जैसे बस, ट्रेन, ऑटो या टैक्सी से यात्रा न करें।

घर में मेहमान न बुलाएं।

घर का सामान किसी और से मंगाएं।

ऑफिस, स्कूल या सार्वजनिक जगहों पर न जाएं।

अगर आप और भी लोगों के साथ रह रहे हैं, तो ज्यादा सतर्कता बरतें।

अलग कमरे में रहें और साझा रसोई व बाथरूम को लगातार साफ करें।

14 दिनों तक ऐसा करते रहें ताकि संक्रमण का खतरा कम हो सके।

अगर आप संक्रमित इलाके से आए हैं या किसी संक्रमित व्यक्ति के संपर्क में रहे हैं तो आपको अकेले रहने की सलाह दी जा सकती है। अतः घर पर रहें।

**उपसंहार :** लगभग 18 साल पहले सार्स वायरस से भी ऐसा ही खतरा बना था। 2002-03 में सार्स की वजह से पूरी दुनिया में 700 से ज्यादा लोगों की मौत हुई थी। पूरी दुनिया में हजारों लोग इससे संक्रमित हुए थे। इसका असर आर्थिक गतिविधियों पर भी पड़ा था। कोरोना वायरस के बारे में अभी तक इस तरह के कोई प्रमाण नहीं मिले हैं कि कोरोना वायरस पार्सल, चिट्टियों या खाने के जरिए फैलता है। कोरोना वायरस जैसे वायरस शरीर के बाहर बहुत ज्यादा समय तक जिंदा नहीं रह सकते। कोरोना वायरस को लेकर लोगों में एक अलग ही बेचैनी देखने को मिली है। मेडिकल स्टोर्स में मास्क और सैनेटाइजर की कमी हो गई है, क्योंकि लोग तेजी से इन्हें खरीदने के लिए दौड़ रहे हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन, पब्लिक हेल्थ इंग्लैंड और नेशनल हेल्थ सर्विस (एन.एच.एस.) से प्राप्त सूचना के आधार पर हम आपको कोरोना वायरस से बचाव के तरीके बता रहे हैं। एयरपोर्ट पर यात्रियों की स्क्रीनिंग हो या फिर लैब में लोगों की जांच, सरकार ने कोरोना वायरस से निपटने के लिए कई तरह की तैयारी की है। इसके अलावा किसी भी तरह की अफवाह से बचने, खुद की सुरक्षा के लिए कुछ निर्देश जारी किए हैं जिससे कि कोरोना वायरस से निपटा जा सकता है।



कोरोना संक्रमण काल में लोगों ने अपनी प्रतिरोधक क्षमता बनाए रखने के लिए हरसम्भव प्रयास किए और इसी का परिणाम है कि वे इस संक्रमण से बराबर मुकाबला कर रहे हैं। कोविड-19 की स्थिति में फेफड़ों को हानि पहुँचाने का मुख्य कारण अधिक मुफ्त रेडिकल और आक्सीडेटिव स्ट्रेस होता है, जो इम्यून सिस्टम के सही काम न करने की वजह से होता है। यह वायरस शरीर से विटामिन सी को समाप्त करने को कोशिश करता है। विटामिन सी को 20वीं सदी के प्रारम्भ में (अल्बर्ट सर्जेंट गियोगी) Albert Szent-Gyorgi ने पहचाना था, जिसकी कमी से स्कर्वी रोग होता है। स्कर्वी की शुरुआत में निमोनिया से जोड़ा गया था, जिससे यह पता चला कि स्कर्वी का निमोनिया पर भी प्रभाव हो सकता है।

### विटामिन 'सी' की संरचना-

विटामिन 'सी' का रासायनिक नाम एसकारविक अम्ल है। शुद्ध विटामिन 'सी' सफेद खेदार, गन्धरहित, पानी में घुलनशील, आग के प्रति अस्थिर, धूल एवं रोशनी में नष्ट होने वाला होता है। ताप, वायु, धातु में यह स्थिर है, तरल अवस्था में पानी के साथ इसका घोल बनाया जाता है, यानि यह पानी में घुलनशील है, और ताप, वायु में यह नष्ट हो जाता है।

### विटामिन 'सी' प्राप्ति के स्रोत-

ताजे फल तथा सब्जियों में विटामिन 'सी' की अधिक मात्रा पायी जाती है। जैसे- नारंगी, नींबू, बेरी, तरबूज, अमरूद, अनानास, आँवला में विटामिन 'सी' प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। हरी पत्तेदार तरकारियों में सलाद, टमाटर, गोभी आदि में भी यह प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। अनाजों तथा दालों में विटामिन 'सी' की न्यूनता होती है। दूध में विटामिन 'सी' कम मात्रा में पाया जाता है। पकाने तथा रखने से यह मात्रा और भी कम हो जाती है। फल एवं हरे पत्तेदार सब्जियों को भी अधिक पकाये जाने पर विटामिन 'सी' की मात्रा कम हो जाती है। कच्ची अवस्था में ही विटामिन 'सी' अधिक मात्रा में होता है।

### विटामिन 'सी' के कार्य-

कोलेजन निर्माण (Formation of Collagen)

विटामिन 'सी' कोलेजन का निर्माण करता है, जो कि अन्तः कोशिकाओं को जोड़ने वाला पदार्थ है। यह शरीर की लम्बी अस्थियों के सिरों पर भी उपस्थित रहता है तथा उनको माँसपेशियों में जोड़ता है। यह दाँत के भीतरी भाग को भी बनाता है। रक्तवाहिनियों को जोड़ने का कार्य भी करता है।





**चमन संदेश** चमन लाल महाविद्यालय, लंडौरा जनपद हरिद्वार

हैं और इसकी भूमिका को बेहतर ढंग से परिभाषित करने हेतु प्रयत्नशील हैं।

**जर्नल संदर्भ-**

होलफोर्ड, पी, कैर, ए, जोकोव, टीएच, एस आर, व्हाइटेकर, आईएस, मारिक,  
स्मिथ, डी विटामिन सी-श्वसन संक्रमण, सेप्सिस और कोविड-19 में एक सहायक चिकित्सा  
Preprints 2020, 2020100407 (doi: 10.2944/preprints 202010.0407.VI).

आहार एवं पोषण विज्ञान - डॉ श्रीमती कान्ति पाण्डेय

आहार एवं पोषण विज्ञान- विमल शर्मा, एम.ए.

पोषण - जे.एस. विनायक, एम.ए., आर.एस.

www.jagran.com झंकार (रविवार, 20 दिसम्बर 2020)

हिन्दी.न्यूज 18.काम



योशिता विनय पांडेय

उदघोषिका-आकाशवाणी, देहरादून

क्या अभी भी आप सबको कोरोना का डर सता रहा है नहीं ना! शुरुआती दौर के मुकाबले अब कोरोना से लड़ने के लिए हम सब मानसिक और शारीरिक दोनों तरीके से ज्यादा तैयार हैं। कभी आपने सोचा कि आखिर ऐसा हुआ कैसे? यह एक आमूल चूल परिवर्तन है। जिसमें इस महामारी को लेकर तमाम विशेषज्ञ वैज्ञानिक और शोध संस्थाएं पानी का घूंट पी पीकर आगाह कर रही थी डरा रही थी बता रही थी वह आज हमारी जीवनशैली का महज हिस्सा कैसे बन गया। कभी सोचा आपने हम सब अपना हर काम कर रहे हैं। ऑफिस, नौकरी, कारोबार, घर का काम हो, चाहे कैसा भी काम हो सब सामान्य होने की ओर अग्रसर है। फर्क तो पड़ा है लेकिन जिस से भयानक तस्वीर की ओर इशारा किया जा रहा था कि दुनिया खत्म हो जाएगी स्वाइन फ्लू जैसी स्थिति बन जाएगी स्वास्थ्य व्यवस्थाएं चरमरा जाएंगे यहां तक कि खाने के लाले पड़ जाएंगे निवाला तक लोगों को नसीब नहीं होंगे। पर ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। दरअसल मानवता बहुत जीवट है। करोड़ों साल से सर्दी गर्मी और बरसात इत्यादि को झेलता आ रहा है। इंसानी शरीर और उसका दिमाग इतनी सहजता से हार नहीं मानता। हाँ, अगर स्वास्थ्य विशेषज्ञों की बात करें तो विशेषज्ञों ने डर की जो भयावह तस्वीर जनता के सामने दिखाई उसके पीछे अगर उनकी मंशा लोगों के बीच सतर्कता सजगता और जागरूकता फैलाने की रही तो वह एक मामले में सही है। लेकिन अगर सिर्फ डराने के लिए रही तो वह पूरी तरीके से गलत है। सचेत करना अच्छी बात है लेकिन डराना गलत है। जिस तरीके से बात करने के कई तरीके होते हैं। उसी प्रकार से सचेत करने के भी कई तरीके होते हैं। हमारी भारतीय सभ्यता बहुत पुरानी है। वक्त के थपेड़ों ने हमें इतना मजबूत बना दिया कि किसी भी चुनौती से निकलने में भारतीयों को मुश्किल नहीं आती। हालांकि अब तो इस वायरस की वैक्सीन भी आने वाली है। उससे पहले ही देश की रिकवरी रेट तेजी से बढ़ रहा है। अगर सक्रिय केसों की बात करें तो उसके मुकाबले स्वस्थ मामले कई गुना बढ़ चुके हैं। तमाम आपात तैयारियों की जरूरत ही नहीं पड़ी है। हमारी पुरातन पद्धति ने हमारे इम्यून सिस्टम को इतना मजबूत कर दिया कि ज्यादातर लोग होम आइसोलेशन में ही स्वस्थ होते जा रहे हैं। अब कहीं ना कहीं इस घटनाक्रम से हमें यह भी सीख लेनी चाहिए कि पुरातन व्यवस्था को भूलना नहीं चाहिए। बल्कि अपने जीवन में शुमार करना चाहिए। जिंदगी तेजी के साथ पुराने ढर्रे पर लौट रही है। अर्थव्यवस्था के करीब 99 प्रतिशत क्षेत्र खोले जा चुके हैं और

**चमन संदेश** चमन लाल महाविद्यालय, लंडौरा जलपढ हरिद्वार

सबसे अच्छी बात यह है कि उत्साहित करने वाले इन नतीजों के बाद भी हम शिथिल नहीं हुए। अब जिंदगी जीने की और कोरोनाकाल हारने की ओर है। यह एक अच्छा अनुवाद है। अभी कहां जा सकता है जिस प्रकार से अनुमान लगाए जा रहे हैं मामले की दर में कमी आ रही है तो आम इंसान ने कोरोना महामारी के ऊपर अपनी जीत हासिल की है। एक वक्त ऐसा हुआ कि प्रत्येक भारतीय इतना डर चुका था कि अपने जीवन को हर वक्त डर के जीता था। हर वक्त मन में एक घबराहट थी हालांकि ऐसी घबराहट अभी भी है जो अप्रत्याशित है। कि पता नहीं अगले पल क्या होगा। हर समय एक अनजाना से सवाल था। हर किसी की निगाहें एक दूसरे से पूछ करती थी कि आखिर कब इस कोरोना से इंसान से निबट पायेगा। लेकिन किसी ने सच ही कहा कि डर के आगे जीत। जब आम जनमानस ने इस डर को निकाल फेंका और कोरोनाकाल में अपनी सुरक्षा स्वयं करना सीख लिया। साथ ही साथ कोरोना वायरस को हराना भी सीख लिया और इस बात को चरितार्थ कर दिया कि डर के आगे जीत है।



# चमन लाल महाविद्यालय

## कोरोना वायरस एक संक्रमण

अनु वर्मा

बी.ए.-तृतीय वर्ष

चमन लाल महाविद्यालय, लंदौरा

कोरोना वायरस को विश्व स्वास्थ्य संगठन ने महामारी घोषित कर दिया है। कोविड-19 का संक्रमण बहुत जल्दी एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलता है। इसलिए इस वायरस से बचाव के लिए सरकार द्वारा सावधानी बरतने की सलाह दी जा रही है।

### कोरोना वायरस क्या है?

कोरोना वायरस यह एक ऐसा संक्रमण है जिसमें व्यक्ति को सर्दी-जुखाम और सांस लेने जैसी समस्या हो सकती है। यदि किसी व्यक्ति को कोरोना हुआ है तो वायरस उस व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में बहुत जल्दी ट्रांसफर होता है इसलिए इससे बचने के लिए सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करने की सलाह दी जा रही है। सरकार सामाजिक दूरी बनाए रखने पर जोर दे रही है ताकि इस वायरस से बचा जा सके। यही कारण है कि पूरे देश में लॉकडाउन किया गया।

### कोरोना वायरस के लक्षण?

इस बीमारी के लक्षणों की बात करें तो यह सामान्य सर्दी-जुखाम या निमोनिया जैसा होता है। इस वायरस का संक्रमण होने के बाद बुखार, जुकाम, सांस लेने में तकलीफ, नाक बहना और गले में खराश जैसी समस्याएं होती हैं। यह वायरस एक से दूसरे व्यक्ति में बहुत आसानी से फैलता है इसलिए इसे लेकर बहुत सावधानी बरती जा रही है। यह वायरस दिसंबर में सबसे पहले चीन में सामने आया था और तब से यह बड़ी तेजी से दूसरे देशों में भी पहुंच रहा है।

कोरोना से बचाव के लिए सोशल डिस्टेंसिंग रखना जरूरी है। हाथों को बार-बार धोना है और सफाई का पूरा ध्यान रखना है। मास्क का इस्तेमाल करें।

हाथ मिलाने की जगह नमस्ते करने की आदत बनाएं। घर में लाई गई किसी भी चीज को पहले सैनेटाइज करें, फिर उसका इस्तेमाल करें। मोबाइल व लैपटॉप को भी समय-समय पर साफ करते रहें। चेहरे और आंखों पर हाथों से टच नहीं करना है। यदि आपकी चेहरे को बार-बार टच करने की आदत है, तो इसे तुरंत बदल डालें।

**चमन संदेश** चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा जनपद हरिद्वार

छींकते और खांसते समय अपनी नाक और मुंह को रूमाल या टिशू से ढकें।

इस्तेमाल किए गए टिशू को तुरंत बंद डिब्बे में फेंकें।

अपने इम्यून सिस्टम को मजबूत बनाएं जिसके लिए आप अपनी डाइट में पौष्टिक चीजों को शामिल करें।

दिनभर में कम से कम 1 बार हल्दी वाले दूध का सेवन जरूर करें।

गुनगुना पानी पीने की आदत डालें।

अपने तापमान और श्वसन लक्षणों की जांच नियमित रूप से करे

कोरोना वायरस से बचने के लिए लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। शोधकर्ता वैज्ञानिक इस वायरस से छुटकारा पाने के लिए दवा बनाने में जुटे हुए हैं। सरकार द्वारा लगातार इस खतरनाक बीमारी से बचने के लिए कठोर कदम उठाए जा रहे हैं ताकि इस महामारी से निजात पा सकें। इसलिए यह हम सबकी जिम्मेदारी बनती है कि हम नियमों का कड़ाई से पालन करें ताकि हम देश को रोगमुक्त कर सकें।



# सूक्ष्म वायरस

सावेज खान

बी.ए.- द्वितीय वर्ष

चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोरोना वायरस को महामारी घोषित कर दिया है। कोरोना वायरस बहुत सूक्ष्म लेकिन घातक वायरस है। लेकिन कोरोना का संक्रमण दुनियाभर में तेजी से फैल रहा है।

## कोरोना वायरस क्या है?

कोरोना वायरस (सीओवी) का संबंध वायरस के ऐसे परिवार से है जिसके संक्रमण से जुकाम से लेकर सांस लेने में तकलीफ जैसी समस्या हो सकती है। इस वायरस को पहले कभी नहीं देखा गया है। इस वायरस का संक्रमण दिसंबर में चीन के वुहान में शुरू हुआ था। डब्ल्यूएचओ के मुताबिक बुखार, खांसी, सांस लेने में तकलीफ इसके लक्षण हैं। अब तक इस वायरस को फैलने से रोकने वाला कोई टीका नहीं बना है।

इसके संक्रमण के फलस्वरूप बुखार, जुखाम, सांस लेने में तकलीफ, नाक बहना और गले में खराश जैसी समस्याएं उत्पन्न होती हैं। यह वायरस एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलता है। इसलिए इसे लेकर बहुत सावधानी बरती जा रही है। यह वायरस दिसंबर में सबसे पहले चीन में पकड़ में आया था। इसके दूसरे देशों में पहुंच जाने की आशंका जताई जा रही है।

कोरोना से मिलते-जुलते वायरस खांसी और छींक से गिरने वाली बूंदों के जरिए फैलते हैं। कोरोना वायरस अब चीन में उतनी तीव्र गति से नहीं फैल रहा है जितना दुनिया के अन्य देशों में फैल रहा है। कोविड 19 नाम का यह वायरस अब तक 70 से ज्यादा देशों में फैल चुका है। कोरोना के संक्रमण के बढ़ते खतरे को देखते हुए सावधानी बरतने की जरूरत है ताकि इसे फैलने से रोका जा सके।

## क्या हैं इस बीमारी के लक्षण?

कोविड-19 कोरोना वायरस में पहले बुखार होता है। इसके बाद सूखी खांसी होती है और फिर एक हफ्ते बाद सांस लेने में परेशानी होने लगती है।

इन लक्षणों का हमेशा मतलब यह नहीं है कि आपको कोरोना वायरस का संक्रमण है। कोरोना वायरस के गंभीर मामलों में निमोनिया, सांस लेने में बहुत ज्यादा परेशानी, किडनी फेल होना और यहां तक कि मौत भी हो सकती है। बुजुर्ग या जिन लोगों को पहले से अस्थमा,

मधुमेह या हार्ट की बीमारी है उनके मामले में खतरा गंभीर हो सकता है। जुकाम और फ्लू के वायरसों में भी इसी तरह के लक्षण पाए जाते हैं।

**कोरोना वायरस का संक्रमण हो जाए तब?**

इस समय कोरोना वायरस का कोई इलाज नहीं है लेकिन इसमें बीमारी के लक्षण कम होने वाली दवाइयां दी जा सकती हैं।

जब तक आप ठीक न हो जाएं, तब तक आप दूसरों से अलग रहें।

इस साल के अंत तक इंसानों पर इसका परीक्षण कर लिया जाएगा।

कुछ अस्पताल एंटीवायरल दवा का भी परीक्षण कर रहे हैं।

क्या हैं इससे बचाव के उपाय ?

इनके मुताबिक हाथों को साबुन से धोना चाहिए।

खांसते और छींकते समय नाक और मुंह रूमाल या टिशू पेपर से ढंकाकर रखें।

जिन व्यक्तियों में कोल्ड और फ्लू के लक्षण हों, उनसे दूरी बनाकर रखें।

अंडे और मांस के सेवन से बचें।

जंगलों जानवरों के संपर्क में आने से बचें।

मास्क कौन और कैसे पहनें ?

अगर आप स्वस्थ हैं तो आपको मास्क की जरूरत नहीं है।

अगर आप किसी कोरोना वायरस से संक्रमित व्यक्ति की देखभाल कर रहे हैं, तो आपको मास्क पहनना होगा।

जिन लोगों को बुखार, कफ या सांस में तकलीफ की शिकायत है, उन्हें मास्क पहनना चाहिए और तुरंत डॉक्टर के पास जाना चाहिए।

मास्क पर सामने से हाथ नहीं लगाना चाहिए।

अगर हाथ लग जाए तो तुरंत हाथ धोना चाहिए।

मास्क को ऐसे पहनना चाहिए कि आपको नाक, मुंह और दाढ़ी का हिस्सा उससे ढका रहे।

मास्क उतारते वक्त भी मास्क को लास्टिक या फीता पकड़कर निकालना चाहिए, मास्क नहीं धूना चाहिए।

हर रोज मास्क बदल दिया जाना चाहिए।

कोरोना का खतरा कैसा करें कम, पढ़ें उपाय कोरोना से मिलते-जुलते वायरस खांसी और छींक से गिरने वाली वृद्धों के जरिए फैलते हैं।

अपने हाथ अच्छी तरह धोएं।

खांसते या छींकते वक्त अपना मुंह ढंका लें।

हाथ साफ नहीं हो तो आंखों, नाक और मुंह को धुने बचें।

कोरोना का संक्रमण फैलने से कैसे रोकें ?

पर में मेहमान न बुलाएं।

घर का सामान किसी और से मंगाएं।

घर का सामान किसी और से मंगाएं।

ऑफिस, स्कूल या सार्वजनिक जगहों पर न जाएं।

अगर आप और भी लोगों के साथ रह रहे हैं, तो ज्यादा सतर्कता बरतें।

अगर आप कमरे में रहें और साझा रसोई व बाथरूम को लगातार साफ करें।

अलग कमरे में रहें और साझा रसोई व बाथरूम का खतरा कम हो सके।

14 दिनों तक ऐसा करते रहें ताकि संक्रमण का खतरा कम हो सके।

अगर आप संक्रमित इलाके से आए हैं या किसी संक्रमित व्यक्ति के संपर्क में रहें हैं तो आपको अकेले रहने दी जा सकती है। अतः घर पर रहें।

लगाभग 18 साल पहले सार्स वायरस से भी ऐसा हो खतरा बना था। 2002-03 में

सार्स की वजह से पूरी दुनिया में 700 से ज्यादा लोगों की मौत हुई थी। पूरी दुनिया में हजारों लोग इससे संक्रमित हुए थे। इसका असर आर्थिक गतिविधियों पर भी पड़ा था। कोरोना वायरस के बारे में अभी तक इस तरह के कोई प्रमाण नहीं मिले हैं कि कोरोना वायरस पासल, विट्टियों या खाने के जरिए फैलता है। कोरोना वायरस जैसे वायरस शरीर के बाहर बहुत ज्यादा समय तक जिंदा नहीं रह सकते।

कोरोना वायरस को लेकर लोगों में एक अलग ही बेवैनी देखने को मिली है। मेडिकल स्टोर्स में मास्क और सैनेटाइजर की कमी हो गई है, क्योंकि लोग तेजी से इन्हें खरीदने के लिए दौड़ रहे हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन, पब्लिक हेल्थ इंस्टीट्यूट और नेशनल हेल्थ सर्विसेस (एन.एच.एस.) से प्राप्त सूचना के आधार पर हम आपको कोरोना वायरस से बचाव के तरीके बता रहे हैं। एयरपोर्ट पर यात्रियों की स्क्रीनिंग हो या फिर तैब में लोगों की जांच, सरकार ने कोरोना वायरस से निपटने के लिए कई तरह की तैयारी की है। इसके अलावा किसी भी तरह की अपवाह से बचने, खुद को सुरक्षा के लिए कुछ निर्देश जारी किए हैं।





1. **कक्षा 51 हजार से अधिक लक्षणों की भील की चुकी है।**  
**प्रश्नक :** " **कोरोना वायरस** (NCoV) ने **कोरोना वायरस** को **महामारी** घोषित कर दिया है। **कोरोना वायरस** बहुत **मृदुल** लेकिन **घातक वायरस** है। **कोरोना वायरस** मानव के **घर** से **900 गुना** छेड़ है, लेकिन **कोरोना** का **संक्रमण** **सुनिश्चित** में **तेजी** से **फैल** रहा है।

**कोरोना वायरस (सी.ओ.वी.)** का **संबंध** **वायरस** के **ऐसे** परिवार से है जिसके **घर** में **900 गुना** छेड़ है :-

**कोरोना वायरस** (सी.ओ.वी.) का **संबंध** **वायरस** के **ऐसे** परिवार से है जिसके **घर** में **900 गुना** छेड़ है :-

**कोरोना वायरस** (सी.ओ.वी.) का **संबंध** **वायरस** के **ऐसे** परिवार से है जिसके **घर** में **900 गुना** छेड़ है :-

**कोरोना वायरस** (सी.ओ.वी.) का **संबंध** **वायरस** के **ऐसे** परिवार से है जिसके **घर** में **900 गुना** छेड़ है :-

**कोरोना वायरस** (सी.ओ.वी.) का **संबंध** **वायरस** के **ऐसे** परिवार से है जिसके **घर** में **900 गुना** छेड़ है :-

**कोरोना वायरस** (सी.ओ.वी.) का **संबंध** **वायरस** के **ऐसे** परिवार से है जिसके **घर** में **900 गुना** छेड़ है :-

**कोरोना वायरस** (सी.ओ.वी.) का **संबंध** **वायरस** के **ऐसे** परिवार से है जिसके **घर** में **900 गुना** छेड़ है :-

**कोरोना वायरस** (सी.ओ.वी.) का **संबंध** **वायरस** के **ऐसे** परिवार से है जिसके **घर** में **900 गुना** छेड़ है :-

**कोरोना वायरस** (सी.ओ.वी.) का **संबंध** **वायरस** के **ऐसे** परिवार से है जिसके **घर** में **900 गुना** छेड़ है :-

**कोरोना वायरस** (सी.ओ.वी.) का **संबंध** **वायरस** के **ऐसे** परिवार से है जिसके **घर** में **900 गुना** छेड़ है :-

**कोरोना वायरस** (सी.ओ.वी.) का **संबंध** **वायरस** के **ऐसे** परिवार से है जिसके **घर** में **900 गुना** छेड़ है :-

**कोरोना वायरस** (सी.ओ.वी.) का **संबंध** **वायरस** के **ऐसे** परिवार से है जिसके **घर** में **900 गुना** छेड़ है :-

**कोरोना वायरस** (सी.ओ.वी.) का **संबंध** **वायरस** के **ऐसे** परिवार से है जिसके **घर** में **900 गुना** छेड़ है :-

**कोरोना वायरस** (सी.ओ.वी.) का **संबंध** **वायरस** के **ऐसे** परिवार से है जिसके **घर** में **900 गुना** छेड़ है :-

# नोबेल कोरीना वायर्स एवं परिधता

असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग  
राज्यपाल महाविद्यालय, काठमाडौं

सम्पूर्ण विश्व सहित भारत भी कोरीना वायर्स से अछुता न रह सका। साल 2019 के विजेता भारत में चारना के बृहान भारत से यह वायर्स पूरी दुनिया में कैसे फैल गया देखने देखीं। चीन चल गया। भारत में पहला मामला कोरला को छात्र में मिला। जो कि बृहान विश्वविद्यालय में अध्ययनरत था इस महाभारती के अमेरिका सहित सम्पूर्ण विश्व में लाखां रोगी या चर्चा के शरीर है कि यह वायर्स चमगादड़ से इंसान में आया है जापान के टाइटर वायरस को कहते हैं यह वायर्स प्राकृतिक वायर्स नहीं है बल्कि यह मानव निर्मित है यह वायर ही निन्दनीय मानव कृत्य हो जाता है।

चेरें को विश्व में इससे पहले भी बहुत सी प्राकृतिक आपदाएं आती रहीं हैं। पृथ्वी को संक्रमित वायारियाँ और महाभारती फैली जैसे हैंगु, स्माल्पॉक्स, चिकन पॉक्स, रेबीज, एचआईवी, इन्फ्लूएंजा आदि पर इन सब के निश्चित लक्षण व निश्चित दवाएं हैं वहीं एचआईवी, रेबीज, चिकन पॉक्स आदि महाभारतियों का निपटारा हुआ पर कोविड-19 को वंचे निश्चित लक्षण देखने को नहीं मिलता है तथा यह अत्यधिक गंभीर महाभारती का रूप लेती है बल्कि यह एक विषाणु जनित महाभारती का रूप ले लेती है प्लजमा शैरपी इसमें बहुत हद तक असह्यता साबित हुई है जिसमें टेक, होने वाले रोगियों ये निरन्तर बढ़ती देखीं गयीं।

कोरीना अंतर्देशीय जनावर का कारण बना हुआ है। भारत ये कोविड-19 से निपटने को निरन्तर निर्णय लेते चार विश्व भर में सातवीं चर्चा रहे। मात्राएं स्थापित कीं गयीं संशय रहितसंग वायर्स को अतिबाधता सम्पूर्ण लोक डाउन आदि गतवर्ष 2020 के भारत से भारत में कोरीना कोहल से सम्पूर्ण जन जीवन दहल गया 22 मार्च से शुरू हुए लोकडाउन से पूरे भारत में कौन परीचल नहीं है पर होने हुए भी सड़कों पर उतरने को मजबूर सरकारी व्यवस्थाएं टप पड़ते देखीं गयीं रोजगार सूजन को दूसरी जगहों पर गये लम्बाया लो संशय को वेश को तरह तरह भूखे प्यासे भाले देखीं गयीं। रोजगार बन्द, परीक्षाएं बन्द सरकारी, गैर सरकारी स्कूल बन्द सभी संस्थाएं बन्द, ब्यापार बन्द, परीक्षाएं बन्द सभी पर इस महाभारती का प्रभाव पड़ा है। पर अब कोविड-19 को बैकसीन आ रही है और इससे संतोषजनक परिणाम सम्पूर्ण विश्व में प्राप्त हो रहे हैं। पर हम लोकडाउन व अन्य कार्यों से चलते आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक, शैक्षणिक क्षेत्रों पर खर्ची किये बिना

# नोबेल कोरीना वायर्स एवं परिधता

असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग  
राज्यपाल महाविद्यालय, काठमाडौं

सम्पूर्ण विश्व सहित भारत भी कोरीना वायर्स से अछुता न रह सका। साल 2019 के विजेता भारत में चारना के बृहान भारत से यह वायर्स पूरी दुनिया में कैसे फैल गया देखने देखीं। चीन चल गया। भारत में पहला मामला कोरला को छात्र में मिला। जो कि बृहान विश्वविद्यालय में अध्ययनरत था इस महाभारती के अमेरिका सहित सम्पूर्ण विश्व में लाखां रोगी या चर्चा के शरीर है कि यह वायर्स चमगादड़ से इंसान में आया है जापान के टाइटर वायरस को कहते हैं यह वायर्स प्राकृतिक वायर्स नहीं है बल्कि यह मानव निर्मित है यह वायर ही निन्दनीय मानव कृत्य हो जाता है।

चेरें को विश्व में इससे पहले भी बहुत सी प्राकृतिक आपदाएं आती रहीं हैं। पृथ्वी को संक्रमित वायारियाँ और महाभारती फैली जैसे हैंगु, स्माल्पॉक्स, चिकन पॉक्स, रेबीज, एचआईवी, इन्फ्लूएंजा आदि पर इन सब के निश्चित लक्षण व निश्चित दवाएं हैं वहीं एचआईवी, रेबीज, चिकन पॉक्स आदि महाभारतियों का निपटारा हुआ पर कोविड-19 को वंचे निश्चित लक्षण देखने को नहीं मिलता है तथा यह अत्यधिक गंभीर महाभारती का रूप ले लेती है बल्कि यह एक विषाणु जनित महाभारती का रूप ले लेती है प्लजमा शैरपी इसमें बहुत हद तक असह्यता साबित हुई है जिसमें टेक, होने वाले रोगियों ये निरन्तर बढ़ती देखीं गयीं।

कोरीना अंतर्देशीय जनावर का कारण बना हुआ है। भारत ये कोविड-19 से निपटने को निरन्तर निर्णय लेते चार विश्व भर में सातवीं चर्चा रहे। मात्राएं स्थापित कीं गयीं संशय रहितसंग वायर्स को अतिबाधता सम्पूर्ण लोक डाउन आदि गतवर्ष 2020 के भारत से भारत में कोरीना कोहल से सम्पूर्ण जन जीवन दहल गया 22 मार्च से शुरू हुए लोकडाउन से पूरे भारत में कौन परीचल नहीं है पर होने हुए भी सड़कों पर उतरने को मजबूर सरकारी व्यवस्थाएं टप पड़ते देखीं गयीं रोजगार सूजन को दूसरी जगहों पर गये लम्बाया लो संशय को वेश को तरह तरह भूखे प्यासे भाले देखीं गयीं। रोजगार बन्द, परीक्षाएं बन्द सरकारी, गैर सरकारी स्कूल बन्द सभी संस्थाएं बन्द, ब्यापार बन्द, परीक्षाएं बन्द सभी पर इस महाभारती का प्रभाव पड़ा है। पर अब कोविड-19 को बैकसीन आ रही है और इससे संतोषजनक परिणाम सम्पूर्ण विश्व में प्राप्त हो रहे हैं। पर हम लोकडाउन व अन्य कार्यों से चलते आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक, शैक्षणिक क्षेत्रों पर खर्ची किये बिना

रही तथा अन्य सरकारी दफ्तर भी आर्थिक या औपचारिक रूप से ही खुले राजनैतिक स्तर पर शैलिया, गोष्ठियां आदि स्थागित रही सोशल डिस्टेंसिंग के चलते ससंद सत्र भी नहीं चल सका राजनैतिक यात्राए रद्द रही चाहे व राष्ट्रीय भी या अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी।

**समाजिक व्यवस्था के कार्यों में बाधा :-** हमारे दैनिक कार्यों के साथ-साथ समाजिक व्यवस्था को बनाये रखने धार्मिक व अन्य सामाजिक कार्यों में बाधा उत्पन्न हुई है। जिससे एक बहुत बड़े तबके को रोजगार मिलता है जैसे सभी धार्मिक व मेले सामाजिक मेलों को आयोजन बन्द है पर्यटन उद्योग बन्द है। शादी समारोह आंशिक रूप से हो रहे हैं अर्थव्यवस्था में भारत के परिपेक्ष्य में शादी एक ऐसा समारोह है जिसमें लगभग अर्थव्यवस्था की रीढ़ जुड़ी है कृषि के उपरान्त यह दूसरी कड़ी है जिस पर अर्थव्यवस्था बहुत हद तक निर्भर करती है इसमें करीब अमीर सभी का नितान्त खर्चा होता है तथा यह खर्चा अर्थव्यवस्था का पहिया साबित होता है। क्योंकि इसमें लगभग बहुत अधिक व्यापारि जुड़े होते हैं जिसमें सभी लोग धनोपार्जन करते हैं जैसे-ऑटोमोबाइल इन्डस्ट्री, टैक्सटाईल, इलैक्ट्रॉनिक्स, आभूषण, फर्नीचर आदि।

**अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का ठप पड़ जाना :-** भारत के परिपेक्ष्य में यदि हम अन्तर्राष्ट्रीय बाजार को देखे तो हमारा सर्वाधिक आयात चीन से होता है। वही जापान, जर्मनी, अमेरिका, आदि देशों से भी होता है हम अपने पड़ोसी देशों सहित विश्व के अन्य देशों को निर्यात भी करते हैं। जिनमें पेट्रोलियम, इलैक्ट्रॉनिक्स खाद्य सामग्री, टैक्सटाईल, खड़ी फल सब्जियाँ हस्त निर्मित वस्तुएं मुख रूप से शामिल हैं। भारतीय सिल्क की विदेशी प्रदान से सभी राष्ट्र आपस में लाभान्वित होते हैं। जो कि कोविड के चलते ठप हो गये हैं। पुर्नगठित होने ये समय लग रहा है, साथ ही साथ कारखाने व उद्योग भी सूचारु रूप से नहीं चल पा रहे हैं। इन समस्याओं का समाधान आवश्यक हो अन्यथा समस्याओं बढ़ोतरी निश्चित है।

**प्रर्याप्त जीवोकोपार्जन का प्राप्त न होना:-** इस काल में कहीं-कहीं पर देखने को भी मिल रहा है कि व्यक्ति विशेष को उसकी योगतानुसार कार्य नहीं मिल पा रहा है। क्योंकि जहाँ पर वह पहले कार्य कर रहा था या तो वहा से दूर चला गया है या फिर उसकी जगह किसी ओर को मिल गयी या उद्योगों की बन्द हो गयी या यूं कहें कि उसे दोबारा शुरूआत करनी पड़ रही है भले ही वह स्वयं कारोबारी हो या मजदूर अधिकतर लोग अपनी जरूरत का सामान भी जुटा पा रहे हैं यह एक ऐसी जनसंख्या है जिसकी तरफ किसी का ध्यान आकर्षित नहीं होता। आजीविका कमाने हेतु लोगो को इधर-इधर भटकना पड़ रहा है जिसमे सामान्य जन जीवन यथा वह स्थिति मे है।



# कोरोना का सामाजिक प्रभाव

डॉ. सूर्यकान्त शर्मा

असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग

चमन लाल महाविद्यालय, लंदौरा

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। जबकि समाज परिवर्तनशील है। सामाजिक परिवर्तन कई बार मानव के लिये सुखद परिस्थिति लाता है तो कई बार संकट कालीन स्थिति। आपात काल में मनुष्य को ऐसे ही संकटों का सामना करना पड़ता है। ऐसे संकट काल से उबरने में समान को कई बार काफी समय लगता है, तो कई बार वह जल्द ही परिस्थितियों को अनुकूल बना लेता है। वर्तमान में पूरा विश्व कोरोना वायरस के संकट से गुजर रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इसे वैश्विक आपदा घोषित किया है। भारत भी कोरोना संकट से अछूता नहीं रहा। भारत में जनता कर्फ्यू लगाया गया। इसके बाद से ही पूरे भारत में लॉकडाउन का क्रम जारी हुआ और इसे राष्ट्रीय आपदा घोषित किया गया। भारतीय जनता ने प्रथम बार ऐसे संकट का सामना किया। जिसमें उसे ज्ञात ही नहीं था कि ऐसे संकट से कैसे उबरा जाये। सुनसान सड़के, सुनसान गाँव-शहर, मानो मानव पिंजरे में कैद हो। ऐसा दृश्य इससे पहले कभी किसी ने नहीं देखा। ऐसे में संचार-सूचनाओं का अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान होता है। जैसी सूचना होगी, जैसा संचार होगा मनुष्य उसी ओर आकर्षित होता है। ऐसे में सकारात्मक एवम् नकारात्मक दोनों तरह के संचार देखने को मिले।

कोरोना संकट से जीवन शैली और सामाजिक व्यवहार में काफी बदलाव आया है इसके कुछ सकारात्मक प्रभाव भी देखने को मिले हैं। समाजशास्त्री डॉ. मनोज छपाड़िया का कहना है कि इस महामारी ने परिवार नाम की संस्था को एक नई संजीवनी दी है। संकट की इस घड़ी में विदेशों में कार्यरत भारतीय पासपोर्ट धारकों का मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक सुरक्षा के लिये अपने परिवार के पास स्वदेश लौटना पड़ा। छोटे और मझले शहरों में जिन पड़ोसियों के बीच वर्षों से बोलचाल बंद थी, वहा कडवाहट कमजोर हुई है।

इसी तरह नगरीय समाज की व्यक्तिवादिता, सामुदायिक संवेदनशीलता और मानवीय बोध से युक्त होती दिख रही है। अनौपचारिक सम्बन्धों में जिस औपचारिकता, संवेदनहीनता भावनात्मक तरस्यथता ने कब्जा कर रखा था। उसमें कोरोना संकट के कारण सकारात्मक परिवर्तन आया।

कोरोना काल में मानवीय दृष्टिकोण में काफी परिवर्तन देखने को मिला है। जरूरतमंद के हितार्थ सेवा का जो सिलसिला चला, उससे लगता है कि समाज में संवेदनाशीलता का विकास हुआ है। हर सम्पन्न व्यक्ति किसी न किसी रूप में मददगार बना गया है। भारत ने इस

महान संकट में भी दूसरे देशों की मदद की है। भारत हमेशा सर्वधर्म सम्मान में विश्वास रखता है और यही भारत की विशेषता है। अतः कोरोना की वजह से समाज ही नहीं, वैश्व स्तर पर संवेदनशीलता बढ़ी है।

बदलाव हमेशा दो तरफा होता है एक नकारात्मक और दूसरा सकारात्मक। कोरोना काल के सकारात्मक प्रभाव ने जहा परिवार, समाज व लोगों को जोड़ा, समाज के महत्व को उजागर किया, संवेदनशीलता दिखाई वही कोरोना काल के नकारात्मक प्रभाव देखने योग्य है। मनुष्य परिवार के साथ बंद होने से परेशान है और इस तर्क पर कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है अब सवाल खड़े हुये है।

मनुष्य इतना एकाकी और अलगावित हो गया है कि अब वह किसी के साथ भी नहीं रहना चाहता। उसकी निर्भरता मशीनों पर इतनी बढ़ गई है कि अब उसे मानव की जरूरत नहीं। मनुष्य में सहनशीलता, भावनात्मक निकटता, एक-दूसरे के प्रति प्रेम, सम्बन्धों का महत्व उनके प्रति जिम्मेदारी का भाव सब कुछ समाप्त हो गया है। आप उसे अकेले एक कमरे में रख दीजिये शायद तब वह परेशान नहीं होगा जितना तब वह परेशान नहीं होगा जितना वह परिवार के साथ बंद होने से परेशान है।

लॉकडाउन की स्थिति में बच्चे, बुजुर्ग, व्यस्क सभी अपने घरों में कैद है। पितृसत्तात्मक समाज में परिवार की सुबह से रात तक की जरूरतों को पूरा करने की जिम्मेदारी महिलाओं की होती है। इस महामारी के दौरान महिलाओं के घर के कामों में अनावश्यक रूप से बृद्धि हुई है जिसका प्रभाव महिलाओं की सेहत और मानसिक दबाव के रूप में देखने को मिलता है। इस लॉकडाउन के दौरान भारत में राष्ट्रीय महिला आयोग ने चरितु हिंसा के मामलों में भी वृद्धि दर्ज की है।

बच्चों की बात करे तो लॉकडाउन के शुरुआती दौर में तो बच्चे छुट्टियों का एन्जॉय कर रहे थे फिर धीरे-धीरे कैद में रहने जैसी फीलिंग अनुभव करने लगे। ऑनलाइन गेम खेलना, टी.वी. देखना, खाना-पीना और सोना बस जिन्दगी इतने तक सीमित होने लगी। न दोस्तों से मिलना न घर से बाहर निकलना और घर पर सारा दिन माता-पिता के अनुसार काम करने या निर्देश में चलने की बाध्यता ने बच्चों में गुस्सा, आक्रामकता, चिढ़चिढ़ापन भर दिया। आज के दौर की पीढ़ी को परसल स्पेस की आदत होती है जो उन्हें उच्चवर्गीय और मध्यवर्गीय परिवारों में मिल ही जाता है इसलिये उन्हें अपने निर्णय खुद लेने और उनके निर्णयों में किसी का हस्तक्षेप करने की आदत सहन नहीं होती। तब से बच्चों की आधुनिकता टेक्नोलॉजी पर निर्भरता बढ़ी है उन्हें किसी ओर का साथ अच्छा नहीं लगता। वे अपना अधिकांश समय मोबाइल, कम्प्यूटर, आई.पोड के साथ बिताते हैं और यही कारण है कि सब लॉकडाउन के दौरान इन बच्चों को अपने परिवार के साथ बिताते हैं और यही कारण है कि सभी अनिश्चित काल के लिये तो बच्चे परिवारों में एडजस्ट नहीं कर पा रहे हैं। परिणामस्वरूप उनके व्यवहार में नकारात्मक प्रवृत्तियां उभरती देखी जा सकती हैं। जो विद्यार्थी होस्टल से घर लौटें हैं। वे भी घर के वातावरण में एडजस्ट नहीं हो पा रहे हैं। इससे घर में बहस और झगड़े





बीमार न हो सकें तथा अपने आस-पास के बगीचों को साफ सुथरा व हरा-भरा रखें इससे हमारे पर्यावरण प्रदूषण को रोकथाम हो सकेगी। पेड़-पौधे बहुत ही लाभकारी माने जाते हैं। हमें वृक्षों का कटान नहीं करना चाहिए तथा हमें अपने आस-पास के वृक्षों को कटने से बचाने चाहिए जिससे हमारे चारों ओर का वातावरण साफ रह सके। हमारे लिए पर्यावरण बहुत महत्वपूर्ण है।



## कोरोना वायरस क्या है?

गुलशन

बी.ए. - प्रथम वर्ष

चमन लाल महाविद्यालय, लंडौरा

“कोरोना वायरस को कोविड-19 नाम से भी जाना जाता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन WHO ने कोरोना वायरस को महामारी घोषित किया है। यह कोरोना एक वायरस जनित रोग है। जिसने महामारी का रूप ले लिया है और समस्त संसार में तबाही मचा रहा है इस रोग को शुरुआत संक्रमण होने पर पहले बुखार होता है, फिर सूखी खांसी होती है और एक हफ्ते बाद सांस लेने में परेशानी लगती है।

**कोरोना वायरस कोविड-19 के लक्षण**

- (1) सिरदर्द
- (2) खांसी
- (3) मांसपेशियों में दर्द बुखार और थकान सांस लेने में परेशानी

एक समुदाय के रूप में हमें खुद को परिस्थितियों से निपटने के लिए तैयार रहना होगा हमें ऐसी शिक्षा मिलनी चाहिए जो हमें बुनियादी आवश्यकताओं के लिए आत्मनिर्भर बनाए गाँधी जी की बुनियादी शिक्षा का प्रारूप न केवल इस समय अपितु सामुदायिक आत्मनिर्भरता के लिए बहुत उपयोगी है।

कोरोना वायरस के संक्रमण के खतरे को कम करे

साबुन और पानी से हाथ साफ रखें

छींकते खासते वक्त नाक और मुँह ढँके

पूरी तरह से पका हुआ मांस या अंडा खाना चाहिए

कम से कम दो गज की दूरी बनाये रखें

शिवानी चौहान  
बी.एस.सी, तृतीय वर्ष  
चमन लाल महाविद्यालय, लंडौरा

कोरोना समय में खाद्य सुरक्षा कोरोना जैसी महामारी के चलते पूरे विश्व भर में विकास की गति बहुत ही गंभीर रूप से प्रभावित हुई है इससे रोजगार में हाथ राजस्व में आई गिरावट जैसी समस्याओं के साथ खाद्य की सुरक्षा भी सामने उभर कर आई है इस महामारी के कारण ही वैश्विक स्तर पर भूखमरी का सामना करने वाले लोगों की संख्या लगभग दोगुनी होकर 270 मिलियन हो गई है जिसमें लगभग 121 मिलियन लोग कोविड-19 के कारण भूखमरी का शिकार हुए हैं कोरोना के कारण ही भूख व कुपोषण की दर में वृद्धि हो रही है इसका मतलब यह है कि वह एक सामान्य सक्रिय जीवन जीने के लिए आवश्यक भोजन का उपयोग करने में भी असमर्थ है। यदि यह स्थिति लंबे समय तक बनी रहती है तो इसका उनके भविष्य पर दीर्घकालिक व नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। खास तौर पर हमारे आने वाले भविष्य के बच्चों पर इनका नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा कोरोना वायरस के भयंकर काल में किसानों पर भी दयनीय स्थिति आन पड़ी है। ऐसे में सर्वोच्च योगी किसानों की खाद्य सुरक्षा संबंधी पहल भी सरकार द्वारा की गई है कोरोना के कारण ही गांव व शहर आज खतरे की नोक पर पनप रहे हैं कोरोना के टाइम में सरकार द्वारा गरीबों के लिए यह स्कॉम भी चलाई गई जिसके अंतर्गत सरकार ने गरीबों के खाने में भी ₹.2000 और राशन भी डाला। इससे गरीब लोगों को यह लाभ भी हुआ कि जो लोग गरीबी रेखा के नीचे थे और उनके पास कोई रोजगार नहीं था उन्हें फिर भी दो समय की रोटी आराम से मिल पाई और इसी वजह से ग्राम वासियों ने यह सवाल उठया है कि आज तक यह राशि हमारी कहाँ लुप्त थी।

कोरोना के दौरान बच्चों की दशा कोरोना वायरस की जो बढ़ती रफ्तार थी उसमें बच्चों के स्वास्थ्य पर भी एक अलग तरह का भय रहता था इसी संबंध में from net संयुक्त राष्ट्र द्वारा हाल ही में जारी किए गए नीतिगत दस्तावेज के अनुसार हालांकि इस समय बच्चों में कोरोना वायरस उतनी तेजी से नहीं फैल रहा है लेकिन इसकी रोकथाम के लिए जो लॉकडाउन लगाए जा रहे हैं उनके दुष्प्रभाव के कारण ज्यादा देखने को मिले हैं। न्यूज व रिपोर्ट्स न्यूजपेपर में भी कि बताया था कि दुनिया भर में इस वायरस के कारण लगभग 10,000 से भी ज्यादा बच्चे भूखमरी के कारण मौत के शिकार हो गए थे। इसलिए इस महामारी में लगातार यह खबरें आती रही कि बच्चों को गर्म चीजों का सेवन ज्यादा से ज्यादा कराएं और उनको जब जरूरत हो तभी बाहर भेजें।





# कोरोना तेरी शक्ति कमाल

डॉ. आरती

अटल बिहारी वाजपेयी राजकीय महाविद्यालय  
बंगाना

कोरोना तेरी शक्ति कमाल,  
जो कोई ना कर पाया,  
वह कर दिया तूने काम।

कोर्ट के आदेश को तूने टुकराया,  
पहले बायोमैट्रिक अटेंडेंस को तूने बंद करवाया,  
फिर करवा दिए बंद सारे शिक्षण संस्थान,  
कोरोना तेरी शक्ति कमाल.....

मंदिर-मस्जिद, गुरुद्वारों पर  
जड़वा दिए ताले,

भगवान को भी ना छोड़ा,  
निर्धन के छीन लिए निवाले,  
बंद करवा दिए घरों में सारे इंसान,  
कोरोना तेरी शक्ति कमाल.....

स्वच्छला का पाठ पढ़ा दिया,  
पाश्चात्य तौर-तरीकों को बंद करवा दिया।

हाथ जोड़कर सबको अभिवादन करना सिखा दिया  
भारतीय संस्कृति को अपनाने का,  
दे दिया सबको पैगाम।

कोरोना तेरी शक्ति कमाल.....

विश्व में हड़कम्प मचा दिया,  
महामानव तक को भी तूने हिला दिया  
मानव-मानव के बीच पैदा कर दो दूरी  
ऐसी भी क्या रही है तेरी मजबूरी।  
जिसको तूने अपना शिकार बनाया,  
जिसको तूने अपना कर दे दी उसने अपनी जान।

तड़प-तड़प कर कर दे दी उसने अपनी जान।  
कोरोना तेरी शक्ति कमाल.....

प्रकृति का रूप निखारा,  
प्रदूषण मुक्त हो गई धरा,

गंगा, जमुना, सरस्वती सभी नदियों का जल।  
दिखा रहा है आज जो निर्मल।

पैसा ना कर पाया जो काम,  
आज तूने कर दिया वह काम आसान  
दोस्त ना कर पाया जो,  
दुश्मन बन कर दिखाया तूने वह काम  
कोरोना तेरी शक्ति कमाल.....  
जो कोई ना कर पाया...  
वह कर दिया तूने काम...



## कोरोना की हार निश्चित है

दिलबाग सिंह

अंशकालिक प्रवक्ता, चित्रकला विभाग  
चमन लाल महाविद्यालय, लंदौरा

कोरोना वायरस, कोरोना वायरस, तुम कब यहाँ से जाओगे ।  
कोरोना वायरस, कोरोना वायरस क्या तुम धरती से जीवन को मिटाओगे ।।  
एक तरफ खाने की किल्लत  
एक तरफ है तेरा भय  
एक तरफ पुलिस का डंडा  
एक तरफ मोदी जी की लय  
छोड़ो भी अब हमें सताना, कब तक हमें डराओगे ।  
कोरोना वायरस, कोरोना वायरस, तुम कब यहाँ से जाओगे ।।  
सारे डॉक्टर्स बने योद्धा  
फोर्स भी दिक्कत झेल रही  
माना तुझे हराने की हर  
कोशिश सबकी फेल रही  
लेकिन वो दिन दूर नहीं, जब तुम भारत से हार जाओगे,  
कोरोना वायरस, कोरोना वायरस, तुम कब यहाँ से जाओगे ।  
कोरोना वायरस, कोरोना वायरस क्या तुम धरती से जीवन को मिटाओगे ।



## COVID-19 PANDEMIC : IMPACT ON EDUCATION IN INDIA

Dr. Subhash Chand Agrawal  
Freelance Writer and Filmmaker

COVID-19 Pandemic has stormed the entire globe. It looks like more developed was a country, more severally affected it was. It has changed the way world lived. There was a time many in the world held imperialistic views but the view has now changed to develop survival instincts and techniques. New 'NEWS' are becoming the norm of the day. Like every other sector of economy and every aspect of human life; Education sector too got as badly affected. What are the new challenges and solutions before education sector has been discussed in this paper.

There is no doubt that the COVID-19 Pandemic has affected all walks of life across the globe. Rather it has affected India more badly than many other strong economies of the world like United States of America, England, Germany. Reason of this is simple to understand that there is huge difference between lowest income and the highest income of individuals. GDP calculated in an economy is calculated as income per capita multiplied by total population of the country. U.S. and U.K. though have less population but their average income is many times more than India. As India is yet not a fully Welfare State so individuals here have to fend for themselves for most of things that are vital to sustain life like Health, Education, Sanitation, Drinking water etc. This little insight in economies is essential to analyse COVID-19's impact on Indian Education in the light of changed economic scenario. Except the government employees, corporate sector employees and big businessmen, none is in a position to afford any good educational institutions for their children. The Pandemic COVID-19 has worsened the situation and a disturbingly large number of students have not returned to schools when they briefly opened last year and even now. The number of dropped-out children is very-very high both in government as well as private schools. In rural and semi urban area The COVID-19 has taken the greater toll on education, so much so that many private schools are having second thoughts about continuing their institutions as there is no fees coming from students and governments have not extended any relief package for such children or to such school so that they can continue paying salaries to their teachers. Governments who impose RTE on schools have miserably failed to pay their fees for years. So badly the sector has been impacted by the CORONA disease.

Millions of children have dropped out of schools and other millions could not start their education in preparatory schools; while the rest have been promoted without having to study almost anything. One can simply imagine the long term impact on Indian education right from preparatory level to higher education levels.

The Pandemic has given rise to many new ideas and innovations in the field of education. One, reduce the syllabi; two, go on-line. Syllabus, especially at school level for various standards, in certain subjects seems too lengthy. It lacks both the designing skills and the study of the grasping capacity of the students as well as quality of instructions dispensed by the teachers in the classroom. Many a time while designing a lesson element of interest of the students is ignored. Preciseness and conciseness too are often missing. If one observes the history-book of class nine and class ten they start with names and events hitherto unknown to them. Why can't we try and teach history of India backwards or in reverse chronology for a change? Generally books are written in the form of long essays. Subject matter in the book must be concise and the teacher should elaborate it in the classroom. Unfortunately, practical side of many important subjects at school level has long been overlooked. Nowadays, there are no Physics labs, no Chemistry labs and no Biology labs for class IX and class X. Even at higher level these days, ever since the advent of private universities and colleges classroom attendance is only of notional importance.

The above discussion proves that whether one studies as a regular student or a private student it hardly matters. People often work full time in different occupations and simultaneously pursue their higher studies as a regular student in the government recognised institutions. This phenomenon has slapped a question in the face of academicians and administrators responsible for the academic development of the country; and the question is, if on-line instruction can be a viable solution than why to have these huge academic installations and establishments? For last 74 years we have been building our educational infrastructure yet there is no Indian educational institution among the world class! Only 15% of Indian research articles are published in world's top 10 journals. On similar lines there have been fewer patent applications by Indians studying and researching in India. Majority of patent applications are filed by Non Resident Indians.

Facts like above open a Pandora's Box as to what's the real worth of our classroom education is and whether it can be really substituted by on-line instruction. It is in this context that the following economic data is of

importance. Twenty-seven percent of India's populations is poor [as per nearly a decade old data]. The amount of around 900 to 1200 rupees per month cannot even buy two square meals of a balanced diet prescribed by World Health Organisation. According to one survey, out of India's total population about 580 million people earn only up to 2 dollars per day or about 145 rupees per day. Another 450 million population earns between 2 to 4 dollars (Rs. 140- 280) per day and so named affluent class of 25 million people earns more than 10 dollars per day. Now compare this with American and European average wages where minimum wages are 7.25 dollar per hour plus the tips. Above figures related with the income of a huge majority of Indians render the concept of the online instruction in India unreal. Besides affordability some other factors also play a detrimental role in imparting education on-line in India as:

- Online instruction mostly is not interactive. It is one way.
- Language in this part of the country becomes a barrier. Most of our teachers are not well versed in languages of instruction mainly the English.
- Mostly they are in audio form or the instructor giving on-camera oral instruction in an un-interesting manner.
- Smartphones are expensive, data scarce and connectivity poor.
- Help books are relied upon by a large number of teachers in cut and paste manner. Students and parents compare this material available on YouTube or the one prepared by Education companies like Baja's Unacademy or others.

Most Indian parents cannot afford the logistics and the expenditure involved in online teaching of their wards. If a middle class or lower middle class family has even two children studying in a school they find it difficult to distribute the mobile phone time between children and the father who needs the phone to carry it to his profession. Most of the parents in this class cannot afford the second or third mobile instrument and data connection. Often the home-work or study material sent online is very high in terms of internet data requirements. Using very small screen of a mobile phone is harmful to students in many ways besides being inconvenient to read from it.

It may sound a bit odd but it is true that in rural and semi urban areas a large number of parents have not yet bought books to their wards as they are not sure if schools will re-open. They don't consider online exercise as the real 'padhhai' the proper teaching. COVID-19 has created a situation

of grand confusion. Governments seem to have no proper plans. They want teachers be paid their salaries and to grant a legitimacy to the demand the fees from parents, governments forced the online instruction to the demand their throat. Schools, colleges, universities are shut; teachers are assured of their salaries may be a reduced amount. A major question this pandemic COVID-19 has put before us is how the teachers and staff working in small schools and colleges running in rural or semi urban areas can surviving on meagre fees and unviable number of students in online mode? Teachers here get a paltry sum as salary and that too now has become uncertain; how will they survive nobody has an idea or any solution to it. Apparently, Pandemic COVID-19 is also being misused as an excuse by the parents for not paying the fees even of the last session leave aside current one.

Now a very legitimate question stares us in the face is; when on-line hardly productive then why force it upon students, parents and the teachers? Could there have been any other alternate method of teaching in these very special situations created by the pandemic of COVID-19 while online attendance in rural and semi urban schools is just about nominal. Higher education is no exception as well.

Even bigger challenge this pandemic of COVID-19 has thrown in front of the Education policy makers, administrators and teachers is of establishing the indispensability of classroom teaching as it now looks to be totally dispensable. IGNOU model is often considered far superior than many regular universities. Besides IGNOU there are other open universities doing equally well if not better. Now, what could be those inputs that can be incorporated to give credibility to regular teaching at all levels of education? Can the following be tried in this regards?

1. Teachers have to lead by keeping themselves updated in their respective fields. Regular updating is the only difference between regular and distant learning as books in any university library are hugely out of date.
2. Teachers can involve students in 'learn by doing' projects leading them personally, e.g. a sample collection in a survey and its technical analysis.
3. Concerned governments and institutional managements should further strengthen the educational infrastructure to make a marked difference when compared with distance learning and make educational institutions an indispensable place for students.

the absence of proper infrastructure for learning and research. Not to mention the quality of teachers. Most of the research works conducted in last many decades has been so sub-standard that UGC had to intervene in research policies of the universities time and again. It is so easy in India to get enrolled in a research course if you have any contact in the university managements/departments. It is common to find many people working elsewhere full time and completing their PhDs as well that is supposed to be a regular course. How easy it is in our country to find professional ghost thesis writers. As a result today, in university research, India is where it is. The point to be made here is unless there is a marked improvement in the quality of instructions and research it will be difficult to reinstate full faith of people in regular courses.

Does anyone ever ponders over the fact that in spite of a very respectable pay packages hardly any IIT pass out comes back to IITs as teacher. It is so difficult to find students with CBSE background opting for a B. Ed program. It looks many of the brilliant students enrol in regular courses just because it carries more weight than a distance learning course at the time of job interviews and certain competitive exams. CORONA- 19 has in fact exposed the chinks in the armour of our education system.

**In the light of above facts can the following may be tried as remedy:**

A large majority of our students belong to social sciences and unfortunately that also happens to be the weakest area in terms of quality of teaching and learning. Post COVID-19 teachers can be made to attend specialised refresher courses where faculty should be far more specialized and experienced. A unique problem that arises in social sciences is that at university level instruction is supposed to be bi-lingual but most teachers in large part of India are well-versed only in their mother tongue, whereas most research journals, reference books are available in English by and large. As a result students and teachers themselves miss a lot of global opportunities. Because of this handicap a large number of our students and teachers cannot participate in important symposia and conferences. To impart online education a teacher has to rely heavily on internet based resources that are generally available in English. Teachers and students both must be more attentive to attain at least working efficiency in English and full fluency in their mother language. Regular studies provide students a number of opportunities in the respective fields of their prospective careers like sports, defence, media, agriculture to name a few. Activities

# COVID-19 VACCINATION

**Dr. Sandhya Vaid**

Assistant Professor,

Dept. of Zoology

Chinmay Degree College, Haridwar

Year 2020 started with the upsurge of Corona disease and ended with huge cumulative death all worldwide. COVID-19 originated from Wuhan and traversed almost every nation of world. Index case of Corona was reported on 1<sup>st</sup> Dec 2019 from China, quest for patient zero emerged from Wuhan and WHO declared the deadly disease as pandemic on date 11th Mar 2020. According to WHO report, 93.62 million infected cases, 68.92 million recovered cases and 2 million deaths have been recorded so far. Global mortality rate of COVID-19 is 3% and recovery rate is 97% whereas in India mortality rate is 2% and recovery rate is 96.5%. India has 1.5% active cases out of total 10.53 million corona disease cases. World superpower America tops the list with 23.48 million total cases and 3.98 L deaths.

Year 2020 ended with a sad note: no drug and no vaccine to curb the menace of COVID-19. Researchers, scientists and virologists thrived hard for a solution against havoc. So called Hydroxychloroquine drug was not approved by WHO as suitable medicine to curb, control or prevent corona disease. WHO along with teams of International agencies CEPI and UNICEF were remained engaged for the development of vaccine. Objective was to develop antibodies or immune response in human against SARS-CoV-2 virus. In India organizations like; Indian Council of Medical Research (ICMR), Serum Institute of India (SII), Indian Institute of Virology (IIV), Bharat Biotech and Zydus-Cidal were entrusted for the development of miracle vaccine. Ministry of Health and Family Welfare (MOHFW), Medical Council of India (MCI) and All India Institute of Medical Sciences (AIIMS) were on round the clock surveillance for monitoring the evolutionary process of vaccine development. Drugs Controller General of India (DCGI) waited eagerly for issuance of necessary approvals of vaccine's emergency application.

Development of vaccine is a multistage process: Exploratory stage, Pre-Clinical stage, Clinical development, Regulatory approvals, Clinical development of Quality control.

vaccine is the most crucial and significant stage, and generally is a three phase cycle.

- In 1<sup>st</sup> phase few volunteers are vaccinated and studied.
- 2<sup>nd</sup> phase of vaccine development involves administration of vaccine to larger group of people having similar symptoms as that of virally infected and studied.
- In 3<sup>rd</sup> phase, vaccine is given to thousands of people and studied for safety and efficacy of vaccine.

After successful clinical trials, regulatory approvals are sought by the developing agency from competent authority for the manufacturing of vaccine in bulk. Final approval for vaccinating people is issued by DCGI. Various Indian vaccines approved/ under final phase of clinical development are:

- Covishield vaccine made by India's SII and British company AstraZeneca & Oxford University (Approved by DCGI)
- Covaxin vaccine made by Bharat Biotech and ICMR (Approved by DCGI)
- ZiCov-Di being developed by Zydus-Cadilla (Final stage of clinical development)
- Nasal vaccine being developed by Bharat Biotech (Under clinical trials)
- Sputnik V vaccine being developed by Indian company Dr Reddys Lab and Russian company Gamaleya National Centre (Already launched in Russia)
- India's SII and an American company Novavax are jointly developing vaccine (Advance phase of clinical development)
- A vaccine is being developed by Indian company Biological E and US company Dynavax and Baylor Medical College (Advance phase of clinical development)
- HGCO 19 vaccine being developed by Genova India and HDT Biotech Corporation (Advance phase of clinical development)
- Nationwide first dry run of corona vaccine was successfully held on 8<sup>th</sup> Jan 2021. The dry run is an arrangement to test the feasibility of Indian vaccination programme. Its main objective is to verify the stages of planning, coordination and implementation of mammoth vaccination schedule. The MOHFW, GOI has outlined massive vaccination drive all over India to be launched from 16<sup>th</sup> Jan 2021. First dose of DCGI approved Covishield or Covaxin will be given at 3006

patients. Second dose will be given after 28 days' of first dose. Effectiveness of vaccine would begin after 2 weeks of second dose. Vaccination centers will be gradually increased along with number of people to be vaccinated. GOI has plans to vaccinate 30 million Indian's by the end of Dec 2021 and the cost will be borne by central government, overall 30 Cr Indian's will be vaccinated in near future. GOI has introduced CoWIN App (Covid Vaccine Intelligence Network) as digital platform to facilitate end to end citizen centric data for official use. GOI will monitor roll-out of Coronavirus vaccine through CoWIN App.

India has all preparedness to fight against COVID-19 virus. Meanwhile, new mutant strain of coronavirus originated from Britain, with different characteristics, has erupted and detected in many countries including India. Named as VUI 202012/01, new mutant virus which includes a genetic mutation spike in protein's 70% more active and communicable than its native COVID-19 virus. However, Indian vaccines are quite effective against mutant virus as per Director AIIMS. Both the DCGI approved vaccines have above 90% efficacy rate.

The day is not far away when India will 'treat, beat and defeat' COVID-19 and eradicate the virus from country. A ray of hope is now visible. Undoubtedly, 'Reeling India' of yesterday has become 'Ruling India' of today.



WHO reported that a novel coronavirus (2019-nCoV), which was named as severe acute respiratory syndrome coronavirus 2 (SARS-CoV-2) by International Committee on Taxonomy of Viruses on 11 February, 2020, was identified as the causative virus by Chinese authorities on 7 January. It is reported that the virus might be bat origin, and the transmission of the virus might related to a seafood market (Huanan Seafood Wholesale Market) exposure. The genetic features and some clinical findings of the infection have been reported recently. Potentials for international spread via commercial air travel had been assessed. Public health concerns are being paid globally on how many people are infected and suspected.

Therefore, it is urgent need to develop a mathematical model to estimate the transmissibility and dynamics of the transmission of the virus. There were several researches focusing on mathematical modeling. These researches focused on calculating the basic reproduction number ( $R_0$ ) by using the serial intervals and intrinsic growth rate, or using ordinary differential equations and Markov Chain Monte Carlo methods. However, the bat origin and the transmission route form the seafood market to people were not considered in the published models.

The novel coronavirus disease (COVID-19) is a worldwide infectious disease in the current time. Including this year pandemic, world faces severe attack by coronavirus several times, and some of those are SARS-CoV, MERS-CoV and SARS-CoV-2. The symptom of all coronavirus patients is same; they suffer with respiratory problem, fever, dry cough, etc., but COVID-19 is more infectious compare to predecessors. Most of the countries throughout the world are affected by this disease and its harmfulness is increasing day to day. The disease is spreading among different countries mainly through air-travel mode as large number of people is travelling from one country to another. To control the disease spreading, WHO provided an advisory to all the countries regarding screening of people at both ends: exit and the entry of country?

After 5 April 2020, every country has been suffering seriously due to the corona infection. A large number of people is in quarantine and also in 19 positive as well as large number of people are being infected every day. Asymptomatic stage: The exposed and the asymptomatic persons are more harmful as a result a large number of people are being infected every day. The exposed classes are being infectious at any time as its incubation period is 2–14 days. On the other hand, the asymptomatic class is most dangerous compared to any other class because the asymptomatic persons are not is on an average three days, because the asymptomatic persons are not



### **Introduction**

Corona viruses are large group of viruses that cause illness in humans and animals. Rarely, animal corona viruses can evolve and infect people and then spread between people such has been seen with MERS and SARS. Although most human corona virus infections are mild, the epidemics of the severe acute respiratory syndrome corona virus (SARS-CoV) and Middle East respiratory syndrome corona virus (MERS-CoV), have caused more than 10,000 cumulative cases in the past two decades, with mortality rates of 10% for SARS-CoV.

### **What are the symptoms of COVID-19 disease?**

Typical symptoms of COVID-19 include fever, cough, difficulty in breathing, muscle pain and tiredness. More serious cases can develop severe pneumonia, acute respiratory distress syndrome, sepsis and septic shock. Anosmia – loss of the sense of smell or sometimes the sense of taste – has also been reported as a symptom of COVID-19 infection.

Generally, older people and those with underlying conditions (such as hypertension, heart disorders, diabetes, liver disorders, and respiratory disease) are expected to be more at risk of developing severe symptoms.

The evidence from analyses of cases to date is that COVID-19 infection causes mild disease (i.e. non-pneumonia or mild pneumonia) in about 80% of cases and most cases recover, 14% have more severe disease and 6% experience critical illness.

### **What is COVID-19 disease caused by?**

The corona virus disease (COVID-19) is caused by a virus, NOT by bacteria.

The virus that causes COVID-19 is in a family of viruses called Corona viridae. Antibiotics do not work against viruses. Some people who become ill with COVID-19 can also develop a bacterial infection as a complication. In this case, antibiotics may be recommended by a health care provider. There is currently no licensed medication to cure COVID-

19. If you have symptoms, call your health care provider or COVID-19 hotline for assistance.

**How can we protect ourselves from COVID-19?**

**a) Practice Social Distancing**

- Avoid gatherings such as melas, haats, gatherings in religious places, social functions etc.
- Maintain a safe distance of at least one Metre between you and other people when in public places, especially if they are having symptoms such as cough, fever etc. to avoid direct droplet contact.
- Stay at home as much as possible.
- Avoid physical contact like handshakes, hand holding or hugs.
- Avoid touching surfaces such as table tops, chairs, door handles etc.

**b) Practice good hygiene**

- While coughing or sneezing cover your nose and mouth with handkerchief. Wash the handkerchief at least daily
- It is preferable to cough/sneeze into your bent elbow rather than your palms.
- Do not Spit or shout in public places to avoid the spread of droplets.
- Do not touch your eyes, nose and mouth with unclean hands.
- Ensure that the surfaces and objects are regularly cleaned.

**How dangerous is the corona virus disease?**

Although for most people COVID-19 causes only mild illness, it can make some people very ill. More rarely, the disease can be fatal. Older people, and those with pre-existing medical conditions (such as high blood pressure, heart problems or diabetes) appear to be more vulnerable.

**Food and nutrition for covid 19 and immunity booster**

- Eat fresh and unprocessed foods every day
- Eat fruits, vegetables, legumes (e.g. lentils, beans), nuts and whole grains (e.g. unprocessed maize, millet, oats, wheat, brown rice or starchy tubers or roots such as potato, yam, taro or cassava), and foods from animal sources (e.g. meat, fish, eggs and milk).

- Daily, eat: 2 cups of fruit (4 servings), 2.5 cups of vegetables (5 servings), 180 g of grains, and 160 g of meat and beans (red meat can be eaten 1 1/2 times per week, and poultry 2 1/3 times per week).

- For snacks, choose raw vegetables and fresh fruit rather than foods that are high in sugar, fat or salt.

- Do not overcook vegetables and fruit as this can lead to the loss of

important vitamins. choose varieties

- When using canned or dried vegetables and fruit, choose varieties without added salt or sugar.

- Drink enough water every day. It transports nutrients and compounds in blood, regulates your body temperature, gets rid of waste, and lubricates

- Water is essential for life. Without added salt or sugar.

- Water is essential for life. It transports nutrients and compounds in blood, regulates your body temperature, gets rid of waste, and lubricates

and cushions joints. - Drink 8-10 glasses of water every day.

- Water is the best choice, but you can also consume other drinks, fruits and vegetables that contain water, for example lemon juice (diluted

- Water is the best choice, but you can also consume other drinks, fruits and vegetables that contain water, for example lemon juice (diluted in water and unsweetened), tea and coffee. But be careful not to consume

too much caffeine, and avoid sweetened fruit juices, syrups, fruit juice concentrates, fizzy and still drinks as they all contain sugar.

- Eat moderate amounts of fat and oil - Consume unsaturated fats (e.g. found in fish, avocado, nuts, olive

oil, soy, canola, sunflower and corn oils) rather than saturated fats (e.g. found in fatty meat, butter, coconut oil, cream, cheese, ghee and lard).

- Choose white meat (e.g. poultry) and fish, which are generally low in fat, rather than red meat.

- Avoid processed meats because they are high in fat and salt. - Where possible, opt for low-fat or reduced-fat versions of milk and

dairy products. Avoid industrially produced trans fats. These are often found in

processed food, fast food, snack food, fried food, frozen pizza, pies, cookies, margarines and spreads.

- When cooking and preparing food, limit the amount of salt and high-sodium condiments (e.g. soy sauce and fish sauce).

- Limit your daily salt intake to less than 5 g (approximately 1 teaspoon), and use iodized salt.

- Limit your intake of soft drinks or sodas and other drinks that are high in sugar (e.g. fruit juices, fruit juice concentrates and syrups, flavoured

milk and yogurt drinks). - Choose fresh fruits instead of sweet snacks such as cookies, cakes

and chocolate. - Avoid eating out

- Eat at home to reduce your rate of contact with other people and lower your chance of being exposed to COVID-19. We recommend

maintaining a distance of at least 1 metre between yourself and anyone who is coughing or sneezing. That is not always possible in crowded social

gatherings. - Eat at home to reduce your rate of contact with other people and lower your chance of being exposed to COVID-19. We recommend

maintaining a distance of at least 1 metre between yourself and anyone who is coughing or sneezing. That is not always possible in crowded social

चमन सदश  
settings like restaurants and cafes. Droplets from infected people may land on surfaces and people's hands (e.g. customers and staff), and with lots of people coming and going, you cannot tell if hands are being washed regularly enough, and surfaces are being cleaned and disinfected fast enough.

### **Counseling and psychosocial support**

While proper nutrition and hydration improve health and immunity, they are not magic bullets. People living with chronic illnesses who have suspected or confirmed COVID-19 may need support with their mental health and diet to ensure they keep in good health. Seek counselling and psychosocial support from appropriately trained health care professionals and also community-based lay and peer counsellors.

### **COVID -19 and Nutrition - Recommendations for Prevention and Immune**

Micro-nutrients with the strongest evidence for immune support are:

Vitamin C

Vitamin D

Zinc

Other nutrients that may help include:

Vitamin A

Vitamin E

Selenium

Omega 3's

B vitamins

Plant Phytonutrients (from plant-based foods) may have antioxidant, anti-inflammatory and anti-viral effects



**Dr. Deepa Agarwal**

Assistant Professor

Deptt. of English

Chaman Lal Mahavidyalya, Landhaura

COVID-19 was discovered first time in China around end of November, 2019. It was alleged that China manufactured the virus with certain ulterior motives. Since then the CORONA-19 virus has infected over 70 million people around the world and had killed over 1.5 million people across the globe leaving almost no country or territory worth the name untouched by it. COVID is the abbreviated name of Corona Virus Disease. In the abbreviation CO stands for corona, VI stands for virus and D stands for disease. Suffix 19 is the year it was discovered in. In early stages of its discovery, it was known as Novel Corona Virus 2019. In a shorter form it was also written as -nCoV. COVID-19 Virus is linked to the family of SARS viruses the Severe Acute Respiratory Syndrome.

Covid-19 disease which started as an epidemic in few local areas of China soon within no time assumed the form of an unmanageable pandemic. Many countries around the world including us thought that CORONA virus was the problem of only China and it will never get to their door step. Many of our over enthusiastic journalists TV anchors ran special programmes dedicated to how the CORONA is going to destroy China physically and economically. Within no time Corona reached every nook and corner of the globe devastating many an economies considered unshakably strong thus far. We ourselves got hit by COVID-19 pandemic very harshly by the time we realised its real short and long term impact.

By the grace of the Almighty the CORONA is receding around the world with certain pockets of exception. In India too, the CORONA infection graph is flattening. In last nearly 10 months life in all sectors of human activity and all sectors of economy has undergone a sea change. Good and bad both have taken place but whatever good has happened does not catch our attention rather negative developments bother us a lot as our present life has suffered severely and it may have indelible imprints on our psyche and economy for a real long years in future as well. Millions of people have lost jobs and income in almost all sectors has been lost. Even after lockdowns having been lifted private sector has not been able to restore the curtailed jobs. Many are using the pandemic as blessing in

disguise. Fifty or 70 percent workforce is doing the one hundred percent job. One should hope that all private sector jobs are restore in due time.

Worst hit sector seemingly is the education sector. All educational institutions are closed since around 15 of March, 2020. Some people in the sector feel that the lockdown has given them the opportunity of honing their skills to impart knowledge in other ways than the conventional classroom teaching. This may be partially true but it comes loaded with many doubts like:

A. Can students across the board be benefitted by new method or processes of teaching like On-line instruction equally as per their personal grasping ability?

B. Can all students across the board afford this process economically? Even if the answer to both the above is 'yes'; is it really possible for all the students to stay connected for the entire period of instruction as we are still in the evolution stage as far as the access, affordability and reach of the internet in our country is concerned. In Education sector, COVID-19 has also caused a serious psychological problems for all the students, parents, teachers and the management of the survival level institutions of rural and semi urban areas especially schools.

Our country suffers a great digital divide. Most students in class A and class B cities may be in a position to afford a laptop, a desktop, a palmtop or least of all a smart phone but, in semi rural and rural areas it is not possible due to economic and logistic reasons. It can be easily imagined that a poor family living under the Line of Poverty and which are in large numbers in our country about 27 percent of the total population, can ill afford more than one smart phone. Problem gets multiplied as many fold as the number of school going children increases in a poor family as ideally each child will need a separate smart phone because all on-line teaching is done within school time.

On-line instruction has many other problems attached to it. Watching and concentrating on small mobile phone screens are causing physical and mental stress among students. As internet signal strength is weak in many areas and all it keeps fluctuating and getting on and off, it causes severe mental stress among children about the missed part of the lesson during the signal loss period. On-line instruction policy has forced rural weaker section parents to even loan money to buy smart phone(s) for their wards, which may put the person in a debt trap and land up paying a very high price for a phone.

Right from elementary education to higher education students and

parents have been constantly suffering. Even more tricky question is, can we or happen to our child's future!'. Even more regular studies and exams should we promote all students without proper regular studies and exams should this session be declared null session and begin all over again or should this session be declared null session and begin all over again when covid-19 conditions subside to near normal levels! These are uneasy questions and it is highly unlikely to find one simple answer that satisfies all such queries.

In conclusion let's hope and pray that things will turn normal in short future and each one of us contribute his full might to do away the COVID-19 problem by adhering to the requisite protocols and SOPs. Need is also to be vigilant and sensitive towards those who are less blessed economically and logistically than the others. Let's not believe and accept that this new normal will never be reverted to the real normal conducive to all normal activities necessary for a healthy mental, social and physical living. Scientist around the world had been working on the vaccines against the COVID-19 disease. And the good news is that many a vaccine has been cleared for injecting into human beings. Fortunately by the untiring efforts of our scientists we have been able to make indigenous vaccine making us not depend on others of COVID vaccine. As vaccination drive in almost country of the world has started including our own country and it will gather momentum in times to come; we can hope our educational institutions along with all other sectors of the economy shall function to their full capacity. Our students will once again soon be the same old happy lot learning and interacting sitting their classrooms in front of their teachers.

#### Reference:

- <https://www.indiatoday.in/magazine/news-makers/story/20210111-school-of-hard-knocks-1755078-2021-01-03>.
- <https://www.indialegalive.com/legal/covid-19-and-its-impact-on-education-system-in-india/>.
- [https://www.researchgate.net/publication/342123463\\_Impact\\_of\\_Pandemic\\_COVID-19\\_on\\_Education\\_in\\_India](https://www.researchgate.net/publication/342123463_Impact_of_Pandemic_COVID-19_on_Education_in_India).
- <https://www.who.int/emergencies/diseases/novel-coronavirus-2019/question-and-answers-hub/q-a-detail/coronavirus-disease-covid-19>.



## Hypertention and Covid-19

**Dr. Neetu Gupta**  
Assistant Professor

Dept. of Home science,  
Chaman Lal Mahavidyalya, Landhaura

A weaker immune system is one cause people with excessive blood stress and different fitness issues are at better danger for corona virus. Long-term fitness conditions and growing old weaken your immune device so it is much less capable of fight off the virus. Nearly one-thirds of humans over 60 have high blood strain. While pneumonia is the most common complication of the virus, it may additionally harm the cardiovascular machine.

High blood pressure damages arteries and decreases the drift of blood to your heart. That approach your heart has to work tougher to pump enough blood. Over time, this greater work can weaken your heart to the factor where it can not pump as a lot oxygen-rich blood for your frame. Coronavirus also can damage the coronary heart at once, which can be specially unstable if your heart is already weakened with the aid of the consequences of high blood stress. The virus may additionally motive inflammation of the heart muscle referred to as myocarditis, which makes it tougher for the coronary heart to pump. If you furthermore may have plaque buildup to your arteries, the virus may also make the ones plaques more likely to interrupt apart and reason a coronary heart assault. Past researches have shown that humans with coronary heart disease who get a respiratory contamination like the flu or earlier varieties of corona virus are at higher hazard for a coronary heart attack.

Hypertension is a severe situation that strongly increases the chance of main coronary heart occasions, strokes and kidney disorder. Treating hypertension, generally with medications that lessen the blood stress, appreciably lowers the risk of these risky results.

Also, there's currently no evidence that the kinds of medications used to deal with hypertension regulate the probability of having COVID-19 disease or converting its severity, so there is no need for humans with hypertension to alternate their medicinal drugs. People with high blood pressure have to take a look at the subsequent policies for protecting themselves from the corona virus.

Elderly people with coronary heart sickness or excessive blood stress

may be extra prone to the corona virus and much more likely to increase extra extreme situations nicely controlled and maintaining correct retaining and hygiene.

**How to manage our blood pressure**  
It can be hard to keep up with healthy habits during a stressful event like a pandemic, but it's important to remain committed to the lifestyle behaviors that help keep your blood pressure in a healthy range, including:

- **Eating healthy.** Make sure your meals are full of fruits and vegetables, and remember to limit your salt intake.
- **Watching your weight.** Being overweight can impact your fitness, so it is crucial to make sure you already know your BMI and whether or not it is in a healthy or unhealthy range. In addition, do not permit staying at home more than usual develop into snacking extra than normal.
- **Getting active.** Social distancing may change what your workouts look like, but you'll still want to aim for at least two hours of physical activity every week. Whether it's a brisk walk or a morning jog or even a quick yoga session, the best exercise is anything you know you will commit to doing on a regular basis.
- **Limiting alcohol.** Because alcohol can raise your blood pressure, men should limit consumption to two drinks per day and women should limit consumption to one drink per day.
- **Reduce sodium in your diet.** Even a small reduction in the sodium in your diet can improve your heart health and reduce blood pressure by about 5 to 6 mm Hg if you have high blood pressure.
- **Reduce your stress.** Chronic stress may contribute to high blood pressure. More research is needed to determine the effects of chronic stress on blood pressure. Occasional stress also can contribute to high blood pressure if you react to stress by eating unhealthy food, drinking alcohol or smoking.
- **Conclusion:** When you make the lifestyle changes that help reduce your blood pressure, you will benefit your health in other ways, too. The recommended diet, weight and exercise guidelines will also lower your risk of developing diabetes, some cancers, dementia and high cholesterol.





**चमन संदेश** चमन लाल महाविद्यालय, लंडौरा जनपद हरिद्वार

will have to face many significant challenges, e.g., ensuring food safety and food security Undoubtedly a need to avoid “business as usual” practices, to think out of the box and accelerate efforts to develop sustainable and modern food systems, e.g., to reduce the cost of aseptic lab-grown meat, reduce the cost of food waste recovery and reutilization in the food chain, and develop new and large food supply chains based on insects’ and microalgae proteins.





चमन लाल महाविद्यालय, लखनौ जनपद हरद्वार चमन राक्षस

# THE SYMPTOMS OF CORONA VIRUS

Firoz Ansari

B.A-1<sup>st</sup> Year

Chaman Lal Mahavidyalya, Landhaura

The World Health Organization (WHO) has declared the new coronavirus outbreak, which originated in Wuhan, China, a pandemic.

As of September 20, the global death toll surpassed 957,000 amid more than 30.8 million cases. Over 21 million people have recovered from the disease worldwide, according to the data collected by the Johns Hopkins University in the United States.

## What is a Corona Virus?

The Corona Virus family causes illnesses ranging from the common cold to more severe diseases such as Severe Acute Respiratory Syndrome (SARS) and Middle East Respiratory syndrome (MERS), according to the WHO.

They circulate in animals and some can be transmitted between animals and humans. Several coronaviruses are circulating in animals that have not yet infected humans.

The new coronavirus, the seventh known to affect humans, has been named COVID-19.

## What are the symptoms?

Common signs of infection include fever, coughing and breathing difficulties. In severe cases, it can cause pneumonia, multiple organ failure and death.

The incubation period of COVID-19 is thought to be between one and 14 days. It is contagious before symptoms appear, which is why so many people get infected.

Infected patients can also be asymptomatic, meaning they do not display any symptoms despite having the virus in their systems.

राजल संधेश

राजल लाल महाविद्यालय, लंडौरा जलपुढ ररररर

Where did it come from?

China alerted the WHO to cases of unusual pneumonia in Wuhan on December 31.

COVID-19 is thought to have originated in a seafood market where wildlife was sold illegally.

On February 7, Chinese researchers said the virus could have spreaded from an infected animal to humans through illegally trafficked pangolins, prized in Asia for food and medicine.

The Chinese researchers have also pointed to either bats or snakes as possible sources of Covid-19.

**Should I worry? How can I protect myself?**

The WHO declared the virus a pandemic on March 11, 2020 and said it was “deeply concerned by the alarming levels of spread and severity” of the outbreak.

The WHO recommends basic hygiene such as regularly washing hands with soap and water, and covering your mouth with your elbow when sneezing or coughing.

Maintain “physical distancing” – keeping at least 1 metre (three feet) between yourself and others – particularly if they are coughing and sneezing and avoid touching your face, eyes and mouth with unwashed hands.

Avoid unnecessary and unprotected contact with animals and be sure to thoroughly wash your hands after contact.



## How do viruses...

Dr. Vidhi Tyagi

Assistant Professor

Dept. of Zoology

Chaman Lal Mahavidyalaya, Landhaura

Virus has a mutation rate one million times higher than that of other organisms (hosts). It is important to understand that many of these mutations occur very rarely, and how severe viral infections can cause pathogenic impacts. In fact, some mutations may make the virus less contagious.

How viruses change themselves to avoid the natural vaccine? We get to know most of the influenza virus has been constantly updating influenza vaccines. Influenza viruses undergo two main changes, antigenic drift and antigenic shift.

Comparison of similarities and differences between coronavirus and flu viruses can help us understand how those similarities and differences may potentially affect COVID-19 vaccines.

### Antigenic Drift

When a virus multiplies by itself, its genes also rearrange at the time they make a mistake while they undergo “copying errors” (i.e. genetic mutations). Over time, these genetic copying errors, among other changes of the virus, can cause changes in the virus’s surface proteins or antigens. Our immune system recognizes the virus and uses these antigens to fight it. So, what happens if a virus mutates to escape from our immune system? In influenza viruses, genetic mutations accumulate and which lead to the “shedding” of antigens - meaning that the surface of the mutated virus looks different from the original virus.

When the influenza virus drifts enough, vaccines against old strains of the virus and immunity from previous influenza virus infections no longer work against new, drifted strains. A person is then sensitive to the new, mutated flu virus. Antigenic drift is one of the main reasons why influenza vaccines should be reviewed and updated every year, so that influenza replaces with the virus.

### Antigenic Shift

Influenza viruses undergo an antigenic shift, a sudden, major change in the antigen of the virus that occurs less frequently than antigenic drift.

This occurs when two different, but related, influenza viruses control a host cell at the same time. Because influenza virus genomes are produced by 8 different fragments (called "genome segments") of the RNA, Sometimes these viruses can involve "mates" in a process called "reassortment". During recombination, genome segments of two influenza viruses can combine to form a new strain of influenza virus.

When a change occurs, most people have little or no immunity against the resulting new virus. Viruses emerging as a result of shift are the ones most likely to cause pandemics.

Coronaviruses do not have fragmented genomes and cannot recombine. Instead, the corona virus genome is composed of a single, very long fragment of RNA. However, when two corona viruses infect the same cell, they can recombine, which is different from recombination. In recombination, a new single RNA genome is stitched together from fragments of two "ancestral" corona varian genomes. Not as efficient as assurance, but scientists believe that corona viruses are recombined in nature.

When this happens, scientists identify the resulting virus as a "novel coronavirus". The generation of a novel coronavirus, although occurring by a different mechanism than the antigenic shift in influenza virus, may have a similar result, pandemic spread.

It also occurs with coronaviruses, with new human coronaviruses, or genes from new human coronaviruses, which come from ancestral coronaviruses that are infected with other animals, such as bats, camels, or etc.

To date, we have seen coronaviruses acting as influenza viruses in causing outbreaks, and now an epidemic arises from the processes of recombination and zoonosis, resembling the antigenic shift and zoonotic origin of novel human coronaviruses (new human influenza virus subtypes Similar).

Thus, we have now seen coronavirus mutations in humans, but do not undergo antigenic drift. This is good news for the corona virus vaccine. Given the similarities between influenza virus and the behavior of coronaviruses, there is sufficient reason to be alert to the possibility of future antigenic changes in SARS-CoV-2 and to be prepared to replace the potential COVID-19 vaccine, if necessary.



Coronavirus pandemic has significantly disrupted various sector in India including oil and gas, automobiles, aviation, agriculture, retail etc. We can't ignore that hardly a sector would remain unaffected by the Crisis. Same is with the education sector in India. Let us find out impact of Coronavirus on education in India with some possible solutions.

Even before the World Health Organisation (WHO) declared a pandemic, the world health recognised the novel coronavirus (Covid-19) as a rapidly expanding global threat that reached across continents at starting speed. Perhaps WHO delayed the declaration to prevent panic from hindering the evolution of effect health system responses in countries which had never encountered this virus before. How the whole world has to deal with it, it term of health and enomic impact.

As we know that due to coronavirus pandemic the state governments across the country temporarily started shutting the education Institution. As the present situation, there is an uncertainty when school and colleges will reopen. No doubt, this is the crucial time for education sector because entrance tests of several Universities and competitive exams are hard during this period. Along with them how can we forget about board examination, nursery school admission etc.

It is estimated to affect around 600 millions learners across the world Measure taken by the education Institutions:

- Closed Schools
- Post-poned or rescheduled the examination
- Clearing and Sanitisation of premises.
- Consideration of long term uncertainty etc

As discussed above, all major entrance including engineering, medical, law, agriculture, fashion designing course etc. This situation can be a ringing alarming bell mainly in private sector Universities. May be some facilities and employees may face salary cut, bonuses and increment can also be postpond

- The lockdown has generated uncertainty over the exam cycle may be Universities may face impact in term of a slowdown in student internship

and placement, lowerfee collection that can create hurdles in managing the working capital.

- Another major concern is that it can affect the paying capacity of several people in the private sector which is catering to a sizeable section of the student in the country.

Student counselling operations are also affected. Technology may play an important role in the lockdown period like study from home and work from home. In India, some private school could adopt online teaching methods. Low income private and government school may be completely shut down due to no access to e-learning solution. In addition to the opportunities for learning, student will also miss their meals and may result in economic and social stress.

Another major concern is employment. Student those have completed their graduation may have fear in their mind of withdrawal of job after the corporate sector due to the current situation. The center for monitoring Indian economics estimate unemplyment shortage from 8-4% in mid-march to 23% in April.



## Economics of Disaster & Climate Change in Covid-19

Isha Gupta  
B.Sc- 1<sup>st</sup> Year  
Chaman Lal Mahavidyalaya, Landhaura

### Accounting for global covid-19 Diffusion patterns:-

Key factors modelling a pandemic and guiding policy- making include mortality rates associated with infections; the ability of government policies, medical systems and society to adapt to the changing dynamics of a pandemics; and institutional and demographic characteristics affecting citizens perceptions and behavioral responses to stringent policies.

This paper traces the cross- country association between Covid-19 mortality, policy interactions aimed at limiting social contact, and their interactions with institutional and demographic characteristics. We document that, with a lag, more stringent pandemic policies were associated with lower mortality growth is more pronounced in countries with a greater proportion of the elderly population and urban population, greater democratic freedoms and larger international travel flows. Countries with greater policy stringently in place prior to the first death realized lower peak in contrast, countries with higher initial mobility higher peak mortality rates in the first phase of pandemic and countries with a larger elderly population, a greater share of employees in vulnerable occupation, and a higher level of democracy took longer to reach their peak mortality our results suggest that policy intervention are effective at slowing the geometric pattern of mortality growth, reducing the peak mortality, and shortening the duration to the first peak. We also shed light on the importance of institutions and demographic characteristics in guiding policy- making.

### The impact of Social distancing policies, cross-country analysis:-

At the onset of the COVID-19 pandemic a large number of countries introduced a range of non-pharmaceutical intervention. Whereas the policies are similar across countries, country characteristics vary substantially. We examine the effectiveness of such policies using a cross- country variation in Society-Economic, Environmental and Geographic, and health systems dimension. The effectiveness of policies that prescribed closures of schools and workplaces is declining with

population density, country surface area, employment rate and proportion of elderly in the population and increasing with GDP per capita and health expenditure, cross-country human mobility data reinforce some of these results. We argue that the findings can be explained by behavioral response to risk perception and resources constrains voluntary practice of social distancing might be less prevalent in communities with lower perceived risk, associated with better access to health care and smaller proportion of elders population. Higher population density larger geographical area and higher employment rate may require more resource to ensure compliance with lockdown policy to ensure compliance with lockdown policies.

### The Economic cost of COVID lockdowns : An out-of- Equilibrium Analysis :-

Some sector of the word economic in the wake of COVID-19 we develop a multi sector equilibrium model with buyer seller relations between agent located in different countries the production network model allows us to study not only the direct cost all the lock down but also indirect cost which emerged from the reduction in the availability of intermediate inputs agents determine the quantity of output and proportions in which to combine inputs using prices that enlarge from local interactions the model is calibrated to the world economic using input output data 56 industries in 44 countries including all major economics within our model the lock down the panel are implemented as partial reductions we use computational experiments to replicate the temporal sequence of the lockdown implemented in the different countries. World output falls by 7% at the early stage of the crisis then only China's under lockdown and by 23% at the peak of the crisis. When many countries are under a lockdown these direct impacts are amplified as the shock propagated through the world economy because of the buyer-Seller relations.



## Corona Virus : An Infection

Sheeba  
B.A-1<sup>st</sup> Year  
Chaman Lal Mahavidyalya, Landhaura

**Introduction :-** Corona virus which is commonly called as Covid-19 is an infectious disease which causes illness in the Respiratory system in the humans. It is the new virus that is impacting the whole world badly as it is spreading primarily through contact with the person.

Covid-19 was first identified during December, 2019 in Wuhan city of a China. In March 2020, the World Health Organization (WHO) declared the Covid-19 outbreak a cause of large number of deaths across the world. Till now, no proper drug or vaccine has been developed for treatment of this disease However, clinical Trials and research is being carried on for the development of drug and vaccine.

**How does Covid-19 Spread :-** It spreads from person to person among those in close contact (with in about 6 feet of 2 Meters). The virus spreads by Respiratory droplets generated from the cough or sneeze of a Covid-19 Patients.

**Symptoms :-** Covid-19 symptoms can be very mild to severe. Some people have no symptoms. The most common symptoms are fever, dry cough, and breathing problem. Apart from this, symptoms like fatigue, sore throat, muscle pain and loss of taste or smell can also be seen in corona virus Patients.

### Prevention of Covid-19

- Wash hands regularly with soap or sanitizer.
- Avoid unnecessary outings on public places.
- Maintain a distance of at least 5-6 feet from a sick person.
- Maintain proper hygiene and cleanliness
- Cover your nose and mouth while coughing or sneezing.
- Avoid touching your eyes, nose and mouth.
- Wear mask.

**Conclusion:-** Coronavirus is one of the most severe issues that are faced by people around the world. It is necessary that we come out of this situation as early as possible. So people should stay informed and maintain a good hygiene.  
Together, we all can bring an end to this pandemic.



## ALL ABOUT COVISHIELD VACCINE

Dr. Deepika Sahni

Assistant Professor, Deptt. of Zoology  
Chaman Lal Mahavidyalaya, Landhaura

As we all know year 2020-2021 is declared as pandemic year. This pandemic situation is caused by Corona virus called SARS-CoV-2, which has adverse impacts on mankind. This kind of virus has not been seen and identified earlier. A novel corona virus (COVID-19) was identified in 2019, in Wuhan, China.

The major horrifying problem is its frequency of spreading or communicability, as it spreads rapidly from direct person to person contact from an infected patient. Predominantly, virus is affecting the respiratory tract (ultimately lungs) and later on infect other vital organs too.

Covid-19 has a wide range of symptoms including (which show-up/ persist 14 days after exposure to the virus):

- Cough
- Cold
- Shortness of breath
- Muscle or body ache
- Loss of taste or smell
- Sore throat
- Congestion or runny nose
- Nausea/vomiting
- Diarrhoea

### BASICS OF COVISHIELD VACCINE

After repeated hard work and clinical trials by scientists globally, vaccine has been developed for saving mankind in which biotechnology has played an important role.

Covishield vaccine has been approved by the Health Department, Government of India.

1. **Ingredients of Covishield Vaccine:** Major ingredients of Covishield includes:

L- Histidine, L-Histidine hydrochloride monohydrate, magnesium Chloride hexahydrate, Polysorbate 80, Ethanol, Sucrose, Sodium Chloride, Disodium Edetate Dihydrate (EDTA), Water for injection.

### 2. Efficacy/Dosage of Covishield Vaccine:

The entire dosage of covishield includes 2 doses. According to Government

data, the covishield vaccine efficacy percentage of 70% has been seen in patients after its two doses. The complete vaccination includes 2 doses within a gap of 6-8 weeks. A person is seeming to develop protective immune response 4 weeks after the second dose of covishield vaccine.

3. **Who should get vaccinated by Covishield Vaccine?**  
Covishield vaccine has been approved for restricted use in emergency situation in people of 18 years or older.

4. **Who should't get vaccinated by Covidshield Vaccine?**  
Those who had an allergic reaction after having a previous/first dose. Those who have/may have allergic reaction from any of the ingredients of the vaccine (includes major or minor both).

5. **Points your Healthcare Provider /Doctor should know before you get vaccinated includes:**

- If you are pregnant
- If you are breastfeeding mother
- If you previous had allergic (anaphylaxis) reactions after having any drug, food or any ingredients of covishield vaccine.
- If you are immunocompromised or are undergoing any treatment that is related to your immune response directly.
- If you have a fever
- If you have any kind of bleeding disorder or on a blood thinner.

### 6. Risks of the Covishield Vaccine?

Reported side effects include;

- A lump at the injection site
- Fever
- Decreased appetite
- Abdominal pain
- Enlarged lymph nodes
- Feeling dizzy
- Excessive sweating, itchy skin

If anyone seems to develop severe allergic reactions/symptoms, immediately contact your nearest doctor. In addition, you can talk to Serum Institute of India (Manufacturer of Covishield Vaccine)



शिक्षक वर्ग :

डॉ. सुरजाल उपाध्याय, प्राचार्य

कला संकाय :

1- अंग्रजी विभाग

डॉ. दीपा अग्रवाल, सहायक आचार्या

डॉ. अर्पणा शर्मा, सहायक आचार्या

2- अर्थशास्त्र विभाग

श्री विमलकांत तिवारी, सहायक आचार्य

3- इतिहास विभाग

डॉ. सूर्यकान्त शर्मा, सहायक आचार्य

श्री मदन कुमार, अंशकालिक प्रवक्ता

4- गृह विज्ञान विभाग

डॉ. नोबू गुप्ता, सहायक आचार्या

श्रीमती अनार्निका चौहान, सहायक आचार्या

5- भूगोल विभाग

डॉ. नवीन कुमार त्यागी, सहायक आचार्य

6- राजनीति विज्ञान विभाग

डॉ. नोशू कुमार, सहायक आचार्य

डॉ. धर्मेंद्र कुमार, सहायक आचार्य

7- समाजशास्त्र विभाग

श्री नवीन कुमार, सहायक आचार्य

डॉ. हिमांशु कुमार, सहायक आचार्य

8- संस्कृत विभाग

डॉ. अनिता राणी, सहायक आचार्या

7- कम्प्यूटर साइंस विभाग

सुश्री प्रज्ञा दक्ष, अंशकालिक प्रवक्ता

पुस्तकालय विज्ञान विभाग :

श्री कुलदीप कुमार, सहायक आचार्य  
डॉ. पुनीता शर्मा, सहायक आचार्या

कार्यालय

1. डॉ. राजीव वशिष्ठ
2. श्री दिनेश कुमार
3. श्री विदित कौशल
4. श्रीमती मंजूलता
5. श्री निशिथ कुमार
6. श्री दिनेश कौशिक
7. श्री सचिन शर्मा
8. श्रीमती मंजू रानी
9. श्री दीपक चौधरी
10. श्री विपिन कुमार
11. श्री विशाल कुमार
12. श्री सुमित कौशिक
13. श्री रविन्द्र सिंह

प्रयोगशाला सहायक :

1. श्री अभिषेक
2. श्रीमती रीना गुप्ता
3. श्रीमती प्रणीता भण्डारी
4. श्री जितेश बगडवाल
5. श्री अमित बहादुर
6. श्रीमती प्रियंका शर्मा
7. सुश्री दीपाक्षी शर्मा
8. श्री नावेद आसिफ
9. श्री गौरव अग्रवाल
10. श्री भुवन चन्द्र ब्रजवासी
11. सुश्री वैशाली

पुस्तकालयाध्यक्ष

कार्यालय अधीक्षक

लेखाकार

उप सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष

स्टेनो

- कनिष्ठ सहायक
- कनिष्ठ सहायक
- कनिष्ठ सहायक
- कनिष्ठ सहायक
- कनिष्ठ सहायक
- कनिष्ठ सहायक
- कनिष्ठ सहायक
- कनिष्ठ सहायक
- कनिष्ठ सहायक

प्रयोगशाला सहायक (भूगर्भ विज्ञान)

- प्रयोगशाला सहायक (गृह विज्ञान)
- प्रयोगशाला सहायक (कम्प्यूटर विज्ञान)
- प्रयोगशाला सहायक (चित्रकला)
- प्रयोगशाला सहायक (रसायन विज्ञान)
- प्रयोगशाला सहायक (माइक्रोबाइलॉजी)
- प्रयोगशाला सहायक (भूगोल)
- प्रयोगशाला सहायक (भौतिक विज्ञान)
- प्रयोगशाला सहायक (जन्तु विज्ञान)
- प्रयोगशाला सहायक (वनस्पति विज्ञान)

वतुर्थ श्रेणी वर्ग :

श्री अमित कुमार गुप्ता

1. श्री अंकुर शर्मा
2. श्री अनुज कुमार
3. श्री अनुराग पाल
4. श्रीमती अर्चना
5. श्री अर्जुन कुमार
6. श्री अश्वनी शर्मा
7. श्री दुष्यन्त कुमार
8. श्री प्रदीप कुमार
9. श्री प्रमोद कुमार मलकानी
10. श्री राजन हरित
11. श्री मुकेश कुमार
12. श्री सतीश कुमार
13. श्री सलार
14. श्री विनय कुमार
15. श्री दिनेश कुमार
16. श्रीमती नीलम देवी
17. श्री अर्पित कुमार
18. श्रीमती ऋतु
19. श्री नवीन कुमार गिरि
20. श्री नवीन कुमार गिरि





# चमन लाल महाविद्यालय, लंदौरा

जनपद हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

सम्बद्ध : श्रीदेव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय  
बादशाली थौल, टिहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड-249149

## श्रीदेव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय, टिहरी गढ़वाल से सम्बन्धित पाठ्यक्रम

बी.ए./एम.ए.	:	(विषय-हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, इतिहास, चित्रकला, अर्थशास्त्र, भूगोल, गृहविज्ञान राजनीति शास्त्र, समाज शास्त्र)	
बी.कॉम/एम.कॉम गणित संवर्ग	:	सी.एफ.ए./नॉन.सी.एफ.ए.	3 वर्षीय
बी.एससी./एम.एससी.	:	भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, गणित भौतिक विज्ञान, गणित, भूगर्भ विज्ञान भौतिक विज्ञान, गणित, कम्प्यूटर विज्ञान	3 वर्षीय
प्राणी विज्ञान संवर्ग बी.एससी./एम.एससी.	:	वनस्पति विज्ञान, जन्तु विज्ञान, रसायन विज्ञान वनस्पति विज्ञान, जन्तु विज्ञान, सूक्ष्म जीवन विज्ञान वनस्पति विज्ञान, जन्तु विज्ञान, भूगर्भ विज्ञान वनस्पति विज्ञान, जन्तु विज्ञान, भूगर्भ विज्ञान जन्तु विज्ञान, रसायन विज्ञान, भूगर्भ विज्ञान	3 वर्षीय
बी.एससी./एम.एससी.	:	गृह विज्ञान	2 वर्षीय
बी.लिब.	:	पुस्तकालय विज्ञान	1 वर्षीय
बी.एससी.	:	कृषि विज्ञान	4 वर्षीय

## उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार से सम्बन्धित पाठ्यक्रम

एम.लिब.	1 वर्षीय
एम.ए. (योगाचार्य)	2 वर्षीय
पी.जी. डिप्लोमा (योग)	1 वर्षीय
एम.ए. (आचार्य) हिन्दी एवं भाषा विज्ञान	2 वर्षीय
एम.ए. (आचार्य) इतिहास	2 वर्षीय
एम.ए. (आचार्य) पत्रकारिता	2 वर्षीय

Visit us at:

Website : [www.cldcollege.com](http://www.cldcollege.com), Fax/Phone 01332-251492, 251493

E-mail : [cldegree21@gmail.com](mailto:cldegree21@gmail.com)

Contact No.: 7456099119, 9719757846, 7017590322

सहयोगी संस्था  
चमन लाल लॉ कॉलेज, लंढौरा

पाठ्यक्रम

- बी.ए.एल.एल.बी. (पांच वर्षीय)  
एल.एल.बी. (तीन वर्षीय)  
एल.एल.एम. (एक/दो वर्षीय)

अईता  
इण्टरमीडिएट  
तीन वर्षीय स्नातक उपाधि  
विधि स्नातक

प्रवेश प्रक्रिया

उत्तराखण्ड तकनीकी विश्वविद्यालय देहरादून द्वारा मेरिट के आधार पर।

आरक्षण एवं छात्रवृत्तियां

उत्तराखण्ड राज्य के आरक्षण संबंधी समस्त प्रावधान लागू। आरक्षित वर्ग के छात्र-छात्राओं तथा सामान्य वर्ग के मेधावी छात्र-छात्राओं के लिए छात्रवृत्तियां उपलब्ध।

विशेष

विस्तृत विवरण के लिए लॉ कॉलेज की प्रवेश विवरणिका देखें अथवा कॉलेज की वेबसाइट [www.cldcollege.com](http://www.cldcollege.com) पर क्लिक करें।

Visit us at:

Website : [www.cldcollege.com](http://www.cldcollege.com), Fax/Phone 01332-251492, 251493

E-mail : [cldegree21@gmail.com](mailto:cldegree21@gmail.com)

Contact No.: 7456099119, 9719757846, 7017590322

ISBN : 978-93-90743-61-2



978-93-90743-61-2